No. : TSS-36505

द साइलेंट स्ट्रोक

The Silent STROKE

THECREATIVEART.COM HINDI ENGLISH

Year-2 | Volume No. : 5 | Rs. 250.00 (Colour) I ₹125 B&W

July-Sept 2024

PARIS 2024

MESMERIZING MEWA IN THE LAPS OF

GARHWAL–2024

PARIS OLYMPICS 2024 IN INDIA

■ **NEET VYAPAM SCANDAL-II**

PLAYING WITH THE FUTURE OF LAKHS OF STUDENTS

2024-25 UNION BUDGET

■ **न्याय की ओर बढ़ते कदम**

The CREATIVEART Publisher

शब्दाहुति PRAKASHAN

A GOLDEN OPPORTUNITY FOR WRITERS

'Get your Book Published'

THECREATIVEART.IN

BOOKS ARE INVITED TO ENCOURAGE THE WRITING OF NEW WRITERS

CONTACT US NOW:

The CREATIVEART Publisher

NARENDRA TYAGI
Publisher

FARIDABAD
+91-9990753336 | 0129-4322979

TCstudio
THECREATIVEART.IN
TCstudio2010@gmail.com | Creativeart012@gmail.com

shabdahutiprakashan@gmail.com

flipkart amazon

सम्पादकीय

राकेश शर्मा 'निशीथ'

मेरी बात...

परिवर्तन की प्रक्रिया से दुनिया का कोई समाज अछूत नहीं रहा है, भारतीय सामाजिक व्यवस्था में भी समय के साथ अनेकानेक परिवर्तन हुए हैं। परिवर्तन' को अंग्रेजी के 'चेन्ज' (Change), 'आल्टरेशन' (Alteration) तथा 'मोडिफिकेशन' (Modification) आदि शब्दों से सम्बोधित किया जाता है। परिवर्तन किसी भी वस्तु, विषय अथवा विचार में समय के अन्तराल से उत्पन्न हुई भिन्नता को कहते हैं। परिवर्तन तब और अब की स्थितियों के बीच पैदा हुए अन्तर को प्रकट करता है। 'परिवर्तन' एक बहुत विस्तृत अवधारणा है और यह जैविक (Biological), भौतिक (Physical) तथा सामाजिक (Social) तीनों जगत में पाई जाती है।

औपनिवेशिक युग के कानूनों को समाप्त करने की मांग काफी समय से हो रही थी। इनमें परिवर्तन करते हुए तीन नए आपराधिक कानूनों को लागू किया गया है। गृह मंत्री श्री अमित शाह ने देशभर में 1 जुलाई से तीन नए आपराधिक कानून लागू होने के अवसर पर कहा, "तारीख-पे-तारीख" युग का अंत अब सुनिश्चित होगा। कानून की यह संहिताएं भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS), भारतीय न्याय संहिता (BNS) और भारतीय साक्ष्य अधिनियम (BSA) हैं। नए कानूनों में कुछ धाराएं हटा दी गई हैं तो, कुछ नई धाराएं जोड़ी गई हैं। कानून में नई धाराएं शामिल होने के बाद पुलिस, वकील और अदालतों के साथ-साथ आम लोगों के कामकाज में भी काफी बदलाव आ जाएगा। अब यह तो भविष्य में ही पता चलेगा कि कानूनों के इस परिवर्तन का निर्देशों को कितना लाभ मिल पाएगा।

नए कानूनों को आम नागरिकों के अनुरूप आधुनिक बदलाव करते हुए जीरो एफआईआर, पुलिस शिकायतों का ऑनलाइन पंजीकरण, एसएमएस जैसे इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से सम्मन और जघन्य अपराधों के लिए अपराध स्थलों की अनिवार्य वीडियोग्राफी जैसे प्रावधान किए गए हैं। इन सबसे देश में पुलिस सुधार को न केवल बल मिलेगा बल्कि पुलिस कानूनों के तहत काम करने को विवश भी होगी।

हमारे देश में पहले भी अपराधों पर अंकुश रखने के लिए सख्त कानून हैं, लेकिन देखने में आता है कि उनका पालन सख्ती से नहीं हुआ। इस कारण अपराध पर अंकुश लगाने में सफलता नहीं मिल सकी है। देश में यदि अपराध को कम करना है तो, केवल कानूनों में उनकी धाराओं में परिवर्तन करने से अपराध कभी कम नहीं हो सकते। इसके लिए कानून व्यवस्था में व्यापक सुधार के साथ-साथ कानूनों को पालन करवाने के लिए दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है। तभी हम आम आदमी को तीव्र न्याय दिलाने तथा अपराध को कम करने की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे और तारीख-पर-तारीख के युग का अंत हो सकेगा।

शेष फिर...

Rakesh Sharma

–राकेश शर्मा 'निशीथ'
प्रधान संपादक

"मैं निश्चित रूप से राजनीति में नहीं शामिल होऊंगा। मैं एक साफ़-सुथरे बिजनेसमैन के तौर पे याद किया जाना पसंद करूँगा, जिसने सतह के नीचे की गतिविधियों में हिस्सा ना लिया हो, और जो काफी सफल रहा हो।"

–रतन टाटा

Presented by
THE CREATIVEART

द साइलेंट स्ट्रोक
The Silent STROKE

CURRENT AFFAIRS | MAY-JUNE 2024

Head of the Editorial
NANDINI SHARMA
Advocate, Supreme Court &
High Court

Chief editor :
RAKESH SHARMA 'NISHEETH'

Editor (Hindi)
NARENDRA TYAGI

Design by
SHIVANGI TYAGI

Edition
July - September 2024

© THE CREATIVEART

PRICE
₹ 250-00 (Colour), ₹ 125-00
(Black & White)

Published by:
THE CREATIVEART

Cover photo courtesy:

Press :
Images & Impressions Press,
Daryaganj, Delhi-110002

जरूरी सूचना : द साइलेंट स्ट्रोक में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखक के अपने हैं। द साइलेंट स्ट्रोक में प्रकाशित विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है। रचनाओं की मौलिकता एवं कॉपीराइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

The CREATIVEART
Big ideas, Great results

A-3, Ground Floor, Dayal Bagh,
Surajkund, Sector 39, Faridabad (HR)
Contact: 9990753336,
Mail: thesilentstroke@gmail.com

WWW.THECREATIVEART.IN

विषय सूची

सम्पादकीय - 1
मुख्य रिपोर्ट–3-10 : पेरिस ओलंपिक 2024 में भारत | बजट 2024-25: 'विकसित भारत' के लिए नौ प्राथमिकताएँ
लेख–11-18 : नीट व्यापम कांड-II | चलते रहने का नाम जिंदगी | The cycle of Traditions from Ancient to Modern Era | न्याय की ओर बढ़ते कदम
साहित्य– महानिशा की ममतामयी माँ - 20
लघुकथा/कहानियाँ–23-26 : अंतर...| मेरी भी कुछ अहमियत है या नहीं | बंधन प्यार का | Water/Communism
कविताएँ/ग़ज़ल–27-35
यात्रा वृतांत–36-46
झाँसी वीरता की एक विरासत | Mesmerizing Mewa in the Laps of Garhwal – 2024
व्यंग्य–47-49 : जरा आंख में भर दो पानी | अरे भाई आप कहाँ से अवतरित हो गए...?
समीक्षा : कविता के बहाने - 50
व्यक्तित्व : कृषि वैज्ञानिक : एम.एस. स्वामीनाथन - 51
संस्थान : भारत का प्राचीन ज्ञान केन्द्र: **नालंदा** - 54

राकेश शर्मा "निशीथ"

प्रदीप बालियान

मृत्युंजय कुमार 'मनोज'

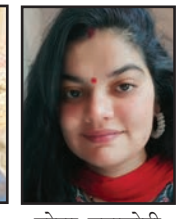

प्ररेणा बुड़ाकोटी

नन्दलाल मणि त्रिपाठी

पारूल अग्रवाल

रितू अग्रवाल

अविनाश खरे

सुनील गज्जानी

सुशीला गप्ता

गरिमा राकेश

अमित दीक्षित

ए के अर्चना

एन सी खंडेलवाल

अनुपमा 'अनुश्री'

के. वैशाली

केशव शरण

मोनिका साकेत

सोनल मंजुश्री

राना प्रताप बजाज

राकेश शर्मा "निशीथ"
प्रधान संपादक,
वैशाली, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

पेरिस ओलंपिक 2024 में भारत

Image courtesy: PIB

प्राचीन ओलंपिक खेलों का आयोजन 1200 साल पूर्व योद्धा-खिलाड़ियों के बीच हुआ था। पुराने समय में शांतिपूर्ण समय के अंतराल के दौरान योद्धाओं के बीच प्रतिस्पर्धा के साथ खेलों का विकास हुआ। शुरुआती दौर में दौड़, मुक्केबाजी, कुश्ती और रथों की दौड़ आदि सैनिक प्रशिक्षण का हिस्सा हुआ करते थे। इनमें से सबसे बेहतर प्रदर्शन करने वाले योद्धा प्रतिस्पर्धी खेलों में अपना दमखम दिखाते थे। यह ग्रीस यानी यूनान की राजधानी एथेंस में 1896 में आयोजित किया गया था। ओलंपिया पर्वत पर खेले जाने के कारण इसका नाम ओलंपिक पड़ा। ओलंपिक में राज्यों और शहरों के खिलाड़ी भाग लेते थे। इसकी लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि ओलंपिक खेलों के दौरान शहरों और राज्यों के बीच लड़ाई तक स्थगित कर दिए जाते थे। इस खेलों में लड़ाई और घुड़सवारी काफी लोकप्रिय खेल थे। लेकिन उसके बाद भी सालों तक ओलंपिक आंदोलन का स्वरूप नहीं ले पाया। प्राचीन ओलंपिक की शुरुआत 776 बी.सी में हुई मानी जाती है।

प्राचीन ओलंपिक में बाक्सिंग, कुश्ती, घुड़सवारी के खेल खेले जाते थे। खेल के विजेता को कविता और मूर्तियों के जरिए प्रशंसित किया जाता था। हर चार साल में होने वाले ओलंपिक खेल के वर्ष को ओलंपियाड के नाम से भी जाना जाता था। एक दंतकथा के अनुसार हरक्यूलिस ने ज्यूस के सम्मान में ओलंपिक स्टेडियम बनवाया गया। छठवीं और पांचवीं शताब्दी में ओलंपिक खेलों की लोकप्रियता चरम पर पहुंच गई थी। लेकिन बाद में रोमन साम्राज्य की बढ़ती शक्ति से ग्रीस खासा प्रभावित हुआ और धीरे-धीरे ओलंपिक खेलों का महत्व गिरने लगा।

इंटरनेशनल ओलंपिक डे

दुनिया भर में हर साल 23 जून का दिन इंटरनेशनल ओलंपिक डे यानी अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक दिवस के तौर पर मनाया जाता है। यह एक तरह से खेलकूद की गतिविधियों को सेलिब्रेट करने का दिन है, जिसे दुनिया भर के युवा और बुजुर्ग सेलिब्रेट करते हैं। इंटरनेशनल ओलंपिक डे मनाने की शुरुआत 1948 से हुई है। ओलंपिक खेलों के जन्मदाता पियरे डी कोबर्टिन हैं। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति की स्थापना 23 जून 1894 को की थी, जिसका मुख्यालय स्विटजरलैंड के लॉजेन में स्थित है।

ओलंपिक के झंडे में 5 रिंग बने होते हैं, जो नीले, डार्क पीले, काले, हरे और लाल रंग में होते हैं। इसे 1913 में पियरे डी कोबर्टिन ने डिजाइन किया था। ओलंपिक ध्वज में बने पांच रिंग पांच महाद्वीप अफ्रीका, अमेरिका, एशिया, यूरोप और ओशिनिया के आपस में जुड़े रहने का प्रतिनिधित्व करते हैं। ओलंपिक खेल चार प्रकार के होते हैं, जिसमें ग्रीष्मकालीन

ओलंपिक, शीतकालीन ओलंपिक, पैरालंपिक और युवा ओलंपिक खेल शामिल हैं। इन सभी ओलंपिक खेलों की अलग-अलग खासियत होती है।

ग्रीष्मकालीन ओलंपिक

ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेल को समर ओलंपिक गेम्स भी कहा जाता है। इसका मतलब होता है कि यह गर्मियों के समय में आयोजित किया जाता है। ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेल पहली बार साल 1896 में ग्रीस की राजधानी एथेंस में खेला गया था और तब से इसका आयोजन प्रत्येक चार साल में किया जाता है। एथेंस ओलंपिक खेलों में 14 देशों के 200 एथलीटों ने 43 अलग-अलग गेम्स में हिस्सा लिया था और उसके बाद के ओलंपिक में अन्य देशों की भागीदारी और बढ़ने लगी।

शीतकालीन ओलंपिक

शीतकालीन ओलंपिक खेल को विंटर ओलंपिक गेम्स भी कहते हैं। यह खेल सर्दियों के समय में खेला जाता है और शीतकालीन ओलंपिक खेल पहली बार वर्ष 1924 में फ्रांस की राजधानी पेरिस में खेला गया था। खास बात यह है कि शीतकालीन ओलंपिक खेल वर्ष 1992 तक ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेल के साथ खेला जाता था, लेकिन इसके बाद इसे अलग आयोजित किया जाने लगा। शीतकालीन खेल के ज्यादातर इवेंट आइस यानी बर्फ के हिस्सों पर आयोजित होते हैं।

पैरालंपिक

पैरालंपिक खेलों में दिव्यांग एथलीट अपने-अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हैं। पैरालंपिक खेल पहली बार वर्ष 1960 में इटली के रोम में आयोजित किया गया था। इसमें सैनिकों के साथ-साथ आम लोग भी हिस्सा ले सकते थे। पहले पैरालंपिक खेलों में 23 देशों के 400 एथलीटों ने हिस्सा लिया था। जिस तरह ओलंपिक खेलों में ग्रीष्मकालीन और शीतकालीन होते हैं ठीक उसी तरह पैरालंपिक खेल भी दो प्रकार के होते हैं, जिसमें समर पैरालंपिक और विंटर पैरालंपिक होते हैं।

युवा ओलंपिक

युवा ओलंपिक (YOG) अन्य ओलंपिक खेलों की तरह हर चार साल में इसे आयोजित किया जाता है। इस खेल में 18 वर्ष से कम उम्र के लड़के और लड़कियां हिस्सा लेते हैं। ये खिलाड़ी विभिन्न खेलों में अपने-अपने देश का प्रतिनिधित्व करते हैं। यूथ ओलंपिक पहली बार वर्ष 2010 में सिंगापुर में आयोजित किया गया था। यूथ ओलंपिक का उद्देश्य युवा पीढ़ी को प्रेरित करना और उन्हें खेलों से जोड़ना है।

शुभंकर

वर्ष 1968 से ओलंपिक में शुभंकर खेलों का महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं। पेरिस ओलंपिक के शुभंकर के रूप में फ्रीजियन कैप को चुना गया है। इसमें फ्रांस के ध्वज के तीन रंगों में चित्रित किया गया था– नीला, लाल और सफेद। पेरिस 2024 में आयोजिकों ने फ्रांसीसी क्रांति की भावना का जश्न मनाने के लक्ष्य के साथ शुभंकर के रूप में इसका चयन किया है। यह कैप ओलंपिक और पैरालंपिक दोनों के लिए है। फ्रांसीसी लेखक गाइल्स डेलेरिस द्वारा डिजाइन इस शुभंकर का अनावरण 14 नवम्बर, 2022 को किया गया था।

क्रिकेट

दो देशों की क्रिकेट टीमों ने वर्ष 1900 में पैरिस में हुए ओलंपिक्स में हिस्सा लिया था। इसमें ब्रिटेन की टीम ने फ्रांस की टीम को हराकर गोल्ड मेडल जीता था।

भारत का ओलंपिक खेलों में इतिहास

भारत का ओलंपिक खेलों में इतिहास 124 साल पुराना है। भारत के लिए सबसे सफल साल टोक्यो 2020 रहा है। ओलंपिक के मंच पर भारत का इतिहास हॉकी में काफी सुनहरा है। भारत के नाम हॉकी में रिकॉर्ड आठ गोल्ड मेडल, जिनमें से छह लगातार है। ये ऐसे आंकड़े हैं जो इस मंच पर भारत की काबिलियत की गवाही देते हैं। केडी जाधव ओलंपिक की व्यक्तिगत स्पर्धा में मेडल जीतने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी थे। जाधव ने वर्ष 1952 के हेलसिंकी ओलंपिक में कुश्ती में ब्रॉन्ज मेडल जीतकर इतिहास रचा था। इसके बाद व्यक्तिगत स्पर्धा में, बीजिंग 2008 में अभिनव बिंद्रा का ऐतिहासिक गोल्ड और टोक्यो 2020 में नीरज चोपड़ा द्वारा पहला ट्रैक-एंड-फील्ड गोल्ड शामिल है।

फ्रांस की राजधानी पेरिस में 26 जुलाई से 11 अगस्त तक ओलंपिक खेलों का आयोजन किया गया। इन खेलों का पेरिस के अलावा फ्रांस के 16 अन्य शहरों में आयोजन किया गया। इन खेलों में भाग लेने वाले खिलाड़ियों की संख्या 10,500 निर्धारित की गई थीं। इनमें 32 खेलों की 329 स्पर्धाओं का आयोजन किया गया। इसमें भारत के 120 एथलीट्स अलग-अलग खेलों में मेडल के लिए स्पर्धा में शामिल हुए।

भारतीय महिलाओं की भागीदारी

नीलिमा घोष मात्र 17 वर्ष की आयु में आधिकारिक तौर पर 21 जुलाई, 1952 को ओलंपिक खेलों में प्रतिस्पर्धा करने वाली पहली भारतीय महिला बनी थी। उन्होंने हेलसिंकी

1952 में 100 मीटर स्प्रिंट और 80 मीटरबाधा दौड़ में भाग लिया था। नीलिमा के साथ इन ओलंपिक खेलों में मैरी डिसूजा सेकीरा ने भी 100 मीटर और 200 मीटर की स्पर्धाओं में भाग लिया था। दो धावकों के साथ अन्य महिला तैराक डॉली नजीर और आरती साहा ने भी लेसिंकी 1952 ओलंपिक में भाग लिया था।

दुनिया भर के 206 देशों के 10,714 खिलाड़ियों के बीच देश में इस बार 47 बेटियां ने 12 खेलों में भाग लिया। आजादी के बाद महिलाओं की ओलंपिक में भागीदारी क्रमश: इस प्रकार है- वर्ष 1952 में 04, वर्ष 1980 में 18, वर्ष 1984 में 06, वर्ष 1988 में 07, वर्ष 1992 में 09, वर्ष 2000 में 21, वर्ष 2004 में 25, वर्ष 2008 में 25, वर्ष 2012 में 23, वर्ष 2016 में 54, वर्ष 2021 में 54 और वर्ष 2024 में 47, वर्ष 1960 रोम, वर्ष 1968 में मैक्सिको और वर्ष 1976 में मॉट्रियल खेलों में कोई महिला क्वालीफाई नहीं कर पाई और वर्ष 1964 तथा वर्ष 1972 में एक-एक महिला ने भाग लिया।

ओलंपिक खेलों में भारत का प्रदर्शन

भारत ने पहली बार वर्ष 1920 के एंटवर्प ओलंपिक में पांच एथलीटों का अपना आधिकारिक दल भेजा था। पुरमा बनर्जी को भारतीय ध्वज के साथ नेतृत्व करने का दायित्व दिया गया था। वर्ष 1928 में एम्स्टर्डम ओलंपिक खेलों में महान खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के नेतृत्व में भारतीय हॉकी टीम ने पहला स्वर्ण पदक हासिल किया था।

भारत पदक तालिका में 6 पदकों के साथ 71वें स्थान पर रहा जो कहीं से भी यह उम्मीद नहीं जगाता है कि भारत भविष्य में खेल महाशक्ति बनेगा। पेरिस खेलों में 16 खेलों में कुल 117 भारतीय एथलीटों ने भाग लिया: तीरंदाजी, एथलेटिक्स, बैडमिंटन, मुक्केबाजी, घुड़सवारी, गोल्फ, हॉकी, जूडो, रोइंग, नौकायन, शूटिंग, तैराकी, कुश्ती, टेबल टेनिस और टेनिस। भारत ने पेरिस ओलंपिक में 6 पदक जीते, 1 रजत और 5 कांस्य। हालाँकि ऐतिहासिक प्रदर्शन की उम्मीदें बहुत अधिक थीं, लेकिन देश 2021 में पुनर्निर्धारित टोक्यो ओलंपिक में अपने पिछले सर्वश्रेष्ठ को पार करने से थोड़ा पीछे रह गया, जब उन्होंने 7 पदक (1 स्वर्ण, 2 रजत और 4 कांस्य) हासिल किए और 48वें स्थान पर रहा था।

भारत ने पेरिस ओलंपिक 2024 (India At Olympics 2024) में कई ऐतिहासिक उपलब्धियां हासिल की हैं। इस दौरान कई ऐसे मौके आए जब भारत पदक से मामूली अंतर से चूक गया। पेरिस ओलंपिक में अब तक भारत द्वारा जीते गए पदक पर एक नजर—

नीरज चोपड़ा (एथलेटिक्स)	सिल्वर मेडल
अमन सहरावत (कुश्ती)	ब्रॉन्ज मेडल
भारतीय पुरुष हॉकी टीम	ब्रॉन्ज मेडल
स्वप्निल कुसाले (शूटिंग)	ब्रॉन्ज मेडल
मनु भाकर-सरबजोत सिंह (शूटिंग)	ब्रॉन्ज मेडल
मनु भाकर (शूटिंग)	ब्रॉन्ज मेडल

ओलंपिक खेलों में भारत का प्रदर्शन

साल	एथलीट	पदक	स्थान
पेरिस 1900	1	2	17
एंटवर्प 1920	5	-	-
पेरिस 1924	13	-	-
एम्सटर्डम 1928	22	1	23
लॉस एंजिल्स 1932	18	1	19
बर्लिन 1936	27	1	20
लंदन 1948	86	1	22
हेलसिंकी 1952	64	2	26
मेलबर्न 1956	59	1	24
रोम 1960	45	1	32
टोक्यो 1964	53	1	24
मेक्सिको सिटी 1968	25	1	42
म्यूनिख 1972	46	1	43
मॉनट्रियल 1976	26	-	-
मास्को 1980	52	1	23
लॉस एजिल्स 1984	47	-	-
सियोल 1988	43	-	-
बार्सिलोना 1992	46	-	-
अटलांटा 1996	40	1	71
सिडनी 2000	44	1	71
एथेंस 2004	73	1	65
बीजिंग 2008	57	3	50
लंदन 2012	83	6	55
रियो डी जेनेरियो 2016	117	2	67
टोक्यो 2020	126	7	48
पेरिस 2024	117	6	71

पेरिस ओलंपिक में अमेरिका और चीन का दबदबा

पहले से बढ़ा है। पिछले पांच ओलंपिक में दूसरी बार ऐसा हुआ जब अमेरिका स्वर्ण पदकों (40-40) में चीन को पीछे नहीं छोड़ पाया। अमेरिका कुल पदकों के मामले में चीन से अभी काफी आगे हैं। 32 वर्ल्ड रिकॉर्ड बने खेलों में पैरिस ओलंपिक्स के दौरान। वहीं 10 खेलों में कुल 125 ओलंपिक्स रिकॉर्ड ध्वस्त हुए। इसके साथ ही पैरिस ओलंपिक्स में बोत्सवाना, डोमनिका, गुआतेमाला और सेंट लुसिया ने अपने इतिहास का पहला गोल्ड मेडल भी जीता।

पेरिस ओलंपिक शुरू होने से पहले इस बात पर बड़े जोर-शोर से दावा किया जा रहा था कि भारत इस बार ओलंपिक में दोहरी पदक संख्या का आंकड़ा जरूर पार करेगा। लेकिन अंत में जाते-जाते स्थिति 6 पदक की रह गयी, जिसमें कोई स्वर्ण पदक शामिल नहीं था। मिल्खा सिंह के समय से ही भारत ओलंपिक में कहीं-न-कहीं चूक कर रहा है। इस वर्ष तो छह स्पर्धा में चौथे स्थान पर रहा है।

इनमें निशानेबाज अर्जुन बाबुता और मनु भी शामिल हैं, जो क्रमश: पुरुषों की 10 मीटर एयर पिस्टल और महिलाओं की 25 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में मामूली अंतर से पदक जीतने से चूक गए। मिश्रित स्कीट स्पर्धा में, अनंतजीत सिंह नरूका और माहेश्वरी चौहान की जोड़ी बेहद करीब आ गई और चीन से कांस्य पदक मैच केवल एक अंक से हार गई। तीरंदाजी में, धीरज बोम्मदेवरा और अंकिता भकत ने मिश्रित टीम स्पर्धा में चौथे स्थान पर रहकर भारत का अब तक का सर्वश्रेष्ठ ओलंपिक प्रदर्शन किया। संयुक्त राज्य अमेरिका के ब्रैडी एलिसन और केसी कॉफहोल्ड के खिलाफ कांस्य पदक मैच में, उन्होंने कड़ी मेहनत की, लेकिन अंततः 6-2 से हार गए, और भारत के लिए तीरंदाजी में ऐतिहासिक पहला पोडियम फिनिश हासिल करने से चूक गए। आशा करते हैं कि हम लॉस ऐंजिलिस में 2028 में होने वाले ओलंपिक में इस प्रकार से मंजिल के निकट पहुंचने पर मंजिल को प्राप्त न कर पाने की समस्या पर विजय अवशय प्राप्त कर सकेंगे।

■■

'विकसित भारत' के लिए नौ प्राथमिकताएँ

प्रदीप बालियान
उप-संपादक,
मनोरमा इयर बुक
नई दिल्ली

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के सातवें और मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल के पहले बजट में युवा वर्ग, महिलाओं, रोजगार, बिहार और आंध्र प्रदेश पर विशेष ध्यान दिया गया। जनता दल युनाइटेड के नेतृत्व में बिहार और तेलुगु देशम पार्टी के नेतृत्व में आंध्र प्रदेश में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार है। इन राज्यों पर विशेष ध्यान देने के अपने कारण हैं। दोनों राज्य विशेष दर्जे की मांग करते रहे हैं और इन दोनों दलों के समर्थन पर मोदी सरकार टिकी है।

वित्त मंत्री ने 2024-25 के बजट की नौ प्राथमिकताएं ये हैं- खेती में उत्पादकता बढ़ाना, रोज़गार और क्षमता विकास पर जोर, समाज के हर वर्ग के विकास पर बल, विनिर्माण-सेवा क्षेत्र में सुधार, शहरी विकास को नई पहचान देना, ऊर्जा सुरक्षा क्षेत्र में कई पहल, बुनियादी ढांचे पर बल, नवाचार-शोध और विकास के लिए नई पहल और अगली पीढ़ी के सुधारों पर पूरा ध्यान।

इस बजट यह पूरी तरह स्पष्ट हो गया कि सरकार नहीं चाहती कि लोग बचत करें। यही नहीं लॉन्ग टर्म गेन्स पर कर लगाकर सरकार ने यह संकेत भी दे दिए कि लोग निवेश भी न करें। वास्तव में सरकार चाहती है कि लोग सिर्फ खर्च करें। कर व्यवस्था के सरलीकरण के नाम पर समूची व्यवस्था को इतना जटिल बना दिया गया है कि लोगों को यह समझ नहीं आ रहा कि उन्हें कहां-कहां और एक ही कमाई पर कितनी बार कर देना पड़ रहा है। इस बजट की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं-

निवेश को प्रोत्साहन नहीं

आम बजट में सभी वित्तीय और ग़ैर वित्तीय परिसंपत्तियों पर होने वाले लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन्स (दीर्घकालिक पूंजीगत लाभ) पर लगने वाले कर को 10 प्रतिशत से बढ़ाकर 12.5 प्रतिशत कर दिया गया है। वो परिसंपत्तियां जो एक साल से अधिक समय तक रखी जाती हैं उन्हें लॉन्ग टर्म कहा जाता है। इसके साथ ही शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेन्स (अल्पकालिक पूंजीगत लाभ) पर कर को 15 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत कर दिया गया है। डेरिवेटिव्स ट्रेडिंग पर लगने वाले सिक्योरिटीज़ ट्रांसेक्शन टैक्स को भी बढ़ा दिया गया है।

रोज़गार पर बल

वित्त मंत्री ने बेरोज़गारी की चुनौतियों से निपटने के लिए तीन नई योजनाओं की घोषणा की है। इस योजना पर अगले पांच वर्ष के लिए दो हज़ार करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। औपचारिक क्षेत्र में पहली बार नौकरी पाने वालों को सरकार उनके पहले महीने के वेतन पर अतिरिक्त डायरेक्ट कैश ट्रांसफ़र देगी जो 15,000 रुपये तक होगा। सरकार इसको ईपीएफ़ओ के ज़रिए कर्मचारी के ख़ाते में जोड़ेगी।

निर्माण कार्य को गति देने के लिए दो और कार्यक्रमों की घोषणा की गई है जिसमें सरकार कर्मचारी और नियोक्ता दोनों को रोज़गार से जुड़े इंसेन्टिव्स देगी।

कर में राहत

भारत में तेज़ी से उभरते स्टार्टअप ईको सिस्टम को इस बात से ख़ुशी होगी कि निजी कंपनियों की जुटाई गई पूंजी पर लगायें जाने वाले एंजेल टैक्स को अब ख़त्म कर दिया गया है। इसके साथ ही मध्यम वर्ग को थोड़ी राहत देते हुए सरकार ने नई कर व्यवस्था (न्यू टैक्स रिजीम) की दरों में बदलाव किया है। इससे लोगों के 17,500 रुपये बचेंगे। निवेश को बढ़ावा देने के लिए विदेशी कंपनियों पर लगने वाले कॉर्पोरेट टैक्स को 40 फ़ीसदी से घटाकर 35 फ़ीसदी कर दिया गया है।

सरकार के सहयोगियों पर नजरे इनायत

बजट के ज़रिए सरकार के दो प्रमुख सहयोगियों की मांग को पूरा करने की कोशिश की गई है। बिहार में भाजपा के सहयोगी जनता दल (यूनाइटेड) और आंध्र प्रदेश में तेलुगू देसम पार्टी को ख़ुश रखने की कोशिश की गई है। आंध्र प्रदेश को राजधानी के विकास के लिए 15,000 करोड़ की वित्तीय मदद दी जाएगी। बिहार के लिए एयरपोर्ट्स, सड़कों और बिजली के प्रोजेक्ट लगाने के लिए बजट में प्रावधान किया गया है। बिहार में इन कामों के लिए 26,000 करोड़ का प्रावधान किया गया है।

राजकोषीय घाटा कम करने का लक्ष्य

बजट में राजकोषीय घाटे को कम करने का लक्ष्य रखा गया है। सरकार के व्यय की तुलना में आय में कमी को राजकोषीय घाटा कहते हैं। यह सरकार की कुल आय और कुल व्यय के बीच का अंतर होता है। राजकोषीय घाटे की स्थिति तब उत्पन्न होती है जब सरकार अपने संसाधनों से अधिक ख़र्च कर रही होती है।

राजकोषीय घाटे को 4.9 प्रतिशत तक सीमित रखने का लक्ष्य रखा गया है। पहले सरकार ने 5.1 प्रतिशत का लक्ष्य रखा था। राजकोषीय घाटे पर दुनिया भर की रेटिंग्स एजेंसियों की नजर रहती है और इसका ब्याज दरों पर सीधा असर पड़ता है। इस घाटे को पाटने में रिज़र्व बैंक की ओर से सरकार को दिए गए 2.11 लाख करोड़ रुपय के डिविडेंट की अहम भूमिका है। इससे ख़र्चों में कटौती किए बग़ैर सरकार घाटे को कम कर पाई है।

बुनियादी ढांचे पर बल

इस वित्त वर्ष में देश की विकास दर 6.5% से 7% के बीच रह सकती है। सरकार बुनियादी ढांचे के विकास पर विशेष ध्यान देगी। वर्ष 2024-25 के बजट अनुमान में कुल व्यय 48,20,512 करोड़ अनुमानित है। इसमें से कुल पूंजीगत व्यय 11,11,111 करोड़ है। वर्ष 2023-24 की तुलना में इस वर्ष का पूंजीगत व्यय 16.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है।

बजट पर व्यापक नजर

प्रति व्यक्ति आय करीब 9 वर्षों में दोगुनी होकर 1.97 लाख रुपये हो गई है।

भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार बढ़ा है और यह पिछले 9 साल में विश्व की 10वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था से 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन में सदस्यों की संख्या दोगुनी से अधिक होकर 27 करोड़ तक पहुंच गई है। स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत 11.7 करोड़ घरों में शौचालय बनाए गए हैं। उज्जवला योजना के तहत 9.6 करोड़ एलपीजी कनेक्शन दिये गए।

पीएम सम्मान किसान निधि के तहत 11.4 करोड़ किसानों को 2.2 लाख करोड़ रुपये का नकद अंतरण। 2,200 करोड़ रुपये के प्रारंभिक व्यय के साथ आत्मनिर्भर स्वच्छ पादप कार्यक्रम का शुभारंभ। इसका उद्देश्य उच्च गुणवत्ता वाली बागवानी फसल के लिए रोग-मुक्त तथा गुणवत्तापूर्ण पौध सामग्री की उपलब्धता बढ़ाना। वर्ष 2014 से स्थापित मौजूदा 157 चिकित्सा महाविद्यालयों के साथ ही संस्थानों में 157 नए नर्सिंग कॉलेज खोले जाएंगे।

केंद्र अगले तीन वर्षों में 3.5 लाख जनजातीय विद्यार्थियों के लिए 740 एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों में 38,800 अध्यापकों तथा सहयोगी कर्मचारियों को नियुक्त किया जाएगा। पीएम आवास योजना के लिए परिव्यय 66 प्रतिशत बढ़ाकर 79,000 करोड़ रुपये किया गया।

रेलवे के लिए 2.40 लाख करोड़ रुपये की पूंजीगत निधि का प्रावधान, जो 2013-14 में उपलब्ध कराई गई धनराशि से 9 गुना अधिक और अब तक की सर्वाधिक राशि है। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम, बड़े व्यवसाय तथा चेरिटेबल ट्रस्टों के लिए निकाय डिजीलॉकर की स्थापना की जाएगी, जिससे आवश्यक दस्तावेज़ों को ऑनलाइन साझा और सुरक्षित रखने में आसानी होगी।

चक्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के उद्देश्य से गोबरधन (गैल्वनाइजिंग ऑर्गेनिक बायो-एग्रो रिसोर्सिज धन) नामक योजना के तहत 10,000 हजार करोड़ रुपये के कुल निवेश के साथ 500 नए अपशिष्ट से आमदनी संयंत्र स्थापित किए जाएंगे। प्राकृतिक और बायोगैस का विपणन कर रहे सभी संगठनों के लिए 5 प्रतिशत का कम्प्रेस्ड बायोगैस अधिशेष भी लाया जाएगा सरकार अगले तीन वर्षों में एक करोड़ किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रोत्साहित करेगी और उनकी सहायता करेगी। इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर वितरित

सूक्ष्म उर्वरक और कीट नाशक विनिर्माण नेटवर्क तैयार करते हुए 10,000 बायो-इनपुट रिसोर्स केंद्र स्थापित किए जाएंगे।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 4.0 को अगले तीन वर्षों में लाखों युवाओं को कौशल सम्पन बनाने के लिए शुरू की जाएगी और इसमें उद्योग जगत 4.0 से संबंधित नई पीढ़ी के आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स मेक्ट्रोनिक्स, आईओटी, 3डी प्रिंटिंग, ड्रोन और सॉफ्ट स्किल जैसे पाठ्यक्रम शामिल किए जाएंगे।

विभिन्न राज्यों से कुशल युवाओं को अंतरराष्ट्रीय अवसर उपलब्ध कराने के लिए 30 स्किल इंडिया इंटरनेशनल सेंटर स्थापित किए जाएंगे। एमएसएमई के लिए ऋण गारंटी योजना को नवीनीकृत किया गया है। यह 1 अप्रैल 2023 से कॉर्प्स में 9,000 करोड़ रुपये जोड़कर क्रियान्वित होगी। इसके अतिरिक्त इस योजना के माध्यम से 2 लाख करोड़ रुपये का संपार्श्विक मुक्त गारंटीयुक्त ऋण संभव हो पाएगा। इसके अलावा ऋण की लागत में करीब 1 प्रतिशत की कमी आएगी। लक्षित राजकोषीय घाटा 2025-26 तक 4.5 प्रतिशत से नीचे रहने का अनुमान है।

युवा उद्यमी ग्रामीण क्षेत्रों में एग्री-स्टार्टअप्स शुरू कर सकें, इसके लिए कृषि वर्धक निधि की स्थापना की जाएगी। भारत को 'श्री अन्न' के लिए वैश्विक केंद्र बनाने के उद्देश्य से हैदराबाद के भारतीय मोटा अनाज अनुसंधान संस्थान को उत्कृष्टता केंद्र के रूप में बढ़ावा दिया जाएगा, जिससे यह संस्थान सर्वश्रेष्ठ कार्यप्रणालियों, अनुसंधान तथा प्रौद्योगिकियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साझा कर सके।

कृषि ऋण के लक्ष्य को पशुपालन, डेयरी और मत्स्य उद्योग को ध्यान में रखते हुए 20 लाख करोड़ रुपये तक बढ़ाया जाएगा। पीएम मत्स्य संपदा योजना की एक नई उप-योजना को 6,000 करोड़ रुपये के लक्षित निवेश के साथ शुरू किया जाएगा, जिसका उद्देश्य मछली पालकों, मत्स्य विक्रेताओं और सूक्ष्म तथा लघु उद्योगों को अधिक सक्षम बनाना है।

औषधि निर्माण में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए एक नया कार्यक्रम शुरू किया जाएगा। विकास संभावना एवं रोजगार सृजन, निजी निवेश में बढ़ती भीड़ और वैश्विक खिलाड़ियों को टक्कर देने के लिए 10 लाख करोड़ का पूंजी निवेश, जो निरंतर 3 वर्षों में 33 प्रतिशत की वृद्धि है।

स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, कृषि, जल संसाधन, वित्तीय समावेशन, कौशल विकास और आधारभूत अवसंरचना जैसे कई क्षेत्रों में सरकारी सेवाओं को बढ़ाने के लिए 500 प्रखंडों को शामिल करते हुए आकांक्षी प्रखंड कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

बंदरगाहों, कोयला, इस्पात, उर्वरक और खाद्यान्न क्षेत्रों में 100 महत्वपूर्ण परिवहन अवसंरचना परियोजनाओं के लिए 75,000 करोड़ रुपये का निवेश, जिसमें निजी क्षेत्र का 15,000 करोड़ रुपये शामिल है। शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए सर्वोत्कृष्ट संस्थान के रूप में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान विकसित किए जाएंगे। भूगोल, भाषा सहित कई क्षेत्रों में उत्कृष्ट पुस्तकों की उपलब्धता बढ़ाने के लिए एक राष्ट्रीय डिजिटल बाल एवं किशोर पुस्तकालय की स्थापना की जाएगी। 'कृत्रिम बुद्धिमता को भारत में बनाएं और कृत्रिम बुद्धिमता से भारत के लिए कार्य कराएं' के विजन को साकार करने के लिए, देश के शीर्ष शैक्षिक संस्थानों में कृत्रिम बुद्धिमता के लिए तीन उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किए जाएंगे।

स्टार्टअप्स और शिक्षाविदों द्वारा नवाचार और अनुसंधान शुरू करने के लिए राष्ट्रीय डाटा शासन नीति लाई जाएगी। व्यक्तियों की पहचान और पते के मिलान और अद्यतनीकरण के लिए वन स्टॉप समाधान की व्यवस्था की जाएगी, जिसमें डिजीलॉकर सेवा और आधार का मूलभूत पहचान के रूप में प्रयोग किया जाएगा। साथ ही खाता संख्या(पैन) का इस्तेमाल 'विनिर्दिष्ट सरकारी एजेंसियों की सभी डिजिटल प्रणालियों के लिए पैन को सामान्य पहचानकर्ता के रूप में प्रयोग किया जाएगा। इससे कारोबार करना आसान होगा। प्रतिस्पर्धी विकास जरूरतों के लिए दुर्लभ संसाधनों को बेहतर तरीके से आबंटित करने के लिए 'परिणाम-आधारित' वित पोषण। न्याय के प्रशासन में दक्षता लाने के लिए, 7,000 करोड़ रूपये के परिव्यय से ई-न्यायालय परियोजना का चरण-3 शुरू किया जाएगा।

लद्दाख से नवीकरणीय ऊर्जा के निष्क्रमण और ग्रिड एकीकरण के लिए अंतर-राज्यीय पारेषण प्रणाली 20,700 करोड़ रूपये के निवेश के साथ निर्मित की जाएगी।'पृथ्वी माता के पुर्नरूद्धार, इसके प्रति जागरूकता, पोषण और सुधार हेतु प्रधानमंत्री कार्यक्रम' राज्यों और संघ राज्य-क्षेत्रों को रासायनिक उर्वरकों के संतुलित प्रयोग तथा इनके संस्थान पर वैकल्पिक उर्वरकों के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु शुरू किया जाएगा। पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम के तहत हरित ऋण कार्यक्रम को अधिसूचित किया जाएगा, ताकि पर्यावरण की दृष्टि से संधारणीय और उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य करने के लिए प्रोत्साहन मिले। अमृत धरोहर योजना को आर्द्र भूमि के इष्टतम उपयोग को बढ़ावा देने तथा जैव-विविधता,

कार्बन स्टॉक, पर्यावरणीय-पर्यटन के अवसरों तथा स्थानीय समुदायों के लिए आय सृजन बढ़ाने के लिए अगले तीन वर्षों में कार्यान्वित किया जाएगा।

चुनौती मोड के माध्यम से चुने जाने वाले कम-से-कम 50 पर्यटन गंतव्यों को घरेलू और विदेशी पर्यटकों के लिए एक सम्पूर्ण पैकेज के रूप में विकसित किया जाएगा।

'देखो अपना देश' पहल का उद्देश्य हासिल करने के लिए क्षेत्र विशिष्ट कौशलवर्धन और उद्यमशीलता विकास का समन्वयन स्थापित किया जाएगा। वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम के अंतर्गत सीमावर्ती गांव में पर्यटन के बुनियादी ढाचों का विकास किया जाएगा और पर्यटन सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। निवेशक शिक्षा और संरक्षण निधि प्राधिकरण से निवेशक अदावी शेयरों और अप्रदत्त लाभांशों का आसानी से पुनः दावा कर सकते हैं, इसके लिए एक एकीकृत आईटी पोर्टल स्थापित किया जाएगा।

आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में एक एकल नई लघु बचत योजना, महिला सम्मान बचत प्रमाण-पत्र शुरू किया जाएगा। महिलाओं या बालिकाओं के नाम पर आंशिक आहरण विकल्प के साथ दो वर्षों की अवधि के लिए 7.5 प्रतिशत की नियत ब्याज दर पर 2 लाख रुपये तक की जमा सुविधा का करदाता सेवाओं में और सुधार करने के लिए करदाताओं की सुविधा हेतु अगली पीढ़ी के सामान्य आईटी रिटर्न फार्म लाने और साथ ही शिकायत निवारण तंत्र को और सुदृढ़ करने की योजना बना रहा है। नई कर व्यवस्था में निजी आयकर में छूट की सीमा को 5 लाख रुपये से बढ़ाकर 7 लाख रूपये कर दिया गया है। इस प्रकार नई कर व्यवस्था में 7 लाख रुपये तक के आय वाले व्यक्तियों को कोई कर का भुगतान नहीं करना होगा। नयी व्यक्तिगत आयकर व्यवस्था में स्लैबों की संख्या 6 से घटाकर 5 कर दी गई और कर छूट की सीमा को बढ़ाकर 3 लाख रूपये कर दिया गया है। इस नई कर व्यवस्था में सभी कर प्रदाताओं को बहुत बड़ी राहत मिलेगी।

वस्त्रों और कृषि को छोड़कर बेसिक सीमा शुल्क दरों की संख्या को 21 से घटाकर 13 किया गया। कुछ वस्तुओं की बेसिक सीमा शुल्कों, उपकरों और अधिभारों में मामूली परिवर्तन हुआ है जिसमें खिलौने, साइकिल, ऑटोमोबाइल और नेफ्था शामिल हैं। सम्मिलित कंप्रेस्ड बायो गैस, जिस पर जीएसटी भुगतान किया गया है उस पर उत्पाद शुल्क से छूट देने का प्रस्ताव। हरित मोबिलिटी को और संवेग प्रदान करने के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों में प्रयुक्त बैटरियों के लिथियम आयन सेलों के विनिर्माण के लिए आवश्यक पूंजीगत वस्तुओं और मशीनरी के आयात पर सीमा शुल्क में छूट दी जा रही है। मोबाइल फोनों के विनिर्माण में घरेलू मूल्यवर्धन को और बढ़ाने के लिए, कुछ एक पूर्जों और कैमरा लैंसो जैसे आदानों के आयात पर बेसिक सीमा शुल्क में राहत देने और लिथियम-आयान बैटरी सेलों पर रियायती शुल्क को एक और वर्ष लिए जारी रखना प्रस्तावित।

टीवी पैनल के ओपन सेलों के पूर्जों पर बेसिक सीमा शुल्क को घटाकर 2.5 प्रतिशत करने का प्रस्ताव। इलेक्ट्रिक रसोई घर चिमनियों पर बेसिक सीमा शुल्क को 7.5 प्रतिशत से बढ़ाकर 15 प्रतिशत करने का प्रस्ताव। इलेक्ट्रिक रसोई घर चिमनियों के हीट क्वायलों पर आयात शुल्क को 20 प्रतिशत से घटाकर 15 प्रतिशत करने का प्रस्ताव। रसायन उद्योग में डिनेचई इथाइल अल्कोहल का उपयोग किया जाता हैं। इस बेसिक सीमा शुल्क में छूट देने का प्रस्ताव। घरेलू फ्लोरोकेमिकल्स उद्योग में प्रतिस्पर्धा कायम रखने के लिए एसिड ग्रेड फ्लोरसपार पर बेसिक सीमा शुल्क को 5 प्रतिशत से कम कर 2.5 प्रतिशत किया जा रहा है। कुछ अपराधों को अपराधीकरण की सीमा से बाहर किया जाएगा। रिटर्न विवरण को भरने की निर्धारित तिथि से न्यूनतम तीन वर्षों की अवधि तक रिटर्न विवरणी को भरने पर प्रतिबंध लगाया जाएगा।

■■

"साधारण दिखने वाले लोग ही दुनिया के सबसे अच्छे लोग होते हैं, यही वजह है कि भगवान ऐसे बहुत से लोगों का निर्माण करते हैं।"

***

"मेरी चिंता ये नहीं है कि भगवान मेरे साथ है या नहीं, मेरी चिंता ये है कि मैं भगवान के साथ हूँ या नहीं, क्योंकि भगवान हमेशा सही होता है।"

—अब्राहम लिंकन

नीट व्यापम कांड-2

लाखों विद्यार्थियों के भविष्य के साथ खिलवाड़

कहाँ हैं हिन्द के लोग?

आज का प्रतिभावान विद्यार्थी रात-दिन मेहनत कर परीक्षा की तैयारी करता है। जब पता चलता है कि परीक्षा में धांधली हुई है, तब उसके दिल पर क्या गुजरती है, यह एक बेरोजगार से बेहतर कोई नहीं जान सकता है।

पिछले दिनों नीट में पेपर लीक हुए उससे 24 लाख विद्यार्थियों के भविष्य के साथ खिलवाड़ हुआ है। यह म.प्र. में हुए व्यापम कांड की पुनरावृत्ति हुई है।... और हिन्द की सरकार में स्वंय को चौकीदार कहने वाले सोये हुए हैं।

पेपर लीक से डॉक्टर बने स्केमर क्या हिन्द की गरीब लाचार बेबस जनता का ईलाज कर पायेंगे? नहीं न। सबसे पहले वह अपनी जेब भरने की सोचेंगे....और एक तंत्र भ्रष्टाचार का फिर से बन जायेगा।

आज हमारे हुक्मरानों को सोचना होगा कि यह पेपर लीक कैसे रोका जाये...मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचता है और आनन-फानन में जुर्माना नियम बना दिए जाते हैं, सजा का प्रावधान कर दिया जाता है। क्या यह कारगर उपाय है? यह सोचने का विषय है।

इतना सब होते हुए भी नीट एग्जाम जैसे पेपर लीक होते रहेंगे और मेहनती ईमानदार छात्र-छात्राओं का भविष्य दांव पर लगा रहेगा।

अमूमन मेडिकल की पढ़ाई महंगी मानी जाती है और भारत में सबसे ज्यादा क्रेज डॉक्टरी का है। हां, एक समय था, जब इंजीनियर की एक बड़ी फौज खड़ी कर दी गई, लेकिन डॉक्टरी पेशा आज भी लोगों को फायदेमंद नजर आता है। इसलिए भारत में हरेक इंसान सीट का सौदा कर अपने बच्चों को डॉक्टर बनाना चाहता है।...और जो खरीद नहीं पाते हैं, वह अपने बच्चों को विदेश से डिग्री दिलवाते हैं।

नीट-कांड पेपर लीक मामला आज भी हमारे समाज पर कलंक है, जहां यूपीएससी परीक्षा में एक फीसदी खबर आ जाती है, ठेले वाले का लड़का आईएएस अधिकारी बना है। वहीं एमबीबीएस नीट में यह खबर देखने के लिए भी नहीं मिलती है, क्योंकि पैसे का एक तंत्र बैठा है, जहां लाखों में पेपर बिकते है। यहां हुनरमंद विद्यार्थी को बेबसी ही मिलती है।

आज से करीब 18 साल पहले कैट का पेपर लीक हुआ था। सरकारें बदलती रहती हैं और मामला जस-के-तस रहता है। अब एक बानगी और देखिए जज जैसी परीक्षा में लिखित कॉपी ही बदल दी गईं। फिर न्याय कैसे मिलेगा?

नीट और व्यापम कांड न हो, इसमें सरकारी तंत्र को एक अलग सिस्टम ईजाद करने की जरूरत है। अब ऑनलाइन परीक्षा के दौर में रिजल्ट उसी दिन घोषित होना चाहिए यह भी भ्रष्टाचार का एक तंत्र बनता जा रहा है। जिसका खामियाजा गरीब तबके का विद्यार्थी उठा रहा है।

नीट पेपर लीक मामला हो या अन्य मामला जब तक हिन्द के लोग सोते रहेंगे, तब तक कुछ नहीं हो सकता है। पिछले महीने म.प्र. में पटवारी परीक्षा का मामला सामने आया था, मामले को रफा-दफा कर क्लीन चिट दे दी गई। होना यह था, यह परीक्षा फिर से आयोजित की जानी थी, जिससे समाज में एक साफ-सुथरा संदेश जाता। लेकिन तंत्र में बैठे लोग कदापि नहीं चाहते हैं। जिसके चलते नीट पेपर लीक जैसे मामले होते हैं। क्या यह हमारी नाकामी नहीं है? इससे बने हुए डॉक्टर मरीज की बेवजह चीड़-फाड़कर मरीज से रुपये ऐठेंगे और मृत व्यक्ति को आई.सी.यू. में भर्ती कर हॉस्पिटल का बिल बनायेंगे।

नीट पेपर लीक व अन्य पेपर लीक न हों, आखिर कहां हैं हिन्द के लोग?

रामबाबू मैहर देव
शमशाबाद, जिला विदिशा, मध्य प्रदेश-46411

लेख

चलते रहने का नाम जिंदगी

चलते रहने का नाम ही जिंदगी है। जिनको जिंदगी से शिकायत है वे पूरी जिंदगी शिकायत ही करते रह जाते हैं। 'कभी किसी को मुक्कमल जहां नहीं मिलता, कहीं जमीं तो कहीं आसमां नहीं मिलता।' मानव जीवन के सच को बयां करती ये पंक्तियां हमें पॉजिटिव बने रहने और जीवन के हर पल को आनंद से जीने का मार्ग दिखाती है। मनुष्य जीवन कर्म-प्रधान है। कर्म का कोई विकल्प नहीं है, न ही हो सकता है। हां, हर व्यक्ति के कर्म करने का माध्यम और उद्देश्य अलग-अलग है। कोई दिमाग का इस्तेमाल ज्यादा करता है तो, कोई शरीर का। किसी को नाम-शोहरत चाहिए तो, किसी को खूब धन-दौलत और किसी को दोनों। लेकिन बिना मेहनत के जीवन में कोई भी सफलता नहीं मिलती है। परिस्थितियां कभी अनुकूल तो कभी प्रतिकूल कुछ भी हो सकती है क्योंकि मनुष्य का जीवन परिवार, दोस्त, पैसा, धर्म, जाति आदि कई कारकों पर निर्भर करता है और इतने कारकों पर हर पल नियंत्रण संभव नहीं है। लेकिन जिसने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी वही जीवन-समर में विजयी होता है और सिकंदर कहलाता है।

पूरी दुनिया ऐसी कहानियों से भरी पड़ी है, जिन्होंने कर्म-पथ पर चलते हुए सबके लिए मिसाल पेश की है।

मृत्युंजय कुमार मनोज
ग्रेटर नोएडा, नोएडा (पश्चिम)
उत्तर प्रदेश - 201306

प्रसिद्ध मीडियाकर्मी ओपरा विनफ्रे, प्रसिद्ध लेखिका जे के राउलिंग, एप्पल के फाउंडर स्टीव जॉब्स, अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन, भारत रत्न अब्दुल कलाम, क्रिकेटर महेन्द्र सिंह धोनी, फिल्म ऐक्टर रजनीकांत जैसी शख्सियत कुछ उदाहरण मात्र हैं। इन सबने अपने जीवन के सफर में आए विपरीत परिस्थितियों को अपने मार्ग का बाधक नहीं बनने दिया। उससे लड़े और सफल हुए। सभी सफल व्यक्ति की कहानी यह बताती है कि वे आत्मविश्वास से लवरेज थे। उन्होंने स्वयं पर भरोसा किया, मेहनत किया और कठिनाइयों से लड़ते हुए हर दिन अपने को बेहतर बनाने में लगे रहे। उन्होंने चुनौतियों को अवसर के रूप में लिया और

समयानुकूल तकनीक, कौशल, बुद्धि-विवेक का इस्तेमाल करते हुए कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की।

मानव जीवन के संबंध में जब हम बात करते हैं तो कुछ तथ्यों पर गौर करना जरूरी है। पहला पृथ्वी पर हर मनुष्य की मृत्यु तय है और दूसरा हर व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के प्रकृति ने चौबीस घंटे दिया है। मानव जीवन की सफलता और असफलता की कहानी इसी चौबीस घंटे के इस्तेमाल करने की कहानी है।

हर व्यक्ति का जन्म कहां होगा, किस परिवार में होगा यह नियति तय करती है। जन्म के समय की सामाजिक, आर्थिक परिवेश पर मनुष्य का कोई नियंत्रण नहीं है। लेकिन उसके बाद की कहानी व्यक्ति स्वयं लिखता है। जो व्यक्ति अपने सामाजिक और आर्थिक हैसियत का रोना न रोकर उपलब्ध संसाधनों और समय का औप्टिम्म इस्तेमाल करते हुए अपने जीवन की समस्याओं को सुलझाने में लगा रहता है, वह जिंदगी को जीता भी है और जंग को जीतता भी है। जरूरी नहीं कि उसे मनचाही सफलता मिल ही जाए, लेकिन उन सपनों को पूरा करने का सफर व्यक्ति को अनुभवी, दृढ़निश्चयी और आत्मविश्वास से लवरेज करता है। ऐसा इंसान जीवन के हर पल का आनंद उठाता है।

गीता में कहा गया है कि— कर्म करो लेकिन फल की इच्छा नहीं करो। मेरा मानना है कि यह सिद्धांत सुखी जीवन का सूत्र है। इसे ऐसे समझ सकते हैं कि जीवन गिफ्टेड है। अभी तक ऐसी कोई संस्था सरकारी या गैरसरकारी, तंत्र-मंत्र, टेक्नोलॉजी, दवा आदि नहीं बनी है जो हमारे जीवन की गारंटी दे सके। किसी भी व्यक्ति का कोई भी पल उसका आखिरी पल हो सकता है। एक रिपोर्ट के अनुसार पृथ्वी पर प्रति मिनट लगभग 105 व्यक्ति की मृत्यु होती है। स्वस्थ से लेकर बीमार सभी प्रकार के लोग हर पल जीवन की जंग हारते हैं। चूंकि हम मृत्युलोक जाने वाले हर व्यक्ति को नहीं जानते हैं इसलिए हमें अपने आसपास का जीवन बड़ा सामान्य लगता है। वस्तुत: अगर हम जीवित हैं तो वह चमत्कार है। इस चमत्कार करने वाले को ही लोग राम, कृष्ण, अल्लाह, नानक, बुद्ध आदि के नाम से पूजते हैं। घर से सुबह निकलकर शाम को सही सलामत घर लौटना, रात में सोने के बाद सुबह स्वयं के साथ सभी बंधु-बांधवों को नार्मल पाना ईश्वर का चमत्कार है। स्पष्ट है ऐसे अनिश्चित जीवन में कर्म ही एकमात्र विकल्प है, जो आनंद दे सकता है और फल चूंकि कई कारकों पर निर्भर है इसलिए वह अनिश्चित है। इसीलिए फल की अनावश्यक चिंता नहीं करनी चाहिए।

हर व्यक्ति अनंत संभावनाओं का स्रोत है। कला, साहित्य, विज्ञान, खेल कोई भी क्षेत्र हो, वहां कोई-न-कोई व्यक्ति ही अपनी प्रतिभा से नित्य नई ऊंचाइयों को छू रहा है। यदि हर व्यक्ति प्रत्येक दिन अपने ज्ञान, स्किल, टेक्नोलॉजी, व्यवहार को पिछले दिन की तुलना में ऐड ऑन करने की कोशिश करेगा तो निश्चित रूप से वह सफलता के नए आयाम को प्राप्त करेगा। इससे उसका जीवन तो सार्थक होगा ही, परिवार, समाज और राष्ट्र का भी उत्थान होगा। वैसे तरक्की का एक दूसरा रास्ता भी है, जिसका इस्तेमाल आज के दौर में बढ़-चढ़कर किया जा रहा है। स्वयं को यथावत रखते हुए अपने संभावित कॉम्पिटिटर के मार्ग में बाधा पैदा कर उसे आगे बढ़ने से रोकने की कोशिश करना। लेकिन यह मार्ग न केवल जीवन को नकारात्मक विचारों से भर देता है बल्कि दूसरों को रोकने की कोशिश में बाकी दुनिया बहुत आगे निकल जाती है और वह स्वयं बीतते समय के साथ घोर कुंठा और अवसाद का शिकार हो जाता है क्योंकि जो उसे संभावित कॉम्पिटिटर दिख रहा होता है वह वस्तुत: उसकी ईर्ष्या और संकुचित सोच का परिणाम होता है। सच्चाई यह है कि दुनिया में हर समय कोई-न-कोई तुलनात्मक रूप से धन-दौलत, नाम-शोहरत में किसी दूसरे को पछाड़ रहा होता है लेकिन ऐसे हर व्यक्ति की पहचान करना संभव नहीं है।

बात पते कि यह है कि जब जीवन का ही भरोसा नहीं है तो उस जीवन से जुड़ी सफलता-असफलता की गारंटी का प्रश्न अपने आप बेमानी हो जाता है। ऐसे में जीवन में आनंदित रहने का एकमात्र उपाय है अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए समर्पित होकर निरंतर कर्म करते रहना। लक्ष्य प्राप्ति के सफर का आनंद उठाते हुए निरंतर प्रयत्नशील रहना। यदि लक्ष्य प्राप्त हो जाता है तो सफ़र दूसरों के लिए मिसाल बन जाती है अन्यथा वह सफर आपको और अधिक बेहतर और अनुभवी इंसान बना देती है। स्पष्ट है भाग्य की थ्योरी केवल शिकायत करने वाले लोगों का अस्त्र है। कर्म पर विश्वास करने वाले ज्यादा शिकायत किए बिना अपने पर भरोसा करते हुए निरंतर मेहनत करते रहते हैं। उनके लिए जिंदगी चलते रहने का नाम है।

■■

THE CYCLE OF TRADITIONS FROM ANCIENT TO MODERN ERA

PRERNA BOORAKOTI
NEW DELHI

India, being the oldest civilization in the world, continues to inspire its people to live in a peaceful, vibrant, prosperous, and diverse nation, thanks to its abundance of cultures, religions, and customs. It is truly remarkable that different regions of India, such as the North, South, East, and West, have their own unique societies and traditions.

Despite the advancements in technology, the people of India still hold dear to their traditional values and actively participate in celebrating age-old festivals and holidays.

Indian culture encompasses a wide range of aspects that have contributed to its global recognition, including literature, philosophy, dance, music, language, cuisine, attire, and spirituality. The essence of Indian culture lies in its enlightened communication, beliefs, values, habits, and rituals. India is renowned worldwide for its "Unity in Diversity," as people from various religious backgrounds peacefully coexist with their diverse cultures. Consequently, different regions of India have their own languages, clothing styles, and culinary preferences, yet they live harmoniously together.

Religion plays a significant role in shaping Indian culture and traditions. India is home to numerous ancient religions, with Hinduism being the oldest. The sacred texts of Hinduism, known as the Vedas, are written in Sanskrit and

form the foundation of the religion. Jainism, believed to have originated in the Indus Valley, and Buddhism, which emerged from the teachings of Gautama Buddha, are also deeply rooted in Indian culture. These religions have had a profound influence on Indian society throughout various eras. The younger generation continues to embrace the customs and traditions passed down by their ancestors, although there have been notable changes in recent times.In the pursuit of modernity, people are neglecting their cultural heritage. Traditions are only remembered when it comes to worship, marriage, or showcasing to the world. Social media is used to post photos to create an illusion of adherence to customs.

Compassion, humanity, love, and humility were once fundamental values instilled in every individual. However, today, people endanger themselves with harmful substances, devoid of any sense of humanity.

In the past, schools emphasized the importance of well-rounded education through training illustrations. Nowadays, education is shifting towards a profit-oriented business model.

Previously, people used to walk long distances, but now a car can cover the same distance in a few steps. Despite this convenience, individuals still seem unsatisfied even after finishing a meal.

In earlier times, people would read the news before starting their day to stay informed about local and global events. However, today's news often highlights individuals taking the wrong path.

In the past, one could predict the weather and time by observing the sky. Today, despite the presence of clocks and alarms, telling time has become more challenging.

Writing with a pen was once a personal and trustworthy way to communicate, with responses to letters taking time. Now, with messenger and email on mobile phones, communication is instant, albeit less personal. People tend to engage more with strangers than loved ones, receiving quick responses to messages.

Respectfully bowing to elders and listening attentively used to be common practices. Nowadays, elders' words are often ignored, with individuals only half-listening, creating a communication barrier.In the absence of respect for one's dignity, rituals, and traditions, being modern would serve no purpose. However, it is important to acknowledge that as time progresses, traditions evolve and sometimes even move in the opposite direction.

Despite the prevailing discontentment in people's minds today, the world offers a plethora of resources, including advanced technology and convenient modes of transportation like mobile phones. As individuals have come to realize that modern life can be just as chaotic as expected, they are now embracing their cultural practices, cuisine, and conversations to address various ailments.

Tradition conveys the essence of simplicity and self-respect, reminding us of the importance of preserving our heritage.

■■

"If you want to walk fast, walk alone. But if you want to walk far, walk together."

—Ratan Tata

न्याय की ओर बढ़ते कदम

तीन नए आपराधिक कानूनों में भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम शामिल है, जो 1860 के भारतीय दंड संहिता, 1898 के दंड प्रक्रिया संहिता अधिनियम और 1872 के भारतीय साक्ष्य अधिनियम का स्थान ले रहे हैं। वे मामले जो एक जुलाई से पहले दर्ज हुए हैं, उनकी जांच और ट्रायल पर नए कानून का कोई असर नहीं होगा। एक जुलाई से सारे अपराध नए कानून के तहत दर्ज होंगे। अदालतों में पुराने मामले पुराने कानून के तहत ही सुने जाएंगे। नए मामलों की नए कानून के दायरे में ही जांच और सुनवाई होगी। अपराधों के लिए प्रचलित धाराएं अब बदल चुकी हैं, इसलिए अदालत, पुलिस और प्रशासन को भी नई धाराओं का अध्ययन करना होगा। लॉ के छात्रों को भी अब अपना ज्ञान अपडेट करना होगा। बदल गई न्याय संहिताएं प्रकार हैं–

भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS)

भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता, 2023 कोड ऑफ क्रिमिनल प्रोसीजर (CrPC), 1973 का स्थान लेगा। नए कानून में 35 धाराओं मे समय सीमा जोड़ी गई है। इससे न्याय में तेजी की उम्मीद है। भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS) में कुल 531 धाराएं हैं। इसके 177 प्रावधानों में संशोधन किया गया है। इसके अलावा 14 धाराएं खत्म हटा दी गई हैं। इसमें 9 नई धाराएं और कुल 39 उप धाराएं जोड़ी गई हैं। अब इसके तहत ट्रायल के दौरान गवाहों के बयान वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए दर्ज हो सकेंगे। वर्ष 2027 से पहले देश के सारे कोर्ट कम्प्यूरीकृत कर दिए जाएंगे। नए कानून में किसी भी अपराध के लिए अधिकतम सजा काट चुके कैदियों को प्राइवेट बॉन्ड पर रिहा करने की व्यवस्था है। कोई भी नागरिक अपराध होने पर किसी भी थाने में जीरो एफआईआर दर्ज करा सकेगा। इसे 15 दिन के अंदर मूल जूरिडिक्शन, यानी जहां अपराध हुआ है, वाले क्षेत्र में भेजना होगा।

सरकारी अधिकारी या पुलिस अधिकारी के खिलाफ मुकदमा चलाने के लिए संबंधित अथॉरिटी 120 दिनों के अंदर अनुमति देगी। यदि इजाजत नहीं दी गई तो उसे भी सेक्शन माना जाएगा। एफआईआर दर्ज होने के 90 दिनों के अंदर आरोप पत्र दायर करना जरूरी होगा। चार्जशीट दाखिल होने के बाद 60 दिन के अंदर अदालत को आरोप तय करने होंगे। केस की सुनवाई पूरी होने के 30 दिन के अंदर अदालत को फैसला देना होगा। इसके बाद सात दिनों में फैसले की कॉपी उपलब्ध करानी होगी।

हिरासत में लिए गए व्यक्ति के बारे में पुलिस को उसके परिवार को ऑनलाइन, ऑफलाइन सूचना देने के साथ-साथ लिखित जानकारी भी देनी होगी। महिलाओं के मामलों में पुलिस को थाने में यदि कोई महिला सिपाही है तो उसकी मौजूदगी में पीड़ित महिला का बयान दर्ज करना होगा। यौन उत्पीड़न पीड़ितों के बयान की वीडियो रिकॉर्डिंग को अनिवार्य किया गया है। इसके साथ-साथ अपराध में शामिल पाए जाने के बाद संपत्ति की कुर्की के लिए नया प्रावधान जोड़ा गया है।

भारतीय साक्ष्य अधिनियम (BSA)

भारतीय साक्ष्य अधिनियम में कुल 170 धाराएं हैं। अब तक इंडियन एविडेंस एक्ट (IEA) में 167 धाराएं थीं। नए कानून में 6 धाराएं निरस्त कर दी गई हैं। इस अधिनियम में दो नई धाराएं और 6 उप धाराएं जोड़ी गई हैं। इसमें गवाहों की सुरक्षा के लिए भी प्रावधान है। दस्तावेजों की तरह इलेक्ट्रॉनिक सबूत भी कोर्ट में मान्य होंगे। इसमें ई-मेल, मोबाइल फोन, इंटरनेट आदि से मिलने वाले साक्ष्य शामिल होंगे। अदालतों में पेश और स्वीकार्य साक्ष्य में इलेक्ट्रॉनिक या डिजिटल रिकॉर्ड, ईमेल, सर्वर लॉग, कंप्यूटर, स्मार्टफोन, लैपटॉप, एसएमएस, वेबसाइट, स्थानीय साक्ष्य, मेल, उपकरणों के मैजेस को शामिल किया गया है। केस डायरी, एफआईआर, आरोप पत्र और फैसले सहित सभी रिकॉर्ड का डिजिटलीकरण किया जाएगा। इलेक्ट्रॉनिक या डिजिटल रिकॉर्ड का कानूनी प्रभाव, वैधता और प्रवर्तनीयता कागजी रिकॉर्ड के समान ही होगा।

भारतीय न्याय संहिता (BNS)

163 वर्ष पुराने भारतीय दंड संहिता (IPC) की जगह अब भारतीय न्याय संहिता लेगा। आईपीसी में जहां 511 धाराएं थीं,

वहीं बीएनएस में 357 धाराएं हैं। महिलाओं और बच्चों से जुड़े अपराध मामलों को धारा 63 से 99 तक रखा गया है। अब बलात्कार के लिए धारा 63 होगी। दुष्कृत्य की सजा धारा 64 में स्पष्ट की गई है। सामूहिक बलात्कार या गैंगरेप के लिए धारा 70 है। यौन उत्पीड़न को धारा 74 में परिभाषित किया गया है। नाबालिग से रेप या गैंगरेप के मामले में अधिकतम सजा में फांसी का प्रावधान है। दहेज हत्या और दहेज प्रताड़ना को क्रमश: धारा 79 और 84 में परिभाषित किया गया है। शादी का वादा करके यौन संबंध बनाने के अपराध को रेप से अलग रखा गया है। यह अलग अपराध के रूप में परिभाषित किया गया है।

भारतीय न्याय संहिता में यौन अपराधों को संबोधित करने के लिए 'महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराध' नामक एक अध्याय जोड़ा गया है। इसमें नाबालिग बच्चियों के साथ दुष्कर्म के मामले को पॉक्सो के साथ जोड़ा गया है। ऐसे केस में आजीवन कारावास या मृत्युदंड का भी प्रावधान किया गया है। गैंगरेप के मामलों में 20 साल की कैद या आजीवन कारावास की सजा का प्रावधान किया गया है। इसके अलावा, नाबालिग के साथ गैंगरेप को नए अपराध की श्रेणी में रखा गया है। कुल मिलाकर, नए कानूनों को लागू करने का उद्देश्य लीगल सिस्टम को मॉडर्न जरूरतों के अनुरूप लाना और राष्ट्र की सुरक्षा और कल्याण सुनिश्चित करना है। गैंगरेप के मामले में 20 साल की सजा या उम्रकैद की सजा का प्रावधान है। इसके अलावा शादी का बहाना, नौकरी का झांसा और पहचान बदलकर महिलाओं का यौन शोषण करने को अपराध माना जाएगा। वैवाहिक बलात्कार मामलों में यदि पत्नी 18 साल से अधिक उम्र की है तो उससे जबरन संबंध बनाना रेप (मैराइटल रेप) नहीं माना जाएगा। यदि कोई शादी का वादा करके संबंध बनाता है और फिर वादा पूरा नहीं करता है तो इसमें अधिकतम 10 साल की सजा का प्रावधान है।

भारतीय न्याय संहिता में मॉब लिंचिंग और हेट क्राइम मर्डर के लिए आजीवन कारावास या मौत की सजा का भी प्रावधान किया गया है। यह उन मामलों से संबंधित है जहां पांच या अधिक लोगों की भीड़ "जाति, जाति या समुदाय, लिंग, जन्म स्थान, भाषा, व्यक्तिगत विश्वास या किसी अन्य समान आधार" के आधार पर हत्या करती है। इन मामलों में 7 साल की कैद, आजीवन कारावास या फांसी का प्रावधान किया गया है। चोट पहुंचाने के अपराधों को धारा 100 से धारा 146 तक में परिभाषित किया गया है। हत्या के मामले में सजा धारा 103 में स्पष्ट की गई है। संगठित अपराधों के मामलों में धारा 111 में सजा का प्रावधान है।

मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने को क्रूरता माना गया है। इसमें दोषी को 3 साल की सजा का प्रावधान है। चुनाव से जुड़े अपराधों को धारा 169 से 177 तक रखा गया है। नए कानून के तहत 7 वर्ष से ज्यादा सजा वाले मामलों में फॉरेंसिक रिपोर्ट अनिवार्य होगी। इसके साथ ही अभी तक आरोपियों के हाथों में हथकड़ी लगाने का कानून नहीं था। अब सात वर्ष से ज्यादा सजा के मामले में पुलिस हथकड़ी का प्रयोग कर सकेगी।

आतंकवाद शब्द को पहली बार भारतीय न्याय संहिता में परिभाषित किया गया है। यह आईपीसी में पहले मौजूद नहीं था। बीएनएस में आतंकवाद को धारा 113 (1) के तहत दंडनीय अपराध बनाया गया है। इस कानून में आतंकवाद की स्पष्ट परिभाषा दी है, राजद्रोह को अपराध के रूप में समाप्त कर दिया है और "राज्य के खिलाफ अपराध" नामक एक नया खंड जोड़ा गया है।

आतंकवाद से जुड़े अपराधों के लिए मौत की सजा या आजीवन कारावास से दंडनीय बना दिया गया है, इसमें पैरोल की सुविधा नहीं होगी। बीएनएस, भारतीय दंड संहिता, 1860 के राजद्रोह प्रावधानों को निरस्त करता है। इसे भारतीय न्याय संहिता की धारा 152 से बदला गया है, राष्ट्र की एकता और अखंडता को खतरे में डालने वाले कृत्यों पर ध्यान केंद्रित करने वाली सभी धाराएं इसमें जोड़ी गई हैं। बीएनएस में राजद्रोह के मामले में अलग से धारा नहीं है, जबकि आईपीसी में राजद्रोह कानून है। बीएनएस में ऐसे मामलों को धारा 147-158 में परिभाषित किया गया है। इसमें दोषी व्यक्ति को उम्रकैद या फांसी का प्रावधान है।

राजद्रोह तभी लागू होगा जब यह राष्ट्र की अखंडता, संप्रभुता और एकता के खिलाफ हो, न कि केवल सरकार के खिलाफ। सरकार की आलोचना करने की अनुमति है, लेकिन देश के झंडे, सुरक्षा या संपत्ति में हस्तक्षेप करने पर जेल हो सकती है। नए कानून आतंकवादी गतिविधियों को भी परिभाषित करते हैं जो केंद्र सरकार, किसी भी राज्य, विदेशी सरकार या अंतर्राष्ट्रीय सरकारी संगठन की सुरक्षा के लिए खतरा हैं। नए कानूनों के तहत, जो भी शख्स देश को नुकसान पहुंचाने के लिए डायनामाइट या जहरीली गैस जैसे खतरनाक पदार्थों का इस्तेमाल करते हैं, उन्हें आतंकवादी माना जाएगा। इसमें खास बात ये है कि अगर कोई आरोपी शख्स भारत से बाहर भी छिपा हुआ है तो भी उसके खिलाफ मुकदमा चलाया जा सकता है। अगर वो 90 दिनों के भीतर कोर्ट में पेश होने में

विफल रहता है, तभी केस चलेगा। ऐसे मामलों में, आरोपी शख्स की अनुपस्थिति में केस चलेगा और अभियोजन के लिए एक पब्लिक प्रॉसीक्यूटर नियुक्त किया जाएगा।

कुछ महत्वपूर्ण बदली हुई धाराएं

आपराध	इंडियन पीनल कोड (IPC)	भारतीय न्याय संहित (BNS)
हत्या	302	103
हत्या का प्रयास	307	109
गैर-इरादतन हत्या	304	105
लापरवाही से मौत	304 ए	106
बलात्कार, सामूहिक बलात्कार	375, 376	63, 64, 70
देश के खिलाफ युद्ध	121, 121 ए	147,148
मानहानि	499, 500	356
छेड़छाड़	354	74
दहेज-हत्या	304 बी	80
दहेज-प्रताड़ना	498 ए	85
चोरी	379	303
लूट	392	309
डकैती	395	310
राजद्रोह	124 ए	नहीं है
धोखाधड़ी	420	318

कुछ समस्याएं, जिन पर पार पाना होगा

'देश में 5 करोड़ से ज्यादा मुकदमे लंबित हैं। इनमें से 3 करोड़ से ज्यादा आपराधिक मामले हैं। इन मामलों का निपटारा पुराने कानून के हिसाब से होगा। भारत ऐसा देश नहीं है, जहां अपराध रुक जाएं।1जुलाई के बाद नए कानूनों के हिसाब से केस चलेगा। दोहरे कानूनों की मार नए वकील और जजों पर ज्यादा पड़ेगी। वे एक तरफ पुराने कानून पढ़कर आए हैं, दूसरी तरफ नए कानूनों को पढ़ना होगा। पुलिस की कानूनी समझ, वकील या जज की तरह नहीं होती, न ही उन्हें लगातार इसकी ट्रेनिंग दी जाती है। सबसे ज्यादा गड़बड़ियां, इसी विभाग से होने वाली हैं, जिनकी वजह से जज और वकील, दोनों की परेशानियां बढ़ने वाली हैं।

नए कानूनों में कुछ संवेदनशील मामलों में पुलिस हिरासत की अवधि बढ़ा दी गई है। इससे आम लोगों की परेशानियां बढ़ेंगी। इस कानून में फॉरेंसिक जांच को डिजिटल करने का प्रावधान किया गया है। ग्रामीण स्तर पर पुलिस डिजिटली बहुत इक्विप्ड नहीं है। अब पुलिस की भूमिका कई मामलों में बढ़ा दी गई है। घटनास्थल पर जांच और ऑपरेशन को पुलिसकर्मियों को रिकॉर्ड करना होगा। डिजिटल सबूतों को वैध माना जाएगा। ई-साक्ष्य ऐप का इस्तेमाल करना होगा। देश के कई इलाके ऐसे हैं, जहां इंटरनेट की स्पीड बहुत खराब है। वहां पुलिस के लिए काम करना बेहद मुश्किल होगा।

भारत सरकार पिछले कुछ दिनों से अंग्रेजों के समय बनाए गए कानूनों को, जिनका प्रयोग न तो हो रहा था, और न ही वे व्यावहारिक थे। उनमें से कुछ कानूनों का या तो समाप्त कर दिया गया था उनमें कुछ परिवर्तन किया गया है। इसी प्रकार से ये तीन आपराधिक कानूनों में भी व्यापक संशोधन किए गए हैं। इसमें सरकार की मंशा पर कोई प्रश्न चिह्न नहीं है लेकिन इन कानूनों को तीव्रता से अमल में लाने के लिए भी व्यापक प्रयास किए जाने की आवश्यकता है तभी तो जैसा कि केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के कथन कि अब "तारीख पे तारीख" युग का अंत अब सुनिश्चित होगा, को हम सार्थक होता देख पाएंगे।

प्रस्तुति– द साइलेंट स्ट्रोक ■■

NEW ARRIVALS

महानिशा की ममतामयी माँ

श्री नन्दलाल मणि त्रिपाठी पीताम्बर
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

जीवेश से जब भी उसके सहपाठी पूछते तुम्हारे पिता का नाम क्या है? जीवेश कुछ भी बता पाने में खुद को असमर्थ पाता और सहपाठियों के बीच लज्जित होता लौटकर माँ से सवाल करता माँ मेरे पिता कौन है? स्वास्तिका बताती भी तो क्या?

वह भी हर बार जीवेश के प्रश्न को कोई-न-कोई बहाना बनाकर टाल जाती। कभी आसमान की तरफ संकेत देकर जीवेश को बताती कि उसके पिता ऊपर भगवान जी से मिलने गए है और कभी भी लौटकर आ जाएंगे। कुछ देर के लिए जीवेश के मासूम मन की जिज्ञासा शांत अवश्य हो जाती किंतु बार-बार उसके मन में अपने जन्मदाता पिता को देखने, उनसे ढेर सारी बातें करने का मन करता। जब वह अपने सहपाठियों को अपने पिता के साथ उंगलियां पकड़ घूमते एवं अभिमान से आल्लादित देखता तब बार-बार माँ स्वास्तिका से प्रश्न करता माँ उसे कल्पनाओं और आशाओं के आश्वासन देती।

धीरे-धीरे जीवेश बड़ा एवं समझदार होने लगा और माँ के बचपन के नुस्खे अब काम नहीं आते। जब भी जीवेश माँ स्वास्तिका से अपने पिता के विषय में सवाल करता इधर-उधर टाल-मटोल करती लेकिन... स्वास्तिका भी जीवेश के प्रश्नों से ऊब चुकी थी उसको यह नहीं समझ में आ रहा था कि वह बेटे जीवेश को क्या बताए? क्या यह बताए कि उसकी माँ व्याही संतान जीवेश का पिता भद्रक उसे पाप के दलदल में धकेल कर चला गया?

लेकिन जीवेश की जिद्द के आगे स्वास्तिका के समक्ष कोई रास्ता भी तो नहीं था। अतः उसने निश्चय कर लिया कि वह जीवेश को सच बताएगी मगर जब भी वह बताने का प्रयास करती उसकी शक्ति जबाब दे जाती उसकी अन्तरात्मा उसे कोसती मगर उसके सामने कोई विकल्प भी नहीं था।

कहते हैं जब किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता है तो समय ही उसका उत्तर खोज लेता है।

जीवेश आठवी कक्षा में पढ़ रहा था। विद्यालय के प्राचार्य ने विद्यालय में एक आदेश छात्रों के अनुपालन हेतु प्रसारित किया कक्षा के प्रति पांच छात्र एक-एक दिन अपने पिता के साथ विद्यालय आएंगे और शिक्षकों की उपस्थिति में प्रत्येक छात्र के बेहतर भविष्य के लिए उसके पिता के समक्ष उसकी प्रतिभा के सकारात्मक मजबूत पक्ष एवं कमजोर पक्ष को प्रस्तुत कर उसके उत्कृष्ट उद्भव एवं विकास के लिए सुझाव दिए जाएंगे।

प्रधानाध्यापक के आदेशानुसार पांच-पांच छात्रों को तिथियां बताई गई जिसके अनुसार उन्हें अपने पिता के साथ विद्यालय आना था। जीवेश को चार दिन बाद अपने पिता के साथ विद्यालय जाना था।

जीवेश ने माँ स्वास्तिका से जब विद्यालय का आदेश सुनाया तब स्वास्तिका चार दिन बाद की कल्पना कर अंतर्मन से कांप उठी वह सोचने लगी वह करे तो करे क्या?

चार दिन बाद वह जीवेश के पिता को कहां से लाएगी? वह सोचने लगी क्या करे? अचानक उसने निर्णय किया कि वह विद्यालय समयोपरांत स्कूल के प्रधानाध्यापक से मिलेगी और उनसे सच्चाई बताएगी एवं अनुरोध करेगी कि वह जीवेश को आश्वस्त करेंगे कि उसके पिता उनसे मिलकर जा चुके हैं किसी व्यस्तता के कारण वह जीवेश को साथ लिए बिना ही मिलने आए थे।

स्वास्तिका के मन में यह भी विचार आता प्रधानाध्यापक जो छात्रों को सच का आचरण सिखाते हैं क्या वह एक अबोध छात्र से तथ्यों के इतर कुछ भी बताने का साहस क्यों करेंगे?

प्रत्येक संभावनाओं पर गहन मंथन करने के बाद स्वास्तिका ने दृढ़ होकर यह निश्चय किया कि वह प्रधानाध्यापक शौनक शंकर से अवश्य मिलने जाएगी चाहे जो भी हो उसने मन-ही-मन यह सोच लिया था कि एक-न-एक दिन तो बेटे जीवेश को सच्चाई का पता लगना ही है तो अभी क्यों नहीं?

जिस दिन जीवेश को अपने पिता के साथ विद्यालय जाना था ठीक उसके एक दिन पहले मध्य रात्रि को जब जीवेश गहरी निद्रा में सो रहा था उसी समय वह महाभारत की पात्र कुंती की तरह स्वास्तिका सीधे प्रधानाध्यापक शौनक शंकर के घर पहुंची और दरवाजा खटखटाया प्रधानाध्यापक शौनक शंकर ने पत्नी करुणा से कहा- देखो इतनी रात्रि को कौन आ गया?

करुणा ने घर का दरवाजा खोला और देखकर हैरान रह गयी कि दरवाजे पर एक महिला खड़ी थी करुणा ने पूछा- आप कौन? इतनी रात को कैसे? स्वास्तिका ने बड़े शांत एवं अनुनय भाव से करुणा से प्रधानाध्यापक शौनक शंकर से मिलने के लिए कहा करुणा ने उसे समझाने की पूरी कोशिश की और कहा इतनी रात को आपका इस तरह से आना और एक पुरुष से मिलने की जिद्द उसी की पत्नी के समक्ष करना किसी नीति-नियत, संस्कृति-संस्कार का अनुपालन नहीं हो सकता।

बहुत देर करुणा और स्वास्तिका में तर्क-कुतर्क होते रहे अंत में स्वास्तिका ने कहा बहन तुम भी एक माँ हो एक माँ की विवशता तुमसे अच्छी तरह कौन समझ सकता है? स्वास्तिका की यह बात सुनकर करुणा हतप्रद रह गयी उसने शर्त रखी कि शौनक शंकर एवं उसकी वार्ता के बीच वह स्वयं भी उपस्थित रहेगी। स्वास्तिका को कोई आपत्ति नहीं थी। उसने सहमति दी करुणा अंदर गयी और पति शौनक शंकर के साथ कुछ ही देर में बाहर लौट आई।

स्वास्तिका को देख शौनक शंकर ने पूछा- तुम कौन हो? और इतनी रात्रि को क्यों मुझसे मिलने की हठ कर रही थी। स्वास्तिका ने कहा- मैं रूपांकर कर्ण की बेटी हूँ, जो आपके पिता जीवन के मित्र थे। इतना सुनते ही शौनक बोल उठे क्या तुम स्वास्तिका हो? स्वास्तिका ने कहा- मैं वही अभागिन हूँ। शौनक ने पूछा- इतनी रात को आने का कोई विशेष कारण स्वास्तिका ने उत्तर दिया आपने प्रधानाध्यापक के पद से यह आदेश दिया है कि आठवी कक्षा के पांच छात्र प्रतिदिन अपने पिता के साथ विद्यालय में आएं, जिससे कि विद्यार्थियों के भविष्य के लिए उचित सुझाव उनकी क्षमता एव प्रतिभाओं के आधार पर उनके पिता को दी जा सके। माँ को आपने बुलाया नहीं है। यदि बुलाया होता तब भी मैं नहीं आ सकती थी, क्योंकि मुझे दुनिया बदचलन समझती हैं क्योंकि मैं बिन व्याही माँ हूँ।

करुणा बड़े ध्यान से स्वास्तिका की बातों को सुनती जा रही थी उसने पति शौनक से प्रश्न किया सामने खड़ी औरत के विषय में आप भली-भांति जानते हैं, अब आप बताए कि इस माँ की क्या विवशता है? मैं भी माँ हूँ। माँ धरती की तरह शांत गम्भीर तो, समंदर की तरह गहरी अंर्तमन की होती है। निर्मल-निश्चल, अविरल प्रवाह होती है, जिसकी धरा धारा की कोख से ईश्वर भी जन्म लेता है तो इस माँ के समक्ष कौन-सी ऐसी विवशता है? जो इसे पल-पल घुट-घुट कर जीने को विवश करता है।

स्वास्तिका ने कहा- भईया आज आप भले ही खून के रिश्ते के भाई न हो फिर भी मानसिक रिश्ते से इस बहन की सच्चाई अपनी पत्नी को अवश्य बताए, जिससे कम-से-कम एक माँ, नारी को मेरी वेदना की अनुभूति का अनुभव तो हो। करुणा मेरी अंतर्मन वेदना का साक्ष्य होगी और वही निर्णय भी करेगी कि इतनी रात आपके दरवाजे पर मेरा आना उचित है या अनुचित?

शौनक कुछ देर शांत रहने के उपरांत अतीत की यादों में खो गए और उनकी यादों की परतें ऐसी खुलती गयी जैसे कल की ही बात हो। शौनक शंकर गम्भीर होते हुए बोले, करुणा यह स्वास्तिका है। हम और स्वास्तिका एक ही साथ गांव के पाठशाला एवं आज जिस जूनियर हाई स्कूल का मैं प्रधानाध्यापक हूँ, में साथ -साथ पढ़े हैं। आठवी कक्षा के बाद भी इंटरमीडिएट तक मैं और स्वास्तिका साथ-साथ ही पढ़ते थे। उसी समय की बात है स्वास्तिका के घर इसके दूर के रिश्ते का बहनोई भद्रक अक्सर इनके घर आता-जाता था । रिश्ता होने के कारण उसके घर-बाहर किसी भी व्यक्ति को उसके चाल-चलन पर कभी कोई शक नहीं होता था। लेकिन भद्रक था बहुत निकृष्ट व्यक्ति। उसकी निगाह सिर्फ रूपांकर की एकलौती बेटी एवं उनकी सम्पत्ति पर थी। उसने आते-जाते कब स्वास्तिका को अपने जाल में फंसा लिया पता ही नहीं चला। स्वास्तिका माँ बनने वाली थी जब यह सच्चाई घरवालों को पता चली तब रूपांकर एवं जोगेश्वरी स्वास्तिका के माता-पिता स्वयं भद्रक के घर गए और बेटी के विवाह के लिए अनुनय-विनय, प्रार्थना-निवेदन, जो भी सम्भव था किया। लेकिन भद्रक तो दुष्ट ही नहीं दानवी प्रवृत्ति का था। उसने घर आए स्वास्तिका के माता-पिता की हत्या कर दी और अपनी माता की भी हत्या कर दी। पिता उसके पहले ही मर चुके थे और रूपांकर और जोगेश्वरी से जबरन उनकी सारी जायदाद अपने नाम उन्हें मारने से पहले

लिखवा लिया। इतना सब होने के बाद उसने पूरी घटना को ऐसा रंग दे दिया की कानून और पुलिस भी हैरत में पड़ गयी।

पुलिस के समक्ष उसने बताया कि उसकी मां और रूपांकर जोगेश्वरी की मृत्यु बेटी के बिन व्याही माँ बनने के सदमे से हुई, जो उस बेचारे पर किसी और के पाप को अपनाने का दबाव बना रहे थे और उसकी माँ संतोषी अपने रिश्तेदारों के घर पर सदमे से मर गई। जबकि सच्चाई यह थी कि भद्रक ने ही रूपांकर जोगेश्वरी की सारी सम्पत्ति लिखने के बाद स्वास्तिका को अपनाने का आश्वासन दिया तब रूपांकर जोगेश्वरी ने बेटी के भविष्य के लिए अपनी सारी संपत्ति भद्रक के नाम कर दी तब उसने उनको संखिया धोखे से दे दिया और जब माँ ने विरोध किया तो उसका गला दबाकर मार डाला फिर रूपांकर और जोगेश्वरी के शव उनके गांव वाले लेकर गांव आएं और उनका अंतिम संस्कार गांव वालों ने मेरे पिताजी की देख-रेख में किया।

सभी श्राद्ध कर्मो के बाद भद्रक ने रूपांकर की जमीनों को एक-एक करके बेचता चला गया। स्वास्तिका ने इसी बीच एक सुंदर बालक को जन्म दिया, जिसके बाद गांव वालों ने स्वास्तिका को दुराचारिणी, व्यभिचारिणी, चरित्रहीन, कलंकिनी जाने क्या-क्या कहकर गांव से ही बाहर कर दिया। सामाजिक विरोध में किसी एक व्यक्ति की सकारात्मकता में सच्चाई की आवाज भी दब जाती है वही स्थिति मेरे पिता जीवन की थी। वह स्वास्तिका की सच्चाई को जानते थे लेकिन उनकी भी कोई सुनने वाला नहीं था।

स्वास्तिका अपने नवजात बच्चे को लेकर कुछ दूरी पर गांव की नदी के किनारे शमशान से कुछ दूर एक पेड़ के नीचे झोपड़ी बनाकर रहने लगी और अपने बच्चे को पालने लगी। अमूमन शमशान की तरफ अब भी गांव में जाना अपशगुन माना जाता है तो वहाँ गांव का कोई जाता नहीं था। स्वास्तिका ने पास के गांव के छोटे-छोटे बच्चों को एकत्रित कर उन्हें पढ़ाना शुरू किया। पहले तो उसे कुछ विरोध का सामना करना पड़ा लेकिन जब गांव वालों को उसकी नियत की स्पष्टता की जानकारी हुई तब गांव वाले उसे अनाज, लकड़ी, दूध आदि देने लगे, जिससे उसे अपने बच्चे को पालने में परेशानी नहीं होती थी। ये वही जीवेश है जो मेरे विद्यालय में कक्षा आठवी का छात्र है।

पति के द्वारा स्वास्तिका की सच्चाई सुनकर करुणा की आंखों से अश्रुधारा फूट पड़ी वह बोली बहन तुम माँ नहीं साक्षात माँ के नौ रूपा की सत्य हो। तुम्हारा दर्शन पाकर करुणा धन्य हुई महानिशा मैं। आपका आगमन मेरे एवं मेरे पति के किसी पूर्व जन्म के शुभ कर्मों का परिणाम है। अब बोलो बहन क्या चाहती हो स्वास्तिका बोली बहन। करुणा मैं चाहती हूँ कि शौनक जी जीवेश को अपने पिता संग विद्यालय में लाने के नियम से मुक्त कर दे। शौनक बोले बहना भद्रक दानव है और रहेगा लेकिन तुम मेरी बहन थी और हो इस नाते मैं जीवेश का मामा ही तो हुआ तुम निश्चिन्त होकर जाओ मैं भगवान श्री कृष्ण की तरह जीवेश को हर कठिन मार्ग पर पथ प्रदर्शक रहूंगा। तुम जैसी माताओं से भारत भूमि धन्य है। तुम जैसी माताओं से माँ की महिमा है। तुम जैसी माँ से माँ की पहचान, परिभाषा का सत्यार्थ है। तुम जैसी नारी-गौरव ने ही माँ के पवित्रता को शाश्वत सत्य बनाए रखा है।

माँ की महिमा, गरिमा, महत्व स्वास्तिका से शुरू होती है और माँ को गौरवान्वित करती है। हे बहना मेरे ही कुछ पुण्य शेष थे, जिसके कारण मुझे अपनी कोई बहन न रहते हुए स्वास्तिका जैसी बहन मिली बहन आप निश्चिंत होकर जाओ।

स्वास्तिका और करुणा दोनों के ही नेत्रों से अविरल अश्रु धार बह रही थी।

■■

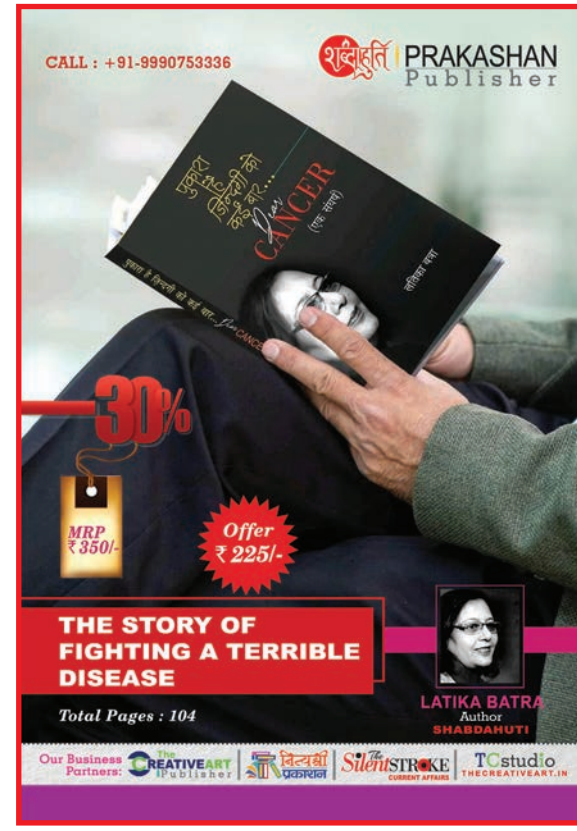

पारूल अग्रवाल मित्तल
अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

अंतर...

तुमने ये सोचा कैसे कि तुम रात-रात भर घर से बाहर रहोगी और मैं कुछ कहूंगा नहीं...

लेकिन...लेकिन-वेकिन कुछ नहीं दिन की ड्यूटी मिले तो कर लो वरना जॉब छोड़ दो। नहीं करानी नौकरी... और जरूरत क्या है अच्छी-खासी जॉब है मेरी। लेकिन दिनेश... समझ नहीं आता क्या? मां-बाप ने सिखाया नहीं की बहस नहीं करते। इस घर में रहना है तो वही करना होगा जो मैं कह रहा हूं।

निशी हर बार की तरह चुप हो गई। वो तकरार बढ़ाना नहीं चाहती थी क्योंकि सौम्या अब बड़ी होने लगी थी और मां-बाप के झगड़े से सहम जाती थी। निशी को हालांकि कोई फर्क नहीं पड़ता था कि ड्यूटी दिन की है या रात की। वो अपनी सभी जिम्मेदारी बखूबी निभाती। फिर भी दिनेश की बात कही-न-कही फांस की तरह तो चुभती। दिमाग बटाने के लिए निशी अख़बार लेकर बैठ गई। फ्रंट पेज पर खबर थी...नौ साल की बच्ची के साथ दिन में गैंग रेप। पूर्व प्रेमी के साथ दिन में भागी विवाहित महिला।

अचानक निशी के मन में एक खयाल आया "रात की कालिख में होने वाले काम अब दिन में भी" कहीं दिनेश जॉब ही न छुड़वा दे... फिर सौम्या के सपने दिन-रात में न उलझ जाए।।

निशी एक फैसला कर चुकी थी दिन-रात के बीच में न पिसने का फैसला...।

■■

ऋतु अग्रवाल
मेरठ, उत्तर प्रदेश

मेरी भी कुछ अहमियत है या नहीं

"निश्चल कहाँ हो बेटा? उठो, स्कूल नहीं जाना है क्या? जल्दी से तैयार हो जाओ। फिर मुझे भी दफ्तर जाना है।" मंजरी ने अपने आठ वर्षीय बेटे निश्चल की चादर खींची तो कुनमुना कर आँख मसलते हुए निश्चल उठ तो गया पर अपनी जगह से टस-से-मस नहीं हुआ।

"क्या बात है? उठो, फटाफट!" बिस्तर समेटते हुए मंजरी ने बाथरूम की ओर रुख किया और गीजर खोलकर निश्चल की स्कूल यूनिफॉर्म निकालने लगी। निश्चल को अब भी उठता न देख मंजरी ने उसका हाथ पकड़कर खींचा तो निश्चल की रुलाई फूट पड़ी। "क्या बात है रो क्यों रहे हो?" मंजरी चौंक गई। "मम्मा! क्या हम अपने घर वापस नहीं जा सकते? मुझे यहाँ अच्छा नहीं लगता। पापा की बहुत याद आती है।" निश्चल की आँखें आँसुओं से भर गईं।

"निश्चल! एक बार में समझ लो। अब हम वहाँ कभी नहीं जाएँगे। भूल जाओ उस घर को। अब हम नानी के घर ही रहेंगे।" मंजरी सख़्त स्वर में बोली और निश्चल का हाथ पकड़कर बाथरूम में ले गई। निश्चल को स्कूल बस में बैठाकर मंजरी घर आ गई।" माँ! मैं क्या करूँ, निश्चल को कैसे समझाऊं? उस घर में मेरी कोई अहमियत नहीं है। विनीत सिर्फ अपने घर वालों की ही बात सुनते हैं। मैं तो वहाँ एक अनचाही मेहमान हूँ। आप ही बताओ, जिस घर में मेरी अहमियत ही नहीं, वहाँ रहकर मैं क्या करूँ?" मंजरी की बात सुनकर भी विनीताजी कुछ नहीं बोली। वो जानती थीं कि इस समय मंजरी और विनीत अहम् से भरे हैं। दोनों एक-दूसरे को समझना ही नहीं चाह रहे थे पर इन दोनों की टकराव के मध्य निश्चल पिस रहा था पर अपने अहंकार के चलते दोनों ही निश्चल की पीड़ा व उदासी को देख नहीं पा रहे थे।

"मिस्टर विनीत! आपसे कुछ बात करनी है। आप स्कूल आइए। निश्चल को लेकर कुछ समस्या है।" निश्चल के स्कूल की प्रिंसिपल ने विनीत को फोन किया।" पर, मैडम! मैं इस समय ऑफिस में बहुत व्यस्त हूँ। आप अंजलि को कॉल कर दीजिए। वैसे भी उसका ऑफिस स्कूल के काफी नजदीक है।" विनीत बोला।

"आप शायद समझ नहीं रहे हैं। यह कोई पीटीएम नहीं है। आपको आकस्मिक कारणों से बुलाया जा रहा है। वैसे मंजरी जी भी आ रही हैं। हम निश्चल को तब तक घर नहीं भेजेंगे जब तक आप दोनों व्यक्तिगत रूप से मुझसे मिलने नहीं आते हैं।" यह कहकर प्रिंसिपल महोदया ने फोन रख दिया।

आधे घंटे के भीतर ही विनीत और मंजरी, निश्चल के स्कूल पहुँच गए। निश्चल, प्रिंसिपल मैडम के केबिन में ही था। बिखरे बाल, धूल से लथपथ स्कूल यूनिफॉर्म व जूते, माथे पर बहकर रुका हुआ ख़ून, निश्चल की हालत देखकर दोनों दंग रह गए। दोनों निश्चल की तरफ भागे।" रुक जाइए आप दोनों वहीं। "प्रिंसिपल मैडम चिल्लाईं।, "आप जानते हैं इस बच्चे की यह हालत आप दोनों की वजह से ही हुई है। इसने मुझे सब बताया। जानते हैं, पिछले कुछ समय से न तो यह क्लासवर्क करता है, न लंच खाता है और न ही अन्य बच्चों के साथ खेलता है और आज इसे स्वयं को चोट पहुँचाने की कोशिश की।"

"यह सारी गलती मंजरी की है। यह न निश्चल का ख़्याल रख पाई न मेरे घर का।" विनीत ने आरोप मढ़ा।" हाँ! तुम्हारा घर। तुम्हारा ही तो घर है वह। सही कह रहे हो तुम और तुम्हारे घर में मेरा कोई अस्तित्व नहीं इसलिए मैंने तुम्हारा घर छोड़ दिया।" मंजरी ने पलटवार किया। "नहीं! तुम्हारी ज़िंदगी में मेरा कोई अस्तित्व नहीं। तुम्हारे लिए तुम्हारा अहंकार ही मायने रखता है इसलिए तुम घर छोड़ आई और निश्चल को भी ले गई पर अब तुमसे निश्चल को भी नहीं सँभाला जा रहा। "विनीत और मंजरी एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाने लगे।

"पापा-मम्मी! आप दोनों अपने अस्तित्व के लिए लड़ रहे हैं पर क्या आप लोगों के लिए मेरा कोई अस्तित्व नहीं। अगर नहीं तो आप मुझे इस दुनिया में लाए ही क्यों?" निश्चल के प्रश्न से वहाँ मौन पसर गया।

■■

अविनाश खरे
पुणे, महाराष्ट्र

बंधन प्यार का

आज मंगल कार्यालय में शहनाई के सुमधुर स्वर सुनाई दे रहे थे। मेहमान आना शुरू हो गए थे। शादी में रिश्तेदार, मित्र और परिचित व्यक्तियों को निमंत्रण दिया गया था। शादी रात को संपन्न हो गई। सारे मेहमान खाना खाकर चले गए। अब तो घर के सदस्य बातें कर रहे थे। सबका खाना होने पर अब हॉल का और केटर का बिल देने पर सब अपने घर समृद्धि को जो, इस घर की बहू थी उसे गृह प्रवेश करवाया। राहुल ने तो समृद्धि को हीरे का सेट भेंट में दिया था, वो तो ये भेंट देखकर बहुत खुश थी।

समृद्धि को तो सब सपना लग रहा था, उसे ससुराल बड़ा अच्छा मिला था, साथ में दिलोजान से प्रेम करने वाला पति मिला था। वह अपने आपको भाग्यवान समझती थी। राहुल भी समृद्धि से शादी होने पर बड़ा प्रसन्न दिखाई देता था। सुबह की सुनहरी किरणे गुलाबी रंग के पर्दे के पीछे से समृद्धि की आंखों पर आई तो उसके हाथों में पहनी हुई हरे रंग की चूड़ियां खनक उठी। सासू मां ने उसे कानों के सोने के झुमके और बनारसी साड़ी मुँह दिखाई में भेंट की थी। उसे देखकर वो खुशी से झूम उठी थी। उसकी नज़र पड़ी तो रसोईघर से गरमा-गरम चाय लेकर राहुल आ रहा था। उसने चाय देते हुए कहा- "लीजिए रानी सरकार सिर्फ आपके लिए" चाय की वो मोहब्बत भरी प्याली दे रहा था इतने में घर के सब सदस्य वहाँ आये उन्होंने उसे कहा अरे ! शरमा मत ले बेटी, ये तो स्पेशल चाय है।

अंजली तीन साल की मासूम लड़की डिश में पारले जी बिस्कुट लेकर दादी के पास खड़ी रही। राहुल की बेटी बहुत सुंदर थी बिल्कुल अपनी माँ की तरह, उसकी आँखें भी माँ के

जैसी, राहुल ने उसे गोद में उठाया। कामिनी राहुल की पत्नी दो साल पहले बीमारी की वजह से चल बसी। राहुल ने ही अंजली को बड़े प्यार से देखभाल की। जब राहुल समृद्धि से मिलता था तब अंजली की ही बात करता था। राहुल कभी मोबाइल पर मैसेज तो कभी वीडियो कॉल दिन में एक बार करता था। शादी से पहले वो दोनों होटल में खाना खाने जाते थे। कब दोनों इतने करीब आये, उनको पता ही नहीं चला।

इधर समृद्धि को पता था कि राहुल विवाहित है और एक बेटी का बाप है पर बंधन प्यार का था। अब तो समृद्धि के सामने नया चैलेंज था। समृद्धि के घर पर उसकी माँ इस शादी से नाराज़ थी, फिर भी उसने राहुल से शादी की। वैवाहिक जीवन की शुरूआत तो हो चुकी थी। जब राहुल समृद्धि को गले लगा रहा था तब उसकी बेटी अंजली वहाँ आकर समृद्धि की साड़ी खिंचती है और प्यार से माँ कहकर पुकारती है, उसकी मुस्कुराहट देखकर समृद्धि तो उसे गोद में उठाकर प्यार करती है। राहुल भी समृद्धि के कंधे पर हाथ रखता है। आज से एक नए रिश्ते की शुरुआत होती है। अब चाहे कितने भी संकट आएं हमारी जिंदगी में हम ये बंधन प्यार का निभाएंगे।

***

SHORT STORIES

"WATER"

SUNIL GAJJANI

BIKANER - 334095 (RAJASTHAN)

"Are you just staring at the sky?"

"No, to the clouds!"

"But the sky is as dry as a desert!"

"Like our fields too, you can say!"

"Yes, you are right! Neither the clean sky nor the fields look good!"

"Lichia, I have spent most of my life staring at the sky and...!"

"And almost your dry fields too!"

Hearing these words of Hadaman, Lichhiya burst out laughing! Both of them were talking while looking at their respective dry fields.

"Lichia, will we be able to see our fields flourishing in this remaining age of ours?!"

"So do you want to live to see this?!"

"You have made a good comment, I wish it was so that age would live as per its own!"

"Hmm, true! It's like the sky, nothing decides where it rains more and where it rains less!"

Then very fast a motorcycle passed by them, raising a cloud of dust.

"See the enthusiasm of the new soil, how it turned out!"

"Yes! The soil of my body was also like this once, but it had not forgotten so much culture!

"So much has changed while watching, only my hopes have not changed...!!" The next words remained choked and he looked back at the sky!

"Will it rain because you are sad like this?!

" But tears will flow from my sad heart!

COMMUNISM

"Mother, it would have been nice if we too were rich, we would have had servants and luxuries."

"It's all a matter of luck, let's clean the utensils quickly, there is more work to do."

Mother and daughter were talking while washing utensils.

"Mother, the wife of this house is so skinny and look at the daughters-in-law, they keep walking around all the time, they do exercises to stay slim. Do the household chores, kitchen work, utensils etc. ask for exercise? There is no need, isn't it, mother?"

"That's fine.. we just have to die of hunger."

■■

GIFT

"Wow, my son is looking very rich wearing these clothes, they suit you very well!"

"Hey Amma! I will definitely look good, today is my birthday!"

"My king son, did you wish that you should wear clothes like Pintu Baba? !"

"Yes Amma, I saw when you were taking it secretly!"

"I saw! You insisted on wearing such clothes only on your birthday! But you know I don't have the capacity to buy such expensive clothes, so I did..!"

"That's why you secretly asked your mistress to buy these old clothes of Pintu Baba from me, but Amma still. I had seen it!"

The mother hugged her little son and said tearfully -

"That is right son, tell me how else could I have fulfilled such a wish of yours! But it is new for your body, isn't it!" ■■

द साइलेंट स्ट्रोक

(द्विमासिक पत्रिका)

लेखकों से अनुरोध

1. द साइलेंट स्ट्रोक द्विमासिक पत्रिका हेतु साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे कहानी, कविता, गज़ल, यात्रा वृतांत, पुस्तक समीक्षा, महिला, युवा, बच्चें, वृद्ध आदि से संबंधित लेख, तीज-त्यौहार आदि पर लेखकों से रचनाएं आमंत्रित हैं।
2. द साइलेंट स्ट्रोक में प्रकाशन के लिए भेजी जाने वाली सामग्री मौलिक एवं अप्रकाशित होनी चाहिए।
3. यह सामग्री सरल और सुबोध भाषा में होनी चाहिए।
4. लेख आदि फुल स्केप आकार के 4-5 टंकित पृष्ठों/अधिकतम 2000 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए।
5. लेख से संदर्भित चित्र/रेखाचित्र भी भेजे जा सकते हैं।
6. रचना यूनिकोड फॉन्ट में वर्ड फॉरमेंट में ही भेजें।
7. द साइलेंट स्ट्रोक में मानक हिंदी वर्तनी का प्रयोग किया जाता है। अतः रचनाएं इसी वर्तनी के अनुसार भेजी जाएं।
8. समीक्षार्थ पुस्तकों की दो प्रतियां भेजी जानी चाहिए।
9. रचना के साथ लेखक अपना संक्षिप्त जीवन परिचय तथा अपना एक पासपोर्ट आकार का फोटो भी भेजे।
10. रचना के साथ अपना फोन नं एवं ई-मेल अवश्य भेजें।
11. रचनाएँ thesilentstroke@gmail.com पर ही भेजें।
12. सामग्री के प्रकाशन विषय में संपादक का निर्णय अंतिम माना जाएगा।

–राकेश शर्मा 'निशीथ' ■■

विद्या और विद्यार्थी

सुशीला गुप्ता 'मुदिता'
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

विद्या और विद्यार्थी किस तरह खरीद लिए जाते हैं
मेरे देश के तमाम परीक्षा-परिणाम यह बताते हैं
कुछ के परिणाम आते हैं
तो कुछ के परिणाम विवादित बन जाते हैं
हाई कोर्ट से सुप्रीम कोर्ट तक
विद्यार्थी दौड़ लगाते हैं
मेरे देश की शिक्षा व्यवस्था यह बताते हैं
अधिकारी का पेपर हो या हो चिकित्सक का
अब तो भावी शिक्षक भी खरीद लिए जाते हैं
मेरे देश के तमाम परीक्षा-परिणाम यह बताते हैं
न जाने कैसे इस डिजिटल इंडिया के युग में
खरीद और बिक्री करने वाले
इतने नजदीक चले आते हैं
मेरे देश के तमाम परीक्षा-परिणाम यह बताते हैं
सब्जी मंडी की सब्जी और तरकारी
हो गई है नौकरी सरकारी
परीक्षाओं के सीजन आने पर
इनके भाव लग जाते हैं
मेरे देश के तमाम परीक्षा-परिणाम यह बताते हैं
अब विद्यार्थियों को भी लगता है कि;
जुझारू विद्यार्थी होने से अच्छा है
कि एक अच्छा खरीदार बना जाए
बजरीकरण के इस दौर में
विद्यार्थी भी बाजारवादी हो जाते हैं
रास्ते में रुकावट कुछ भी नहीं है
यदि भाव के अभाव को रोक लिए जाते हैं
मेरे देश के तमाम परीक्षा-परिणाम यह बताते हैं।

■■

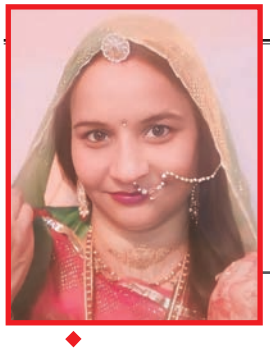

गरिमा राकेश 'गर्विता'
कोटा, राजस्थान

गांठ

गांठ मन की हो,
चाहे रस्सी की।
एक गांठ खुलते ही,
खुलने लग जाती है।
परतें गांठों की
सुलझ जाते हैं।
कई उलझें हुए सवाल,
जो सवाल होते नहीं है।
पैदा हो जाते है।
और बढ़ते जाते हैं।
वैसे जैसे गांठ-पर-गांठ।
बढ़ती है दूरियां
पनप जाती है नफरतें
वो जो कभी थी नहीं,
बस एक गांठ लगी
और चढ़ती गई
गांठों की परतें
परत-दर-परत
जो खुल सकती है
बस एक गांठ के खुलने पर।

■■

डॉ. अमित कुमार दीक्षित
कोलकाता, पश्चिम बंगाल

रिटायर्ड कर्मचारी की पीड़ा

विनती सुन ले संगठन के शीर्ष अधिकारी
कभी मैंने भी संभाली थी यह कुर्सी तुम्हारी
परन्तु अब कोई नहीं सुनता लाचारी हमारी
कार्यालय के चक्कर लगा-लगा के
घिस गये जूते-चप्पलें हमारी
फिर भी सुन के अनसुना कर देते
विनती प्रबंधन के पदाधिकारी
खून-पसीना एक करके हमने भी
निभायी संगठन की हर जिम्मेदारी
संगठन की तरक्की में हमारी भी
उतनी भागीदारी, जितनी है तुम्हारी
समय रहते कर दें समस्या का निदान हमारी
अन्यथा तुझे भी खेलनी पड़ेगी,
रिटायरमेंट के बाद की यह पारी
विवश, मजबूर होकर, हम रिटायर्ड कर्मचारी
धरना, प्रदर्शन व अवरोध कर रहे हैं, बारी-बारी
फिर भी प्रबंधन के पास नहीं है,
समस्या का समाधान हमारी
जिस संगठन के लिए पूरी जिन्दगी गुजार दी
आज उसी संगठन से है अधिकार की लड़ाई हमारी
हाथ जोड़कर विन्रम निवेदन है, तुमसे हमारी
अपने स्तर पर कुछ तो सहायता कर दो हमारी
बढ़ती उम्र, घटती जिन्दगी के बीच
आशा है, बस तुमसे हमारी
हर संभव नहीं तो कुछ संभव प्रयास करके,
आगे बढ़ा दो फाइलें हमारी
फाइलों में कहीं फंसी हुयी हैं,
रिटायरमेंट के बाद की सुविधा हमारी
अब तो धरना-प्रदर्शन, अवरोध, आंदोलन के
बीच ही घिस रही जिन्दगी हमारी
एक बार फिर तुमसे निवेदन है हमारी
सुन ले फरियाद, कर दे मुराद पूरी हमारी
हम विवश रिटायर्ड कर्मचारी

■■

ए के अर्चना
सिकंदराबाद, हैदराबाद, तेलंगाना

वो एक आंसू

वो एक आंसू कितना कुछ कह गया,
जाने-अनजाने में,
जीवन का सार समझा गया,
इसके भी अनेक रूप हैं,
वो आंसू चुपके से आंखों से,
गिरकर समझा गया।

सृष्टि की अनुपम रचना,
एक छोटा-सा जीव,
जब माँ की गोदी में मचलता हैं,
तो खुशी के आंसू,
माँ के आंचल से छलकता हैं।

प्रियतम के बिछोह में,
जब वहीं आसूं,
प्रियतमा की आंखों से बहता हैं,
हर एक आंसू उसकी,
विरह-वेदना को सहता हैं।

एक दोस्त के रूठने पर,
उसको मनाने की,
असफल कोशिश के बाद,
जब दोस्त पलट के गले लगाता है,
तब जो आसूं बहते हैं,
वो दोस्ती के पवित्र रिश्ते को समझाते हैं।

अपने किसी के बिछड़ने पर,
उसके वापिस न आने के दुख में,
जो आसूं बहते हैं,
वो जीवन के अंतिम सत्य को बताते हैं,
शरीर नश्वर हैं... ये समझाते हैं।
एक आंसू की कितनी परिभाषाएं हैं,
एक आंसू के कितने रूप हैं,
एक आंसू जो कितनी ही
कहानियों का सार हैं,
एक आंसू हर मनुष्य में छिपा ज्वार हैं,
एक आंसू खुशियों का संसार हैं,

एक आंसू दुखों से सराबोर हैं,
अब और क्या कहूं?
तेरे बारे में ए आसूं!
तू अगर सच्चे मन से बहे तो,
ईश्वर को पाने का मार्ग हैं...
ईश्वर को पाने का मार्ग हैं...।

■■

इंजीनियर
एन सी खंडेलवाल
फरीदाबाद, हरियाणा

आत्मविश्वास

कभी था जो सितारा बुलंदियों पर
आज बिन तेरे गर्दिशों के संग है,
जिंदगी हर कदम एक नई जंग है
जीत जायेंगे हम अगर तू संग है!

वक्त के साथ घटती जाए ये जिंदगी
जाने क्या-क्या खेल दिखाए ये जिंदगी,
जिंदगी न जाने कितने बदलती है रंग
कभी रंग, कभी सतरंग, कभी ये बेरंग!

तेरी हौसला-अफजाई करे तेरी परछाई
खुद तपती धूप में जो तूने स्वयं बनाई,
बहा के पसीना निखर गई तेरी जिंदगी
तेरे आत्मविश्वास पे सदके गई जिंदगी!

चींटी के आत्मविश्वास को देख जिंदगी
उसकी परिणीता से सीख ले जिंदगी
ऐसी लगन लगा बिखर जाएं रंग
बने रंगोली संवर जाए सब बेरंग!

आत्मविश्वास से कुव्वत रखती जिंदगी
हौसले में तेरे ये ताकत है जिंदगी,
वक्त के संग-संग चलने की चाहत
तुझे फौलाद बनाएगी ये जिंदगी!

तेरी लगन का करिश्मा रंग भर जाएगा
आत्म विश्वास तेरा तुझे खुशहाल बनाएगा,
कहे नानक यही मोटीवेशन है मेरा
जो जग में तेरा नाम अमर कर जायेगा।

■■

"कोई भी उस व्यक्ति से प्रेम नही करता जिससे वो डरता है।"

—अरस्तु

अनुपमा अनुश्री
भोपाल, मध्य प्रदेश

नेति-नेति...

नेति-नेति...!
एक सोता-सा बहता है
तुमसे मुझ तक
मुझसे तुम तक...
उद्दाम, उच्छृंखल
आवेग लिए
पर अ-परस सा...
प्रचंड वेग से आप्लावित
छूने उत्तरोत्तर शिखर
निर्बाध, अगाध
अक्षय स्त्रोत की ओर...
कैसा मुक्ताकाश है
खुला-खुला सांसों
का पाश हैं
बस उच्छवास है...
मन कानन में
उत्तुंग लहरों की
नहीं कोई इति!
आलोड़ित भावनाएँ
आकंठ निमज्जित
बस कहती हैं
नेति-नेति...

के. वैशाली 'देवीदिप'
नागपुर

अंजाम बुरा अब क्या होगा!

सोच जरा तु और क्या-क्या होगा?
कलियुगी अंत का क्या इरादा होगा?
सब की जिंदगी का ये सवाल होगा..,
बोलो अंजाम बुरा अब क्या होगा?

ऊंच-नीच का दुनिया में आगाज होगा,
हर नीच, ऊंचाई का सरताज होगा
दुष्टों का आसमां में परवाज होगा,
इससे अंजाम बुरा अब क्या होगा?

सच्चाई का बुराई से परिहार होगा,
हर सज्जन का दुष्ट से संहार होगा
हर तरफ से अच्छाई पे वार होगा...
इससे अंजाम बुरा अब क्या होगा?

जब संस्कृति पे विकृति का अत्याचार होगा,
नित-नित असत्य का सत्य पे वार होगा
धर्म का अधर्म से भयद संहार होगा...
इससे अंजाम बुरा अब क्या होगा?

लुटती, पिटती, चीखती लाशों का ढेर होगा,
अपनों से ही अपनों का अंजाना बैर होगा
अंधेरे में डूबा हर किसी का सवेर होगा
इससे अंजाम बुरा अब क्या होगा?

जब-जब कुसंस्कृति का फेरा होगा,
अज्ञानियों के अज्ञान का अंधेरा होगा,
तब विश्व में कलियुग घनेरा होगा...
इससे अंजाम बुरा अब क्या होगा?

■■

केशव शरण
सिकरौल, वाराणसी 221002

झुलसाती धूप का मर्म

अँधेरों के लिए
बेहद नरम-नाज़ुक धूप ही
पर्याप्त है
मध्यम गरम धूप
ऊर्जा देने में सक्षम है
फिर किसलिए
यह सूर्य का तीखा प्रकाश
जो झुलसाता है?

सोचते-सोचते मैं
पसीने से तर
गुलमोहर की छाया में पहुँचा
लाल-लाल फूलों से लदा वह
मेरा बोधिवृक्ष बन गया
जिसके तले मिला
झुलसाती धूप का मर्म
ख़ुद गुलमोहर की लालियों में
और सामने खेतों में पकती
गेहूँ की सुनहली बालियों में

■■

मोनिका साकेत

सागर (मध्य प्रदेश)

सच्ची मोहब्बत रूबरू होती है

ये महसूस कर तसल्ली देती हूँ इस दिल को,
कि जो भी लम्हें थे तेरे-मेरे,
उसमें कुछ तुझे और कुछ मुझे हुआ तो सही
थी इश्क की कोई तकरार दिल में,
उसे जीकर हमने, कुछ सहेजा तो सही।

मैं तेरे इश्क में हूँ, इसमें कोई शक नहीं,
और तू धड़कनों में थम-सा गया है कहीं।
है तुझे पाने की जुस्तजू भी कहीं ज्यादा मुझमें,
कि ये सोचकर रोक लेती हूँ खुद को,
थोड़ा तू और थोड़ा मैं, जरूरी हैं पहले वतन के लिए।

तू ही दर्द है और दर्द-ए-दवा दिल की,
ओहदा और मिल्कियत सब बेअसर हैं, तेरे।
कि सुनने की तारीफ-ए-महफिल बहुत है तेरी,
बस एक तसरीफ-ए-ज़िक्र ही असरदार है मुझपे।

तेरे पास न आने, न तुझसे दूर रहने का कोई
कारण दिखता मुझे।
हो कोई भी मंजर, तुझे कोई फर्क नहीं पड़ता,
हर पल बस तुझसे मिलने के दस्तयाब रास्ते खुले रहते हैं।

जब आप रहते हैं साथ, तो इश्क-ए-कायनात जहन में
बस उतर-सी जाती है, और पल भर की
मुलाकात ही याद-ए-बरसात होती है, तुझे ये बयां करूं कैसे,
कि सच्ची मोहब्बत तेरे रूठने के बाद ही, हमसे रूबरू होती है।

राजीव नामदेव 'राना लिधौरी'

टीकमगढ़, मध्य प्रदेश-472001

गीतिका

दिल की कटुता रार, मिटा ही देना तुम।

कोई अच्छा फूल, खिला ही देना तुम।।
करना यहाँ यकीन, वफ़ाओं पर भी तुम।

अपना हम से हाथ, मिला ही देना तुम।।
चाहूँ मैं पैग़ाम, अमन का तुम सबसे।

जग में बने मिसाल, सिला ही देना तुम।।
दुनिया करती घात, नहीं गम करना तुम।

अपना हमको नेह, पिला ही देना तुम।।
रहूँ तुम्हारे पास, चाहता राना ये।

रहने को दिल आप, किला ही देना तुम।।
'राना' कहता आज, सँवरकर रहना तुम।

जन्नत जैसा आज, जिला ही देना तुम।।

■■

"किसी को सिर्फ अपने धर्म का सम्मान और दूसरों के धर्म की निंदा नही करनी चाहिए।"

—अशोक

डॉ. ममता जैन

पुणे, महाराष्ट्र

सब सो गये हैं

जीवित है आज भी सारा वही घटनाक्रम
स्वतन्त्रता के पचहत्तर वर्ष पश्चात् भी
आज भी गांधी हाथ जोड़-जोड़कर
अछूतोद्धार और अहिंसा की भिक्षा
मांग रहे हैं बिनोवा घर-घर घूम
धरती नाप रहे हैं
राम-रहीम-ईसा शूली पर चढ़े हैं
लोकोपवाद, साम्प्रदायिकता षड्यन्त्रों का
सलीब ढो रहे हैं
यहीं से फैली भी जो भाईचारे की गंध
उसे अब यहां दुर्गन्ध आती है
वह चाहकर भी नहीं देख पा रही है इस ओर
आपने भगा दिया उसे पश्चिम की ओर
अब इधर खड़े होकर ही मुंह ताको
जो दान दधीची-कर्ण बनकर दिया था
अब उसे भिक्षुक की तरह मांगों
नहीं रख पाए गरिमा/ताक पर रख दी महिमा
रिक्त खाली शून्य निहारो
स्वतन्त्रता के केवल पचास वर्षों में ही
पांच हजार वर्षों की उजास
काली कर डाली
सारी नीति पूंजी
खाली कर डाली
इतनी शीघ्रता से लुटा दिया
चिर संचित कोष
त्याग-तपस्या से सींचा
विश्व में गूंजा जयघोष
अब पूर्व से टकरा-टकराकर लौट रहा है
हिमालय खड़ा सिर धुन रहा है
अब शायद फिर कभी कहीं कोई
नहीं गाएगा 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से'
सब सो गए हैं/स्वयं में
खो गए हैं।

■■

डॉ. राजीव डोगरा

कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश-176038

बरसों न बादल

घनघोर बादल
कहां हो?
मानव-दानव के लिए न सही
पर इस धरा के लिए सही
सबकी प्यास
बुझा दो।
तप्त ऊष्मा से
मुझरा रही जो
प्रकृति रूपसी
उसको जरा
अपने शीतल स्पर्श से
सहला दो।

जीव-जंतुओं के
सूख रहे जो कंठ
सूर्य की तप्त किरणों से
उनको जरा
अपने नभ के
शीतल जल से
तृप्त कर दो।

■■

डॉ. अखिलेश शर्मा

इन्दौर, मध्य प्रदेश-452005

नफ़रत का जहर हटा

संत-फकीर की तरह राह बता
हर दिल से नफ़रत का जहर हटा

बेगानों से भी यारी रख
हर तरफ खुशी के फूल सजा

चीर रात की अंधेरी खामोशी को
नवप्रभात का सुरमई संगीत बजा

कर उजागर वीभत्स चेहरे को
जिस पर हो घिनौना मुखौटा चढ़ा

खुद में कुछ तो खुद्दारी रख
मत हर चरणों पर शीश नवा ■■

"यदि कोई एक व्यक्ति को भी ऐसा रह गया जिसे किसी रूप में अछूत कहा जाए तो भारत को अपना सर शर्म से झुकाना पड़ेगा."

—लाल बहादुर शास्त्री

***

"जहाँ जाइये प्यार फैलाइए। जो भी आपके पास आये वह और खुश होकर लौटे।"

—मदर टेरेसा

चंद्रकला भरतिया

नागपुर, महाराष्ट्र

भूख

भूख के कई प्रकार हैं प्रचलन में।
सबके हैं तेवर निराले।
सर्व-सामान्य भूख रोटी की।
दीन-दरिद्र, गरीब त्रस्त हैं भूख से।
पेट भर, रोटी पाकर शांत हो जाते।
दिनचर्या में अपनी लग जाते।।

ऊँचे महलों में जो रहते, बड़े-बड़े उद्योग वे करते।
रुपयों की भूख सदा ही उनको रहती।
भरपूर कमाते, पर भूख रुपयों की शांत न होती।
और-और की माला जपते, बेचैन सदा ही वे रहते।।

किसी को नाम की भूख, किसी को नेता बनने की।
जुगाड़ में लगे रहते दिन-रात।
सफलता-असफलताओं में सदा झूलते रहते।
शांति नहीं जीवन में वे पाते।।

अनेक विचित्रताओं से भरी है दुनिया।
किसी को बेटे की भूख, बेटियों को गर्भ में ही मारते।
कई लोग हैं दुनिया में ऐसे, जो कभी तृप्त नहीं होते।
भूखे सदा ही वे रहते।। ■■

श्याम निर्मोही
बीकानेर,
राजस्थान-334001

असल न कहूँ

उसका मशवरा है असल न कहूँ
अतीत को आज और कल न कहूँ।

एक इंसाँ ने दूजे इंसाँ को छला
कैसे उसके छल को छल न कहूँ।

कैसे भूल जाऊँ अपनों के दर्द को
मीठी बातों को कैसे अनल न कहूँ।

पांव से सर तक है वो मगरूरी में
ऐसे कीच को कैसे दलदल न कहूँ।

क्यों गिर जाऊँ मैं अपने मेयार से
इसे कैसे ज़मीर का क़तल न कहूँ।

क्यों दोहराया जा रहा है ये ढब
आख़िर क्यूँ उदास ग़ज़ल न कहूँ।

मैंने खंगाल डाले हैं सारे दस्तावेज़
मैं कैसे मुश्किलों का हल न कहूँ।

जो भी कहूँ बस्स! सच ही कहूँ
'निर्मोही' किसी की नक़ल न कहूँ।

■■

इतनी ज़हमत तो उठाएं...

इतनी ज़हमत तो उठाएं हम
गलत को गलत कह जाएं हम।

कुछ बदले न बदले कम-से-कम
भीतर के कायर को भगाएं हम।

अल्फाज़ ए तिलिस्म है हर ओर
पढ़ लें झूठ वो आईना बनाएं हम।

ऑधियों में चराग जलाएं रखना
हो कहीं अँधेरा तो लड़ जाएं हम।

निंदा, आलोचनाओं से क्या डरना
हो कोई भी हालात डट जाएं हम।

झूठ के बवंडर से न घबराए यार
हर हाल में सत्य न झुठलाएं हम।

छोड़ो 'निर्मोही' बनावटी मुस्कान
जरा तबियत से खिलखिलाएं हम।

■■

"सच्ची दोस्ती धीमी गति से उगने वाला पौधा है, और कोई इस पदवी का हकदार बने उससे पहले उसे विपत्ति के झटको से गुजरना और उन्हें सहना होगा।"

—जार्ज वाशिंगटन

झाँसी वीरता की एक विरासत

सोनल मंजू श्री ओमर
राजकोट, गुजरात - 360007

मेरी 9 साल की भतीजी अयाना जो कि काफी उत्सुक और जिज्ञासु है, हर समय प्रश्न पूछती रहती है। एक बार उसने मुझसे पूछा कि- "मैं पूर्वजन्म में कौन थी।" कौतूहलता देख हँसी में मैंने कह दिया "पूर्वजन्म में आप झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई थी।" उसे विश्वास नहीं हुआ तो वो इस बात को घर के अन्य लोगों से पूछने लगी। उसके प्रश्नों से बचने के लिए सभी ने मेरी हाँ में हाँ मिलाते हुआ कहा- "आप पूर्वजन्म में रानी लक्ष्मीबाई थी, और इस जन्म में भी वैसे ही बहादुर और निडर बनना।" इसके बाद से वह खुद को रानी लक्ष्मीबाई समझने लगी।

कभी-कभी जब हम कानपुर से राजकोट कार से जाते है तो रास्ते में झाँसी शहर देख अयाना रानी लक्ष्मीबाई का किला जाने की ज़िद करने लगती। हर बार हम अगली बार चलेंगे कह उसे फुसला देते। इस बार जब हम कानपुर से उदयपुर के लिए निकले तो यह वाक्या फिर घटा। संयोगवश उसी समय कार का सीएनजी समाप्त होने को था। इंटरनेट पर चेक करने पर मालूम हुआ कि एक सीएनजी पम्प किले के पास ही है। इस संयोग के साथ सबने भतीजी की जिद मान ली। जाने से पहले ऑनलाइन चेक करना मुनासिफ था कि सोमवार को किला कहीं बंद तो नहीं रहता? क्योंकि, अक्सर देखा जाता है कि रविवार को अधिक पर्यटक आने की वजह से ऐसे ऐतिहासिक स्थल साफ-सफाई के लिए सोमवार को बंद रहते है।

इंटरनेट पर पता चला कि किला सातों दिन सुबह 7 बजे से शाम 6 बजे तक खुला रहता है। इस समय दोपहर के 3 बजे थे और हमारे पास पर्याप्त समय था किला घूमने के लिए। अयाना की खुशी के लिए हम सब झाँसी के किले की ओर चल पड़े। वैसे आमजन के लिए झाँसी का किला पहुंचने का मार्ग काफी सुगम है। झाँसी रेलवे जंक्शन व बस अड्डे से किले की दूरी लगभग 3 किमी है। वहाँ से किसी भी लोकल परिवहन द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है।

15 मिनट में सीएनजी पंप से हम किले पर पहुँच गए। बरसात का मौसम होने से किले के अंदर का दृश्य सुहाना लग रहा था। वैसे पर्यटकों के लिये झाँसी घूमने का अनुकूल समय सितंबर से नवंबर और फरवरी से मार्च माना गया है। क्योंकि इस समय यहाँ का मौसम घूमने के लिए सही होता है। जब भी कहीं घूमने का प्लान करे तो वहाँ के मौसम का पता जरूर कर लेना चाहिए, क्योंकि अत्यधिक गर्मी हो या अत्यधिक सर्दी दोनों दुखदाई साबित होते है खासकर जब साथ में बच्चे और बुजुर्ग हो।

वहाँ पहुँचकर हमने कार को पार्किंग स्थल पर लगाया जो कि किले के बिल्कुल सामने ही थी। फिर 25 रुपये प्रति व्यक्ति प्रवेश शुल्क टिकट लेकर हमने किले में प्रवेश किया। वैसे विदेशी पर्यटकों के लिए यह शुल्क 300 रुपये है। किले के प्रवेश मार्ग पर एक रूट मैप का बोर्ड है जिसमें किले

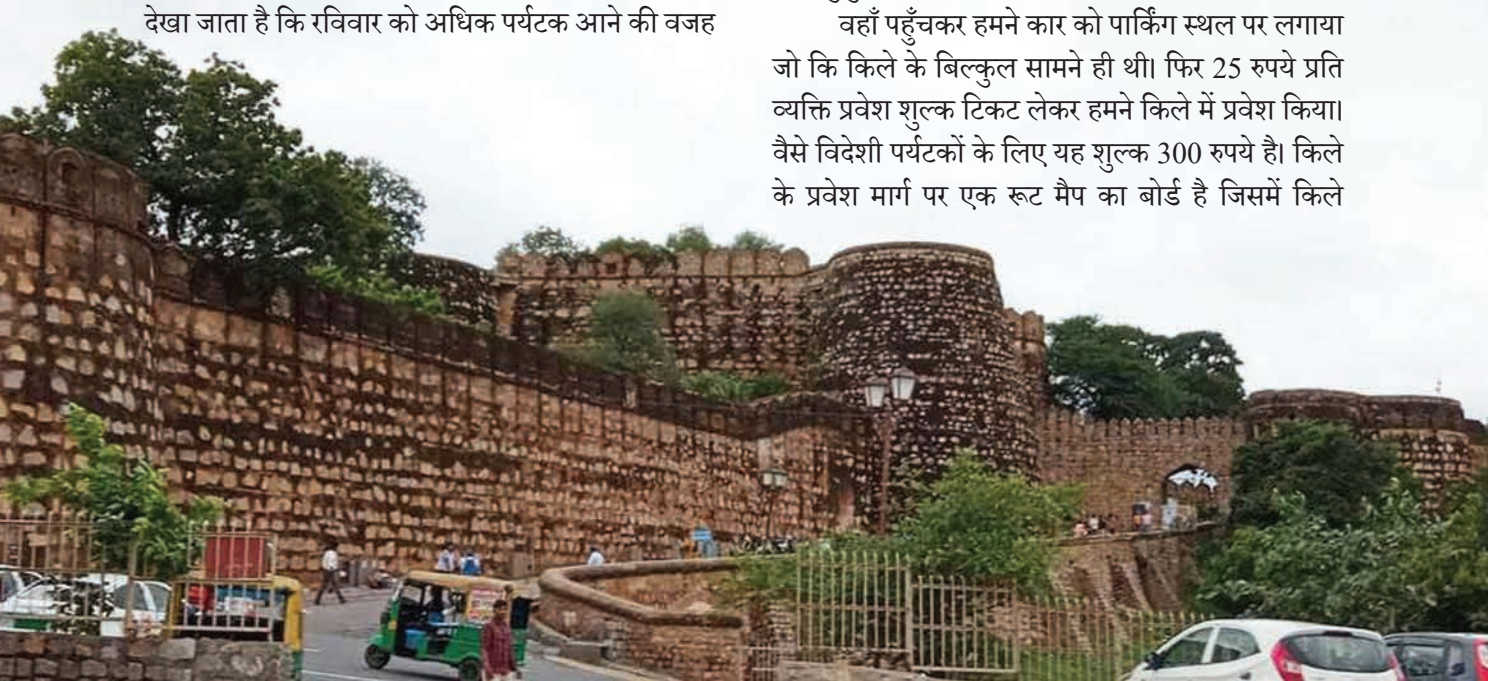

के अन्दर घूमने वाले स्थलों के नाम और उनकी लोकेशन दर्शायी गई है। इसके साथ वहां जगह-जगह पर लगे बोर्ड/पत्थरों पर किले के महत्व को बखूबी से बताया गया है। बाहरी या विदेशी पर्यटक चाहे तो वहाँ पर उपलब्ध गाइड सुविधा भी ले सकते है।

15 एकड़ के मुख्य दुर्ग संग किले का क्षेत्रफल 49 एकड़ है । इसका निर्माण वर्ष 1613 में ओरछा राज्य के शासक वीर सिंह जूदेव बुंदेला ने करवाया था। झाँसी का किला बुंदेलों के गढ़ों में से एक है। वर्ष 1728 में जब मोहम्मद खान बंगश ने महाराज छत्रसाल पर हमला किया तब पेशवा बाजीराव ने महाराज छत्रसाल की सहायता कर मुगल सेना को पराजित किया। तब आभार हेतु महाराज छत्रसाल ने उन्हें उपहार स्वरूप अपने राज्य का यह एक हिस्सा पेश किया। वर्ष 1766 से 1769 तक विश्वास राव लक्ष्मण ने झाँसी के सूबेदार के रूप में काम किया। इसके बाद रघुनाथ राव नेवलकर (द्वितीय) को झाँसी का सूबेदार नियुक्त किया गया। उन्होंने झाँसी राज्य के राजस्व में वृद्धि संग महालक्ष्मी मंदिर और रघुनाथ मंदिर का निर्माण करवाया।

राव की मृत्यु के बाद उनके पोते रामचंद्र राव ने झाँसी की सत्ता संभाली। वर्ष 1835 में उनकी मृत्यु के बाद उनके उत्तराधिकारी रघुनाथ राव (तृतीय) थे। जिनकी मृत्यु वर्ष 1838 में हो गयी। इनके अक्षम प्रकाश वर्ष ने झाँसी को बहुत ख़राब वित्तीय स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया था। इसके बाद ब्रिटिश सरकार ने गंगाधर राव को झाँसी के राजा के रूप में स्वीकार कर लिया। वर्ष 1842 में राजा गंगाधर राव की शादी कानपुर की मणिकर्णिका (मनु) से हुई जो बाद में रानी लक्ष्मी बाई के नाम से प्रसिद्ध हुई। लक्ष्मी बाई के पुत्र दामोदर राव जिनकी अपने जन्म से चार माह के उपरांत ही मृत्यु हो गई, का महाराज गंगाधर राव को बहुत सदमा लगा जिससे उनका स्वास्थ्य ख़राब रहने लगा। इन सभी परिस्थितियों को देखते हुए एवं झाँसी के उत्तराधिकारी के लिए महाराज ने अपने चचेरे भाई के बेटे आनंद राव को गोद लिया जिसका नाम उन्होंने दामोदर राव रखा, जिसकी सूचना ब्रिटिश गवर्नमेंट को एक पत्र के माध्यम से दी। नवंबर 1853 में महाराज की मृत्यु के पश्चात ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने गवर्नर-जनरल लॉर्ड डलहौजी के अधीन "डॉक्ट्रिन ऑफ़ लैप्स" कानून लागू किया जिसके मुताबिक दामोदर राव (आनंद राव) के झाँसी सिंहावर्ष के दावे को खारिज कर दिया गया और रानी लक्ष्मीबाई को 60,000 रुपये वार्षिक पेंशन देने की बात कह महल छोड़ने का आदेश दिया गया।

रानी ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार करने से मना कर दिया। फरवरी, 1857 में रानी ने एक घोषणा जारी की जिसमें उन्होंने सभी हिन्दू तथा मुसलमान भाइयों से अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने की अपील की। जिसके उपरांत मार्च-अप्रैल 1858 में कैप्टन ह्यूरोज ने किले को चारों तरफ से घेर लिया। 17 दिनों तक भीषण युद्ध हुआ, जिसमें महिलाओं ने भी भाग लिया जिन्हें रानी लक्ष्मीबाई ने प्रशिक्षित किया था। इस युद्ध में गुलाम गौस खां और सैकड़ों सिपाही मारे गए। 4 अप्रैल 1858 की मध्यरात्रि में रानी अपने दत्तक पुत्र दामोदर राव संग कुछ विश्वासपात्र सैनिकों को लेकर किले से निकल गई। अपने कुछ सैनिकों के साथ अंगेजों से भयंकर युद्ध करती हुई रानी कालपी और ग्वालियर पहुँची, जहाँ से उन्होंने अपनी स्वतंत्रता संग्राम मुहिम जारी रखी। गंभीर रूप से घायल रानी लड़ते-लड़ते अन्ततः 18 जून 1858 को वीरगति को प्राप्त हो गई।

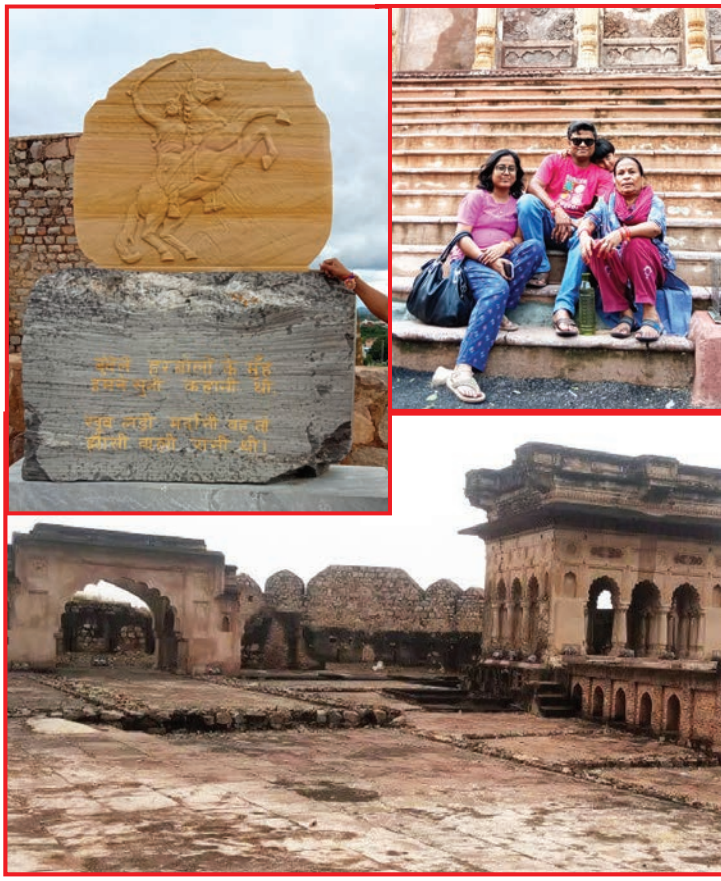

निर्माण की दृष्टि से ये किला तीन भाग बारादरी, शंकरगढ़ और पंचमहल में विभाजित है। बारादरी वाले हिस्से में सबसे पहले बिजली तोप देखने को मिली। इस तोप का आकार काफी बड़ा है। गुलाम गौस खां साहब कड़क बिजली तोप को चलाते थे इस तोप की आवाज बहुत तेज बिजली जैसी थी तो इसीलिए इसका नाम बिजली तोप पड़ा। इस तोप पर आँख, भौं की कलाकृतियाँ भी अंकित हैं। बिजली तोप से थोड़ा आगे आने पर गणेश भगवान का एक मंदिर है। कहते है कि रानी लक्ष्मीबाई प्रतिदिन यहाँ पूजा करने आती थी। मन्दिर के पास से जो सीढियां ऊपर गई हैं वहाँ एक और तोप है, जिसका नाम भवानी शंकर तोप है।

थोड़ा और आगे बढ़ने पर बारादरी है, जिसका निर्माण राजा गंगाधर राव ने अपने भाई के लिये वर्ष 1838 से 1858 के मध्य करवाया था, यह बारादरी एक चौकोर से चबूतरे पर बनाई गई है। इसके छत को एक छोटे से जलाशय के रूप में बनवाया गया था, जिससे बारादरी में फौव्वारे चलते थे। सोचिए, कितना अद्भुत नजारा लगता होगा एक खुला हुआ बरामद और उसके ऊपर फौव्वारे वाला जलाशय!

किले के दूसरे हिस्से पंचमहल (पंच तलीय महल) का निर्माण राजा बीरसिंह जूदेव ने करवाया था। इसके प्रथम तल का प्रयोग रानी लक्ष्मीबाई ठहरने और भूतल का प्रयोग सभा कक्ष के रूप में करती थी। समय के आभाव में हम सिर्फ पहला तल ही घूम पाए। पंचमहल से आगे बढ़ने पर पहले भैरव मंदिर फिर जम्पिंग स्पॉट है, ये वही जगह है जहाँ से रानी लक्ष्मीबाई अपने बेटे को पीठ पर बाँधकर घोड़े के साथ किले की प्राचीर से कूद गई थी। यहाँ से नीचे देखने पर पता चलता है कि यह जमीन से कई फिट ऊँचाई पर है। उनकी स्मृति में इसी जगह एक शिला लगाई गई है जिस पर रानी की आकृति बनी है और नीचे लिखा है "बुंदेले हरबोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी थी। खूब लड़ी मर्दानी वह तो, झाँसी वाली रानी थी।" यहाँ से थोड़ा ऊपर चलने पर किले का सबसे उच्चतम बिंदु है, जहाँ पर हमारे देश का तिरंगा खुले आसमान में लहराता रहता है। इस जगह से पूरे झाँसी शहर को देखा जा सकता है।

किले के तीसरे हिस्से शंकरगढ़ में शिव जी का सुंदर मंदिर है। इस मंदिर का शिवलिंग ग्रेफाइट का है। इस हिस्से में गुलाम गौस खां साहब की कब्र, जेल, कालकोठरी, फाँसी घर इत्यादि भी है। वहाँ पहुँचकर हमें पता चला कि यहाँ शाम को 7 बजे एक लाइट एंड साउंड शो के माध्यम से रानी के जीवन के विषय में बताया जाता है।

किले के बायीं तरफ 100-150 मी. चलने पर रानी महल है जिसे 19वीं शताब्दी में निर्मित किया गया था और वर्तमान में यहाँ एक पुरातात्विक संग्रहालय है। इसके अंदर जाने का शुल्क 5 रुपये प्रति व्यक्ति है। यहाँ हथियारों, टेराकोटा, मूर्तियों, परिधानों, काँस्य, चाँदी, सोने और तांबे के सिक्कों इत्यादि की प्रदर्शनी है। जो चंदेल वंश के राजाओं के जीवन और समय को, बुंदेलखंड क्षेत्र के इतिहास और विरासत को सजीवता से प्रस्तुत करती है। यहाँ पर वर्ष 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में ब्रिटिश सेना द्वारा उपयोग किए गए हथियारों, शस्त्रों और गोला-बारूद का प्रदर्शन भी किया गया है।

इस ऐतिहासिक स्थल को घूमने में लगा 3-4 घंटे का समय अयाना के चेहरे पर ढेर सारी खुशियाँ तो लाया, साथ ही हम सभी परिजन रानी लक्ष्मीबाई के अदम्य साहस का अनुभव करते हुए देश की आजादी में वीरों और वीरांगनाओं के महत्वपूर्ण योगदान से रूबरू हुए। ■■

Mesmerizing Mewa in the Laps of Garhwal – 2024

RANA PRATAP BAJAJ
ADITI SETHI

Gorkhas attacked Garhwal in 1803 ending Panwar Dynasty and captured a good part of Garhwal. Shahs continued to occupy some parts. Like Pokhara in Garhwal, there is Pokhara in Nepal too. There was resistance to Gorkha rule as it had imposed heavy taxation. There is a hall in the area around 200' in length through which from one side Gorkhas used to attack and from the other side local Garhwalis used to counter-attack. Gorkhas used to mutilate faces of those Garhwalis, who were captured. Ultimately, the British entered into Treaty of Sugali in 1816 ending Gorkha dominance and Pauri and Tehri Garhwals came into being. We were able to see that Hall.

Time and again my legendary friend, 94-year young K.P. Sharma had been literally coaxing me to visit his ancestral village, Mewa in Pauri Garhwal. How could I ignore his command! At 94, he is fitter than I am and, makes it a point to cover 6,000 steps daily without fail. He has been a Seaman, Mountaineer and Promotor of Tourism focusing of late on Uttarakhand and that too remote areas.

Incidentally, Uttarakhand has 13 Districts and 95 Blocks. Mewa (4000') falls in Pokhra Block of Pauri Garhwal. Pauri Garhwal has in all 15 Blocks – Bironkhal, Dwarikhal, Duggada. Ekeshwar, Jakhali, Pareli, Kaljikhal, Pabo, Pokhra, Jahrikhal, Khirsa, Kot, Rikhnikhal, Ukhimath and Yamkeshwar.

After much discussion and coordinating dates with availability of Jagri ji (a highlight of the trip, as he was supposedly blessed with powers to invoke Gods/ Goddesses) it was decided that I will start from my place in Faridabad on May 4 and take rest that afternoon in Dehradun and the next day we both will start latest by 0630 hours after I pick up Sharma ji from his house on Hardwar Road. As planned, I reached his place on 5th May around the

appointed time and we proceeded towards our destination of the day. I had equipped myself with sandwiches and lunch besides water and soft drinks.

After reaching Hardwar, we crossed the bridge on River Ganges and came on Najibabad Road in District Bijnor. The road construction was going on and there were both rough and smooth patches. After covering close to 10 Kms we turned left on way to Kotdwar. On left side Ganges Canal was located and had virtually no water. There were Sal and other trees, like Popular, Amaltas, Gulmohar, Pakad and Bamboo. On the banks of canal cane-type grass – Bhabhad was in abundance. It is used to makes thin and thin ropes (Ban) for Charpoys. In distance we could see mostly fields being re-ploughed after harvesting wheat. We did find a few fields of sugar cane too. At places jungle or woods were dense. We also found trees of Neem, Silver Oak, Eucalyptus and some mango trees but with hardly any fruit. Not only Monkeys were seen but we also came across signboards declaring Elephants Assembly/Crossing Area. After miles we would come across huts and houses pronouncing human habitation. Of course, cows and goats were seen strolling on road, which was hardly smooth and patchy. The dust had started rising. Once a while we would come across tea jaunts, restaurants or eateries. In early last century a dreaded Dacoit, namely, Sultana had established his hold in this area. Dreaded he was by rich and for the poor he was like Robinhood, thee benefactor. The canal road was straight but at places one was supposed to come to its right or left. There were some other rainy rivers and water bodies. From Uttarakhand we had reached in Uttar Pradesh. After crossing that we came on the border of Uttarakhand again at the town of Kotdwar. It also boasts of a Railway Station and University.

In Kotdwar we bought fresh vegetables, as many vegetables are not available in the Village Mewa. We also bought local sweet, known as Bal Mithai, which is liked by village people. As advised, I had also carried with me Ball Pens, Drawing and Painting Material for village school children. From Kotdwar we came to Gumkhal and saw hundreds of Solar Panels on way spread for miles on mountain slopes. We took our brunch with freshly made nice tea at one of the wayside restaurants. From Kotdwar, real hill-track had started and was naturally winding. Most of the time roads were tarmac and in between speed breakers used to come more for precaution than to impede speed. At 1445 we could reach Village Mewa after crossing Satpuli and Sangla Koti and just before Pokhara taking higher hilly track, which was not tarmac at places. However, we could see workers doing their job for this. Vegetation had changed. We could see a lot of Bamboo, Shrubs, Berries, Glowing Red Flowers of Ram Bans. We had to leave our car almost a Km before the village as it was no longer motorable and one was supposed to cover this distance on foot through a curvaceous route passing through open spaces in between houses. At the entrance of the village, we saw a sign-board proclaiming erection of side safety railing up to the village having been made out of Development Funds of MLA of Chopata Khal, Shri Satpal Maharaj, who is presently Tourism Minister in Uttarakhand and it so happens that I had met him in Spain, when he was MOS Railways in GOI. The houses have also been provided with Solar Panels. Water to the village has been

channeled from hill streams through pipes though pipes are not in individual houses and house ladies carry in brass or copper vessels on their head – arduous job.

While my bags were brought to the village by our Driver, KP Sharma ji brought his bag on his bag. I practically halted at various places and somehow managed to reach the house of daughter-in-law of KP Sharma, namely, Kavita Manjera. We were comfortably lodged in separate rooms and served with freshly made Chachh made from freshly-churned yogurt laced with fresh mint and herbs. We ourselves excused from meal. We dozed of on our beds. The rooms had as thick as a yard walls and it was a cozy and pleasant place. We hardly felt need of fan. Of course, light was there and we were cautioned and observed that the entrance and ceilings were low, the latter did not pose any problem for me.

Upon reaching Village Mewa with Friend KP Sharma

Around 5 in the evening we were served freshly made tea with savories. We sat in the compound on folding chairs and chatted. I also got my first lesson on local vegetation, flora and fauna besides was told that monkeys have been causing heavy damage to crops and fruits. I learned that leaves and tender sticks of 'Bhimal' tree are used to feed cattle and somewhat thicker sticks are soaked in water for a couple of weeks and the sticks' fibre is used to make twine, which in turn is used to make cushion for vessels on head. The sticky part can be used to wash hair matching any good shampoo. During festival dried sticks are also burnt from one side and given a swirl to match any Phuljhari and children feel happy. It is called Bhailo and proves much fun. Within weeks fresh leaves and branches start coming again. The growth is faster during rainy season.

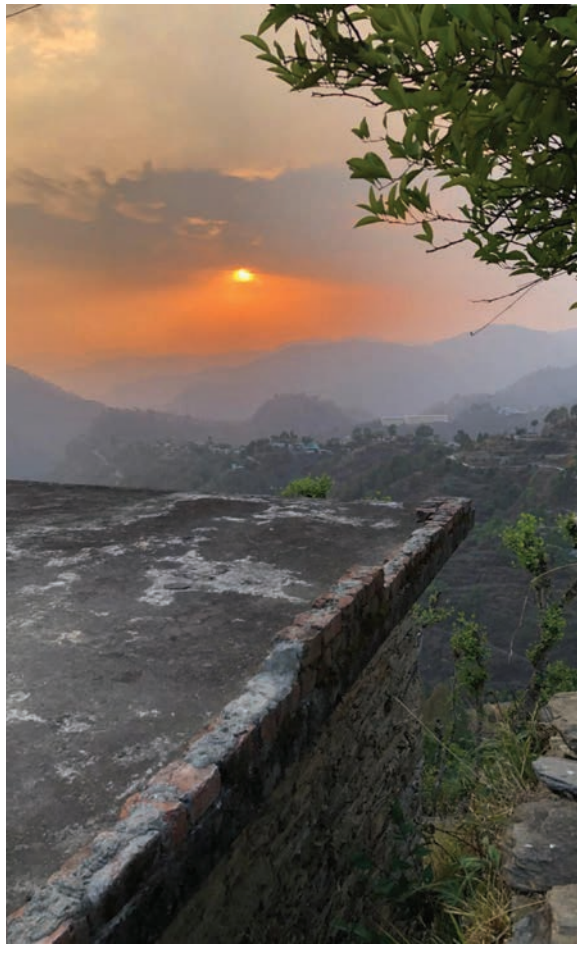

Sunset at Village Mewa, Garwhal

Khadkiya is another tree used for Cattle Feed. Among other trees in the area, some are commonly known as Fig, Walnut, Malta (Limbu), Pears, Pomegranate, etc. There are quite a few berries which grow on shrubs and most common is Kafal, with sweet and savory taste matches Falsa, common in Punjab, Gujarat and Himachal. Apricot also is not uncommon. A thorny tree known as Timru is used for cleaning/brushing teeth. It is believed that it repels snake and its sticks are also used for religious purposes. Some carry such sticks as walking stick. Earlier, people of Rudy Caste were famous for making wood craft and artefacts from Bamboo. Kandali or Bichoo Buti is very irritating if it touches tender skin but local people enjoy during winters its stew and soup and find it nourishing. Other local fruits, mostly growing on shrubs are Kingadu, Risalu (I tried it as also Kafal), Krishalu, Jhingharu, Timla, Mehu, etc. Kachnar as bud makes very good vegetable and in fact used in some other parts of India, J&K, Himachal Pradesh, Punjab, etc. Incidentally, Kafal I had tried earlier in Nainital in childhood. Kafal is delicious and highly digestive and indeed one can swallow its seeds, which serve as roughage. While sitting in the Verandah, I noticed, Cows, Dogs, Goat and Monkeys among animals. I was told that Bear, Tendua, Porcupine, Boar, Jackal, Fox and another Round Jumping Creature are common in the jungle. Rodents, Monekys, Rooster, Langur (called Guni in Garhwali), Peacock, Squirrel and rabbits are also found in abundance. Among birds, the most common are Garud (Gidh), Goraya, Crow, Pigeon and Sparrow.

A bowl full of Kafal fruit

In nearby streams/rivers in childhood, Sharma ji told me that he used to go with other boys to catch fish. In those days, one could walk traverse for miles and of course going to schools, on uphill or even crossing river was a routine. When we were talking good breeze was blowing. Sky was clear and blue and we watched setting of sun from our compound. After a while far of lights started giving glowing necklace shape. Inside our rooms we were served fresh food, consisting of vegetables and lentils, Salad and of course freshly made mint chutney which contained local linseeds and on side cup full of fresh butter was also served. Of course, before dinner we enjoyed company of Sharma ji's nephew Chander Mohan Manjera, a local trader over drinks. His other nephew, Bhagwati Prasad Manjera, Head Master in local school preferred to retire for early dinner with a promise to give us company on some other day. In the meantime, I had given sweets and other gifts to various people, as suggested by Sharma ji. The house-lady before starting preparing milk had taken feed for cows and mulched them and came out with fresh milk on her head.

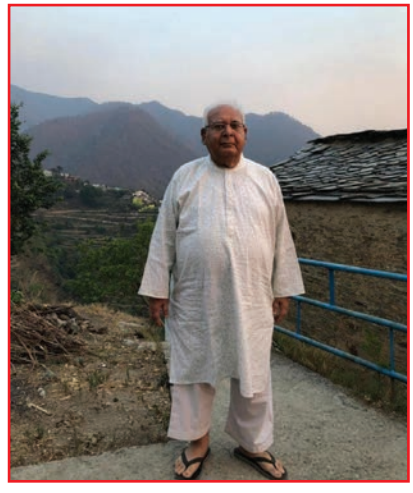

R P Bajaj (self) at Village Mewa

Luckily, there is English Toilet which served persons like me, who find it difficult to sit on traditional seat. The night passed peacefully and we got up only in the morning. As per his habit, Sharma ji went for a morning walk. By the time he returned, I was also ready for morning tea, it was enjoyable. We strolled around watching sunrise and breathing fresh and clean air. After a while we took our baths and once again were ready to devour freshly made breakfast of Gobhi Parantha, Raita, Chutney and Butter and later on tea. Taking breakfast under open sky breezy verandah had real spell. Believe me, mineral water coming from hills had increased our appetite and we used to enjoy every meal and Kavita too used to serve with insistence and even chide that we were frugal eater. We maintained the routine of eating and taking naps and wake up for another meal. Kavita used to change menu and saw to it that it was freshly cooked and different each time.

Happy meal

Kavita, Lady of the house brings milk after mulching.

7th May was the bid day, as in the evening we were supposed to watch Jagriji and his team performing music, chanting and singing invoking Gods/Goddesses. It was supposed to start around 8 PM. After sumptuous Dinner, we assembled in a room which was properly cleaned and holy Ganges Water had been sprinkled. However, before entering the room, we met Jagri ji and offered him sweets and requested him to bestow his kindness by invoking Gods/Goddesses to bless us. On one side cushions were placed for Jagriji and his team, left and right sides were for the devotees. We sat on side and as an exception we were seated on chairs, considering our age and required comfort. In the Centre there was a cushion made of blanket. It too was shown burning essence and rice were sprinkled on it. Burning essence in one handheld vessel was taken around. On one side the statue of a Goddess was established and lighted Diya was kept in front along with some flowers and other offerings. At the appointed time, Jagriji (Shri Jagjit Chander Manjera – (M) 8476901324) came inside with his team (including his son, Shri Navin Chander Manjera and Shri Deepak Kmar Manjera and took their seats and instruments, including one Plate of Metal (Kansa/Bronze) and before they started chanting, Sharmaji was asked to apply vermillion on their foreheads with rice and also to garland them. I was asked to pay just Rs. 10/- to each of them and to invite them to commence the proceedings. No one sat on centre-cushion.

The music started and the chants were taken from time to time from low pitch to high pitch. After a while, an old lady started shaking and tossing and lo! Sat on that cushion, she was shown burning fire and after a while holy water of Ganges was sprinkled on her and she calmed down and returned to her seat. The music and chanting went for quite a while, then one of the men, Chander Mohan Manjera also started trembling and tossing and he also came on the cushion. After a while he jumped and went out of the room speedily after essence was brought near him. After a few minutes he returned saying some thieves have come in the neighborhoods. Everyone got alarmed and came out of the room. Later on, it was learned that the thieves had indeed broken in one of the locked houses and had looted some old vessels. Naturally, the Jagran had to be abandoned. However, it did provide some insight of religious belief. It would not be out of place to mention that traditional professions, like Jagriji remain quite busy round the year and in our case too, while initial request was made in March, we could get date only on May 7 after two months.

Musical and Chanting night by Jagri Ji and team.

Night was spent peacefully. The following day, after passing the day almost like earlier days, the evening was enjoyed in taking some freshly cooked chicken over drinks. The chicken was of local variety and chewable and of course tasty. Drinks, which were avoided on earlier day for Jagriji's performance, was taken including by the Headmaster. He had also cooked the chicken, made some snacks and also Chapatis. It was time well spent gossiping and listening to Garhwali/Kuamaoni songs, like "Bedu Pako baramasa, Kafal Pako Cheta, Meri Chaila..."; "Teri-Meri Batan… Ke Junehli Ratan..." and a couple of more. The songs were melodious and enchanting. Without saying that it was another highlight of the visit would be like being completely ungrateful. In the evening, Chander Mohan Manjera had also brought for us freshly made Arsa sweet. It involves tedious job of thumping rice and adding jaggery and making them like Mal Pua. These are generally given to relations instead of sweets and lasts for a fortnight.

How enjoyably we passed three nights are beyond description. While Lady of the House, spent her time toiling hard, we made merry of every moment. On 8th May, we departed early at 0730 hrs after finishing morning chores and having refreshing tea and snacks and packed lunch. Kavita also gave me some local Til and on my demand, I also got some bark of Walnut and a Plant of Mint and of course a big ripe Pumpkin. Bhagwati ji arranged a Timru stick for me and Chander Mohan Manjera brought for me Kroshu, which is kind of Fire Stone (Splint) and when fiercely struck of iron produces sparks and was supposedly used earlier to ignite fire. I carried all these, as proud possession and bid farewell with a kind of longing for affection showered and tremendous time spent in Heaven on Earth, where simple and honest people with inner warmth dwell.

Humble stay & inmates at the house at Village Mewa

On way, we stopped at Gumkhal to purchase some local produces, like Garlic, Pulses, Rice and Flour especially for Fasting Days and Squash of Buransh, Malta and Litchi. How could I forget Bal Mithai from Kotdwar! Near Hardwar, our driver, Arun expressed desire to have dip in the Ganges, we graciously allowed him. Luckily, we could find a place where vehicle could be parked and he could have his dip and also procure some Prasad and Holy Water. After reaching Dehradun, I after dropping Sharmaji at his place, and delivering some articles given by Kavita for her children, arrived at sister place. Since, it was around 4 PM, I felt that I should leave after taking tea and sharing some goodies with sister. I thought that it would not only save a day but also travel during heat time. On way from Dehradun to Faridabad, I also took Shakkar (raw sugar) and Mangoes. We reached home around 1030 p.m. Next day, I shared some goodies and memories of travel with my daughter, who resides in the neighbourhood. India has so much to offer by way of tourism and if one is not for Star-value and open to home stay, I think it is far more economical, original, hassle-free and above all turns out to be a learning experience not available otherwise. I feel it is sane and simple and practical advice.

Jagar ji gets rewarded handsomely when viewed from rural background for his performance. I too was suggested that I should pay Rs, 1000/- to Jagar ji, which I willingly did.

As regards, Kavita, apart from taking vegetables, sweets and some other goodies, I compensated her in cash by paying Rs. 3000/- for the three nights. To my mind, it was very small amount considering that she had to toil bring water, feed cattle and mulch and also serve us fresh food.

The four types of squashes of hills picked were: Awanla, Malta, Litchi and Buransh, which have been shared and being enjoyed too and are really refreshing.

A few boys and girls, who had participated in playing different parts in local Ram Leela too were not neglected and rewarded for their enthusiasm.

Also, we also saw some good wood craft on some buildings. Rudy, one of the backward classes, people were known for their skills. ■■

अरे भाई आप कहां से अवतरित हो गए...?

सुनील जैन 'राही'
सागर (मध्य प्रदेश)

अशिष्टता से आदमी जल्दी पहचाना जाता है। जब तक मूर्खता की बात न हो हंसी नहीं आती। जैसे ही हमने दार्जिलिंग भूमि पर कदम रखा तेजी से एक महिला मय ड्रेस सामने खड़ी हो गई। हमने विनम्र शब्दों में कहा- आप आतंकवादी नहीं हैं, खूंखार भी नहीं हैं, आपकी शक्ल भी आसुरी नहीं है, ना ही आप किसी न्यायिक जांच संस्था से ताल्लुक रखती हैं? आपके सुसज्जित कपड़ों से शालीनता की उम्मीद तो हमें कतई नहीं हैं, ना हमने ऐसा कोई कृत्य किया है, जिससे आपको इस रौद्र रूप में प्रकट होना पड़े। पूरी सजगता, सरलता के साथ सड़क के किनारे चल रहे हैं।

उनकी मुद्रा मौन देख हम सहम गए। अपनी भाषा में और शहद घोला, कुछ गलती तो की नहीं, फिर भी माफी मांग सकते हैं। मौन यथावत धारण था, मौन खोलने के लिए नाक को नत कर लिया, कर जोड़ लिए, नव सांसद भूमिका धारण कर ली, लेकिन ये क्या न सटा-सट, न चटाक-चटाक। मधुर वाणी का प्रवाह कर्ण पट पर लहराया- श्रीमान जी फुटपाथ पर चलिए, सड़क दोपायों के लिए वर्जित है। चलित झोला घसीटते हुए गंतव्य को प्रस्थान करिए, अन्यथा काष्ठ दण्ड का उपयोग करना अनिवार्य हो जाएगा।

हमें अपनी निकृष्ट बुद्धि पर तरस आया, कम-से-कम तो देख लिया होता? फुटपाथ खाली हैं। पानी पुरी, पुराने कपड़े दुकान, चाट का ठेला और-तो-और कोई आपको यह कहकर मजबूर करने वाला टांग पसारे नहीं बैठा- दे दाता के नाम...

अपने चलित झोले के साथ फुटपाथ पर चढ़ गए। जब इतनी सुन्दर महिलाएं छोटे कपड़ों में भी बड़ी शालीनता से दिखीं तो बरबस दिल को दिल्ली की याद आते ही दिल दहल गया, जबकि प्रचण्ड दहल भी यहां से ज्यादा दूर नहीं हैं। ताज्जुब है, कोई शरारत नहीं, कोई फिकरा नहीं, गाली तो शायद इनको कॉलेज में भी नहीं सिखाई गई होगी? चेहरे पर मंद मुस्कान, जरा-सा बांक आ जाए तो मुखारविंद से सॉरी टपक पड़ती है।

भला बचपन के शौक कैसे भुलाया जा सकता है। पान की दूकान देख मुंह में ऊंची जबान में तुतलाहट आना लाजमी था। कुछ मिनट गुजरे होंगे, जुगाली करते हुए, एक मिसाइल सड़क पर दाग दी। सारी सराफ़त सड़क पर बिखर पड़ी। दायें-बायें देख नीचे जाती सीढ़ियों पर बढ़ लिए। कहीं काष्ठ दण्डधारणी न आ जाए? वैसे हमारी करतूत पर फुहारों ने पानी फेर दिया।

हम एक छोटे से होटल के रिसेप्शन पर खड़े थे। उसने पूछा कमरा लोगे क्या? हमने भी कह दिया- कमरा खा भी सकते हैं क्या? उसने कहा- जा के कमरा देख लो। हमने कह दिया- क्यों उसमें सुरखाब के पर लगें हैं?

जितना गुड़ था उससे ज्यादा मीठा निकला। कमरे की खिड़की सब्जी मंडी की तरफ खुलती थी। जब उससे नजारा देखा तो फिर दिल्ली की याद में डूब गए। जमुना की गंदगी, कूड़े के पहाड़, बिखरी विष्ठा, और नुची मुर्गियों के पंख बेबस आदमीयत चिल्ला-चिल्ला कर बयान दे रही थी। प्रकाश वर्ष मौन था, अदब के साथ।

मैं दार्जिलिंग में दिल्ली को ओढ़कर सो गया।

■■

जरा आँख में भर दो पानी

मीना अरोरा | हल्द्वानी, उत्तराखंड

चुनाव सिर पर थे। अचानक निर्वाचन आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त चुनाव स्टार प्रचारक नेताजी की आंखों का पानी खत्म हो गया। ऐसी मनहूस खबर सुनकर पूरी पार्टी में शोक की लहर दौड़ गई।

प्रत्येक पार्टी कार्यकर्ता सोचने लगा कि यदि चुनाव प्रचार के समय प्रचारक नेताजी की आंखों से दो बूंद आंसू नहीं टपके तो पार्टी का जीत पाना नामुमकिन हो जाएगा। पार्टी हाईकमान ने कार्यकर्ताओं में घोषणा की जो प्रचारक नेताजी को रुलाएगा, वह अगली बार पार्टी से टिकट पाएगा।

ऐसा नहीं की प्रचारक नेताजी की आंखों का पानी सूखने से सिर्फ पार्टी हाईकमान परेशान थे ,स्वयं प्रचारक महोदय भी बहुत दुखी थे, उन्हें लग रहा था कि यदि वह चुनाव प्रचार करते समय ठीक से आंसू नहीं टपका पाए... तो हो सकता है उनको अपनी ही तेरहवीं पर आंसू बहाने का भरपूर मौका पार्टी द्वारा प्रदान किया जाए।

'ए मेरे वतन के लोगों जरा आंख में भर लो पानी... जैसे गीत को दिन-रात सुनने के बाद भी जब उनकी आंखों से जलस्रोता नहीं फूटा तो 'सब कुछ गवाकर होश में आए तो क्या किया...

मीना अरोरा
लेखिका

जैसे गीतों को सुन-सुन करके प्रचारक महोदय ने अपने मन में खौफ और दहशत पैदा करने की भरपूर चेष्टा की... पर ढीठ आंसू आंखों में ना आए। वैसे तो प्रचारक नेताजी ने अपने ऊंचे पद पर रहते हुए अच्छे-अच्छों को खूब आंखें दिखाईं पर पार्टी स्टार प्रचारक बनने के बाद आंखों को सदैव नरम तथा लिजलिजा ही रखा। पर इन बीते पौने पांच सालों में उनके नाम की तेज बेशरम हवाओं ने उनकी आंखों के लिजलिजेपन को कब सुखा दिया पता ही नहीं चला।

अब उसी लिजलिजेपन को पुनः प्राप्त करने को वह आंखें दिखाने 'आई स्पेशलिस्ट' के पास भी जा पहुंचे। प्रचारक नेताजी को लग रहा था कि उन्हें शायद नई-नवेली मोबाइल फोन से पैदा हुई बीमारी 'ड्राई कॉम' ने जकड़ लिया है... पर डॉक्टर ने ड्राई कॉम के भय से नेताजी के दिल-दिमाग को मुक्ति प्रदान करते हुए कहा—'पानी का घड़ा तो आपके भीतर का सूख गया है... सो उसे भरने का कोई अन्य उपाय खोजिए।'

नेताजी ने क्लीनिक से लौटकर पार्टी के गुर्गों (कार्यकर्ताओं) को डॉक्टर का फरमान सुना दिया।

पार्टी के लिए मर-मिटने को तैयार जुझारू कार्यकर्ताओं ने डॉक्टर का फरमान हाथों-हाथ लेते हुए स्टार प्रचारक नेताजी की आंखों का पानी वापस लाने की मुहिम छेड़ दी। गुर्गों ने सर्वप्रथम नेताजी के मोहल्ले वालों के सिर फोड़े। उनके पड़ोसियों को उठा-पटककर कूटा-पीटा। कार्यकर्ताओं को ऐसा करते समय लग रहा था शायद अपने पड़ोसियों का दुख देखकर नेताजी की आंखों का पानी लौट आये। परंतु पड़ोसियों के फटे सिर देखकर प्रचारक महोदय मंद-मंद मुस्कुराने लगे।

पिटने से पहले जो पड़ोसी प्रचारक महोदय को देखकर सिर नहीं झुकाते थे, दुआ-सलाम नहीं करते थे,

वे अब प्रचारक महोदय को अपना अभिवादन पहुंचाने उनके द्वार तक आने लगे।

पहला ही शो फ्लॉप देखकर गुर्गों का खून खौल गया। उन्होंने शहर में बसी गरीबों की बस्तियों में आग लगा दी, क्योंकि पिछले चुनाव में प्रचारक नेताजी जब उन बस्तियों में गए थे तो उन्होंने उन गरीबों से कहा था— 'तुम्हें इस हाल में देखकर मेरे आंसू निकल आए हैं।' और प्रचारक नेताजी वहां गरीबों की बस्ती में फूट-फूटकर आंसू बहाकर आए थे। बस्ती में आग लगाकर गुर्गों ने सोचा- हो सकता है उनकी इस हरकत से नेताजी नाराज होकर भले ही उन्हें फटकारेंगे, पर गरीबों का दुख उनकी आंखों में जल की बाढ़ अवश्य ही ले आएगा। और जिस गंगा की तलाश नेताजी को है वह स्वयं उनके नेत्रों से स्फुटित हो उनके गाल सहलायेगी।

लेकिन उनका यह दांव उलटा पड़ा... दरअसल नेताजी कब से सोच रहे थे यदि गरीबों की बस्ती खाली हो जाए तो उस स्थान पर एक फाइव स्टार होटल बनवाया जा सकता है।

बस्ती के जलने की खबर ने नेताजी की आंखों की चमक बढ़ा दी। उनकी आंखें जोहरी की भांति चमक उठीं। उन्होंने अपने गुर्गों को इनाम ने एक-एक नई चमचमाती गाड़ी भेज डाली। गुर्गे नयी गाड़ी पाकर बहुत दुखी हुए। उन्हें नेताजी की आंखों में पानी चाहिए था ना की गाड़ी । उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्या करें जो प्रचारक नेताजी रो पड़ें ।

अब गुर्गों ने जोश में आकर पूरे शहर में जमकर उत्पात मचाया । नारी चीर हरण, शोषण और बलात्कार जैसी शर्मसार कर देने वाली घिनौनी घटनाओं तक को अंजाम दे डाला परंतु प्रचारक नेताजी की आंखों का सूनापन बरकरार रहा। अन्ततः गुर्गों ने प्रचारक नेताजी सहित ईश्वर के दरबार में—जरा आँख में भर दो पानी 'की अर्जी लगा दी। ईश्वर ने भी धरा के स्वयंभू की आँखों में पानी भरने में कोई रुचि नहीं दिखाई ।

थक-हारकर गुर्गों ने प्रचारक नेताजी के ही चरण पकड़ लिए और कहा-"अब हम इससे अधिक न तो प्रभु से प्रार्थना कर सकते हैं और न ही अमानवीय यातनाएं जनता को दे सकते।

बस अब हाईकमान के हाथ में ही आपकी आंखों के पानी को लौटा लाना शेष रह गया है ।"

गुर्गों ने जाकर अपनी नाकामयाबी की हाईकमान के समक्ष गुहार लगा दी ।

पार्टी हाईकमान ने मोर्चा संभालते हुए कहा—"जो प्रचारक नेता चुनाव प्रचार के दौरान जनता के लिए अपनी आंखों से दो बूंद पानी ना निकाल पाए वह प्रचारक क्या खाक लोगों के दिलों को जीत पाएगा और जो दिल नहीं जीत पाएगा वह पार्टी को क्या ही जीत दिलवा पाएगा। इसलिए इस बार स्टार प्रचारक नेताजी के प्रचार का अवसर कैंसिल किया जाता है तथा उन्हें पार्टी से निष्कासित किया जाता है।"

पार्टी हाईकमान की बात सुनकर गुर्गे सकते में आ गए। उन्होंने भागकर यह अशुभ समाचार प्रचारक नेताजी को सुनाया। ऐसा अशुभ समाचार सुनकर प्रचारक महोदय मूर्छित होकर गिर पड़े। गुर्गों ने उनके चेहरे पर पानी के छींटे मारकर उन्हें होश में लाने का प्रयास किया।... और फिर अचानक चमत्कार हुआ... छींटें मारे गये पानी ने आंखों के पानी को अपनी ओर आकर्षित किया... प्रचारक महोदय होश में आ गये और फिर फूट-फूट कर रोए। उन्हें रोता देख कुछ गुर्गे खुशी से नाच उठे... कुछ झूम-झूम कर गाने लगे... और कुछ हाई कमान को सूचना देने को दौड़ पड़े...।

■■

कविता के बहाने

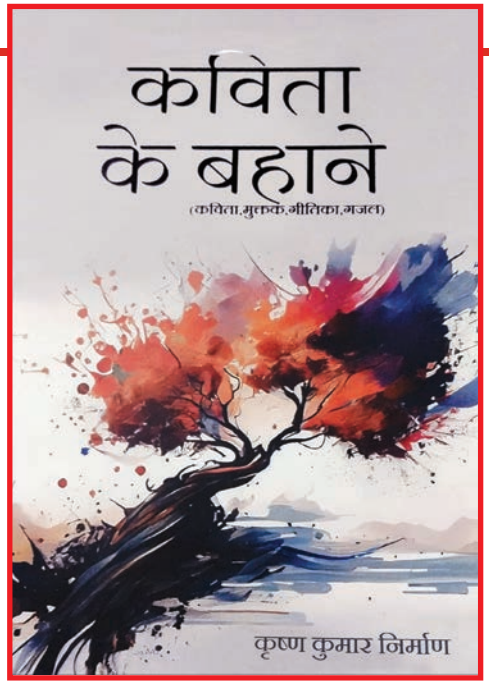

कविता के बहाने (काव्य-संग्रह), कवि-**कृष्ण कुमार** निर्माण, प्रकाशक-**काव्या पब्लिकेशन**, भोपाल, पृष्ठ-**102**, मूल्य-**299 रुपये**

समीक्षक - महेंद्र ज्वाला
सोनीपत, हरियाणा

काव्य-संग्रह के माध्यम से रचनाकार ने सामाजिक समस्याओं पर न केवल गहरी चोट की है बल्कि उनका समाधान भी सुझाया है। इस काव्य-संग्रह में कवि द्वारा रचित कुल पैंतीस कविताएँ, लगभग सौ के करीब मुक्तक, दस गीतिकाएँ और दो गजलें शामिल हैं। कविता के रचनाकार की अधिकतर कविताएं नारी को केंद्र बिंदु बनाकर लिखी गई हैं।

"कविता के बहाने" हिंदी काव्य-संग्रह के कवि हैं कृष्ण कुमार निर्माण। निर्माण की यह दूसरी पुस्तक है। जैसा कि काव्य-संग्रह के शीर्षक कविता के बहाने से ही साफ है कि कवि कविताओं के माध्यम से कुछ कहना चाह रहा है और निश्चित रूप से वह इसमें सफल हो रहा है। धर्म-जात के मसलों के बीच कवि रोजी-रोटी की बात को कुछ इस तरह से उठाता है कि-"वो लड़ रहे हैं शिवाले के लिए। हम लड़ रहे हैं निवाले के लिए।" इतना ही नहीं वतन के प्रति कवि पूर्णतया न केवल चिंतित है बल्कि आगाह भी करता है कि- कर कुछ ऐसा जतन कबीरा। रहे सुरक्षित वतन कबीरा।।

आजकल हर किसी का एक स्वभाव-सा बन चुका है कि बात-बेबात पर टांग अड़ाना, इस संदर्भ में कवि अपनी हिंदी गीतिका के माध्यम से बहुत सुंदर बात कहता है कि—रख काम से काम कबीरा। काम ही अपना धाम कबीरा। कर्म को ही कवि सब कुछ मानता है और यही संदेश भी देता है। क्योंकि एक कर्म ही है जो मानव को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करता है। वर्तमान दौर में प्रेम को लोग अपने-अपने नजरिये से देखने का प्रयास करते हैं। इससे भी आगे बढ़कर आज के युवाओं के लिए प्रेम मात्र एक टाइम पास की तरह है, वैसे दौर में कवि ने अपनी कविता के पंक्तियों के माध्यम से प्रेम के बारे में लिखा है कि- प्रेम की परिभाषा सिर्फ प्रेम, प्रेम सिर्फ देने का नाम है।

अधिकारों के लिए लड़ना कभी भी अनुचित नहीं हो सकता और कवि अपनी कविता "खतरनाक मौत" के माध्यम से आह्वान करता है कि—कौन कहता है कि गलत है अपने हक़ के लिए लड़ना, गलत तो है अन्याय को सहज भाव से स्वीकार कर लेना, गलत तो है और इतना गलत है कि सबसे बड़ी मौत है। ये स्वाभाविक मौत से भी खतरनाक।

ढाई अक्षर कविता में कवि प्रेम का पूरा मनोविज्ञान खोलकर रख देता है तो वहीं चुप्पी साधने को कवि बेहद गलत मानता है क्योंकि कवि कहता है कि चुप रहने वाले खुद को जिंदा नहीं कह सकते। घर-परिवार कविता में आज के परिवारों के अंतर्द्वंद के बारे में कवि लिखता है कि- घर है, घर में दीवारें हैं, दीवारों में दरारें हैं, और उन्हीं दरारों में हम रहते हैं।

कुल मिलाकर वर्तमान दौर में कविता के बहाने एक बेहतरीन काव्य-संग्रह है जो कि पठनीय तो है ही, साथ ही संग्रहणीय भी है। कुल पृष्ठ एक सौ दो हैं और प्रकाशक है काव्या पब्लिकेशन, भोपाल। काव्य-संग्रह का आवरण पृष्ठ किसी भी पाठक को अपनी ओर आकर्षित करता है। संग्रह ऑनलाइन भी उपलब्ध है।

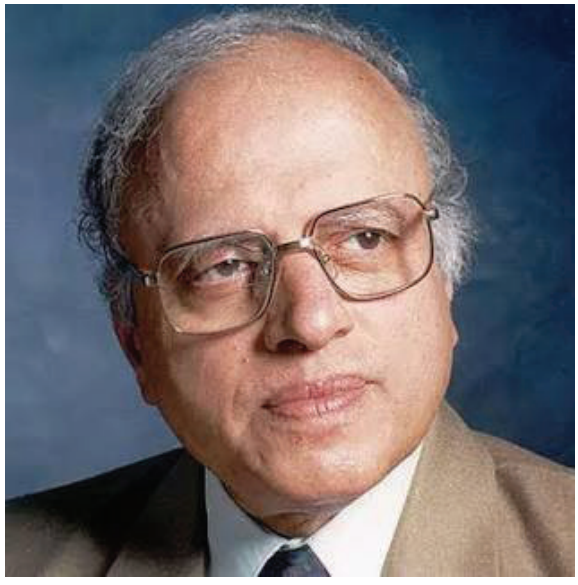

कृषि वैज्ञानिक

एम.एस. स्वामीनाथन

केंद्र सरकार ने भारत में कृषि क्रांति के जनक और प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक मनकोम्बु संबासिवन स्वामीनाथन कुम्भकोणम को भारत रत्न पुरस्कार प्रदान किया गया है। एम.एस. स्वामीनाथन को भारत में हरित क्रांति का अगुआ माना जाता है। इसके कारण भारत में गेहूं उत्पादन में भारी वृद्धि हुई। जब वे मात्र 11 वर्ष के ही थे, उनके पिता का देहांत हो गया था। उनके बड़े भाई ने उन्हें पढ़ा-लिखाकर बड़ा किया। 7 अगस्त 1925 को एम.एस. स्वामीनाथन का जन्म एक सर्जन एम. के. संबासिवन और पार्वती थंगम्मल के घर हुआ था। उन्होंने कुंभकोणम से ही अपनी स्कूली शिक्षा को पूरी की। उन्होंने महाराजा कॉलेज जूलॉजी की पढ़ाई की थी।

वे स्वतंत्रता आंदोलन में भी शामिल रहे और महात्मा गांधी से वे काफी प्रेरित थे। महात्मा गांधी के प्रभाव ने एम.एस. स्वामीनाथन को कृषि के क्षेत्र में उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित किया। वर्ष 1940 के अंत तक स्वामीनाथन ने पुलिस सेवा के लिए योग्यता हासिल कर ली। वर्ष 1944 में त्रावणकोर विश्वविद्यालय से बी.एस.सी. की डिग्री हासिल की। प्रारम्भ से ही उनकी रुचि कृषि में थी। वर्ष 1947 में कोयमंबटूर कृषि कॉलेज से कृषि में भी बीएससी की डिग्री हासिल की। वर्ष 1949 में स्वामीनाथन को भारतीय कृषि अनुसंधान के जेनेटिक्स तथा प्लांट रीडिंग विभाग में एसोसिएटशिप मिल गई। वे कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर में चले गए और वर्ष 1952 में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद, वे विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय में एक शोधकर्ता के रूप में काम करने चले गए। वर्ष 1954 में वे काम करने के लिए भारत लौट आए। उन्होंने IARI में अपना शोध जारी रखा।

डिग्री हासिल करने के बाद स्वामीनाथन ने एग्रीकल्चर में करियर बनाने का निर्णय लिया। इसके लिये मद्रास के एग्रीकल्चर कॉलेज में भी वे दाखिल हुए (अभी तमिलनाडु एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी) वहां वेलिडिक्टोरीयन (Valedictorian) में अपना ग्रेजुएशन पूरा किया और बैचलर ऑफ़ साइंस की उपाधि हासिल की, लेकिन इस समय उन्होंने डिग्री एग्रीकल्चर के क्षेत्र में हासिल की थी। उन्होंने करियर से सम्बंधित अपने निर्णय को इस कदर बताया कि "मुझे 1943 में बंगाल में सूखा देखकर वैयक्तिक प्रेरणा मिली, उस समय मई यूनिवर्सिटी ऑफ़ केर्लाका विद्यार्थी था। वहां चावल जमा करके रखा गया था और तक़रीबन 3 लाख लोग बंगाल में भूख की वजह से मारे गये थे। उस समय हर एक इंसान आज़ादी के लिये संघर्ष कर रहा था और इसलिये मैंने देश के लिये कुछ करने की चाह से किसानों को सहायता करने के उद्देश्य से एग्रीकल्चर रिसर्च को चुना।"

वर्ष 1972 और 1979 के बीच, वह भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के महानिदेशक थे। वहां रहते हुए, उन्होंने भारत के राष्ट्रीय पादप, पशु और मछली आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो का गठन किया। उन्होंने भारतीय वन सर्वेक्षण (एफएसआई) के परिवर्तन में भी भूमिका निभाई। उन्होंने कोयंबटूर कृषि महाविद्यालय से कृषि विज्ञान में बीएससी की डिग्री ली। इसके बाद उन्होंने वर्ष 1988 में एम.एस. स्वामीनाथ रिसर्च फाउंडेशन की स्थापना चेन्नई में की। इस संस्थान के वे संस्थापक अध्यक्ष, एमेरिटस अध्यक्ष और मुख्य संरक्षक थे।

एम.एस. स्वामीनाथन ने हरित क्रांति को सफल बनाने के लिए दो कृषि मंत्रियों सी. सुब्रमण्यम (1964-67) और जगजीवन राम (1967-70 और 1974-77) के साथ मिलकर

काफी समय तक काम किया। इस दौरान उन्होंने देश में कई कृषि संबधित नियमों को लागू कराने का काम किया। साथ ही रसायनिक-जैविक प्रौद्योगिकी के माध्यम से ज्यादा-से-ज्यादा गेहूं और चावल तथा अन्य अनाजों में बढ़ोत्तरी की दिशा में काम किया। वर्ष 1970 के नोबेल पुरस्कार विजेता और मशहूर अमेरिका कृषि वैज्ञानिक नॉर्मन बोरलाग की गेहूं पर खोज ने इस संबंध में एक अहम भूमिका निभाई थी।

वे नीदरलैंड के इंस्टीट्यूट ऑफ जेनेटिक्स पहुंचे। वे यहीं नहीं रूके, क्योंकि नीदरलैंड के बाद वो कैम्ब्रिज स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर के प्लांट ब्रीडंग इंस्टीट्यूट में पढ़ाई करने के लिए पहुंचे थे। भारत लौटने के बाद वर्ष 1972 में उन्हें इंडियन एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट का डायरेक्टर बनाया गया। इसके बाद भारत में उन्होंने गेंहू के ऐसे बीजों की बुआई की जिससे उपज अच्छी मात्रा में होने लगी। साथ ही फसलों में उर्वरक, ट्रैक्टर और कीटनाशक के इस्तेमाल का चलन भी उन्होंने शुरू किया। इसके नतीजे चौंकाने वाले थे। दरअसल कुछ ही समय बात देश में गेहूं की पैदावार इतनी हो गई कि देश के 70 प्रतिशत हिस्से की जरूरतों को आसानी से पूरा किया जा सकता था। इस तरह गेहूं की तंगी को उन्होंने खत्म करने का काम किया, जिससे गेंहू के आयात में भी कमी आई।

इसलिए स्वामीनाथन को "भारत में हरित क्रांति का अगुआ" माना जाता है।

हरित क्रांति कृषि क्षेत्र में कदमों और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की एक श्रृंखला को संदर्भित करती है जिससे कृषि उत्पादकता में भारी वृद्धि हुई। उठाए गए कदमों में अनाज की उच्च उपज वाली किस्मों को विकसित करना, उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग करना, कीट-प्रतिरोधी फसलों का विकास करना, उन्नत आनुवंशिकी वाले संकर बीजों का उपयोग करना आदि शामिल हैं। हालांकि हरित क्रांति भारत तक ही सीमित नहीं थी और इसे कई विकासशील देशों में लागू किया गया था, लेकिन यह भारत में सबसे अधिक सफल रही। 'हरित क्रांति' के लागू होने के बाद से एक भी अकाल नहीं देखा है।

उन्हें 'मन्नार की खाड़ी समुद्री जीवमंडल (Go MMB)' और 'समुद्र तल से नीचे धान की पारंपरिक खेती' वाले केरल के कुट्टनाड को विश्व स्तर पर महत्त्वपूर्ण कृषि विरासत स्थल के रूप में मान्यता प्रदान कराने के लिये भी जाना जाता है। उन्होंने इन क्षेत्रों की जैवविविधता और पारिस्थितिकी के संरक्षण एवं संवर्द्धन में भी अहम योगदान दिया। उन्होंने सतत् कृषि और ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने के लिये वर्ष 1988 में एम. एस. स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन (MSSRF) की भी स्थापना की। यह फाउंडेशन गरीब समर्थक, महिला समर्थक और प्रकृति समर्थक दृष्टिकोण के साथ विशेष रूप से जनजातीय एवं ग्रामीण समुदायों पर ध्यान केंद्रित करता है।

इन्हें वर्ष 2024 में भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित करने की घोषणा की गई है। एम. एस. स्वामीनाथन पर दो भागों में लिखी गयी पुस्तक का अनावरण करते हुए भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लंदन की रॉयल सोसायटी सहित विश्व की 14 प्रमुख विज्ञान परिषदों ने एम. एस. स्वामीनाथन को अपना मानद सदस्य चुना है। अनेक विश्वविद्यालयों ने डॉक्टरेट की उपाधियों से उन्हें सम्मानित किया है।

स्वामीनाथन द्वारा प्राप्त किए गए सम्मान व पुरस्कार इस प्रकार हैं–'पद्मश्री' (1967), 'पद्मभूषण' (1972) और 'पद्मविभूषण' (1989); 1971 में सामुदायिक नेतृत्व के लिए 'मैग्सेसे पुरस्कार'; 1986 में 'अल्बर्ट आइंस्टीन वर्ल्ड साइंस पुरस्कार' ; 1987 में पहला 'विश्व खाद्य पुरस्कार' ; 1991 में अमेरिका में 'टाइलर पुरस्कार' ; 1994 में पर्यावरण तकनीक के लिए जापान का 'होंडा पुरस्कार' ; 1997 में फ्रांस का 'ऑर्डर दु मेरिट एग्रीकोल' (कृषि में योग्यताक्रम) ; 1998 में मिसूरी बॉटेनिकल गार्डन (अमरीका) का 'हेनरी शॉ पदक'; 1999 में 'वॉल्वो इंटरनेशनल एंवायरमेंट पुरस्कार'; 1999 में ही 'यूनेस्को गांधी स्वर्ग पदक' महात्मा गांधी प्राइज़ ऑफ यूनेस्को (2000) और लाल बहादुर शास्त्री नेशनल अवॉर्ड (2007)। इंदिरा गांधी प्राइज़ फॉर पीस, डिसआर्मामेंट एंड डेवलपमेंट, फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट फोर फ्रीडम्स मेडल से सम्मानित।

उनकी महान विद्वत्ता को स्वीकारते हुए इंग्लैंड की रॉयल सोसाइटी और बांग्लादेश, चीन, इटली, स्वीडन, अमरीका तथा सोवियत संघ की राष्ट्रीय विज्ञान अकादमियों में उन्हें शामिल किया गया था। वह 'वर्ल्ड एकेडमी ऑफ साइंसेज़' के संस्थापक सदस्यों में से एक हैं। वर्ष 1999 में टाइम पत्रिका ने स्वामीनाथन को 20वीं सदी के 20 सबसे प्रभावशाली एशियाई व्यक्तियों में से एक बताया था। भारत में हरित क्रांति के जनक एम. एस. स्वामीनाथन का 98 वर्ष की आयु में 28 सितंबर, 2023 को चेन्नई में निधन हो गया था।

प्रस्तुति – द साइलेंट स्ट्रोक

The Silent STROKE
CURRENT AFFAIRS

MAGAZINE
Advertisement Rate

Full Page (Back Cover) - ₹ 5,000
Full Page (IInd & IIIrd Cover) - ₹ 3,000
Half Page (IInd & IIIrd Cover) - ₹ 2,500

TO CONNECT WITH
THE SILENT STROKE
https://thesilentstroke.in
Mail : thesilentstroke@gmail.com

INNER PAGES RATE
One Full Pages (Inner) - 1,000
Two Full Pages (Inner) - 2,000

THE CREATIVEART
UPI AXIS BANK
UPI ID
Scan & Pay UPI QR Code

The Silent STROKE
CURRENT AFFAIRS

MAGAZINE
Rate List

Printed (Coloured) - ₹ 250/-
Printed (B & W) - ₹ 125/-
Soft Copy (Coloured) - ₹ 35/-

TO CONNECT WITH
THE SILENT STROKE
https://thecreativeart.in
Mail : thesilentstroke@gmail.com

If you want the magazine on your mail then send us your mail ID on this number
: 9990753336

THE CREATIVEART
UPI AXIS BANK
UPI ID
Scan & Pay UPI QR Code

NEW ARRIVAL

शब्दाहुति PRAKASHAN Publisher

M P KAMAL
Author
SHABDAHUTI

शब्दाहुति प्रकाशन
flipkart.com

OFFICE - DAYAL BAGH | FARIDABAD | 9990753336

संस्थान

भारत का प्राचीन ज्ञान केन्द्र
नालंदा

प्रस्तुतिः द साइलेंट स्ट्रोक

Image Courtesy : Wikipedia

करीब 1600 साल पहले स्थापित मूल नालंदा विश्वविद्यालय को दुनिया के पहली आवासीय विश्वविद्यालय में से एक माना जाता है। नालंदा के प्राचीन खंडहरों के पास ही नया परिसर स्थापित हुआ है। इसका निर्माण वर्ष 2017 में शुरू हुआ था। नालंदा विश्वविद्यालय के पुनर्जीवन की कल्पना भारत और पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (ईएएस) देशों के बीच एक संयुक्त सहयोग के रूप में की गई थी। नालंदा विश्वविद्यालय के नए परिसर के उद्घाटन के अवसर पर 17 देशों के दूतावास प्रमुख मौजूद रहे।

प्राचीन भारत में तीन प्रमुख विश्वविद्यालय थे। नालंदा, विक्रमशिला और तक्षशिला। इनमें तक्षशिला के भग्नावशेष तो पाकिस्तान में चले गए। भारत के बिहार राज्य की राजधानी पटना के दक्षिण-पूर्व की तरफ एक गांव है- बड़ा गांव। इसी गांव के परिसर में विश्व प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय के भग्नावशेष मौजूद हैं। बौद्ध और जैन साहित्य की प्रारंभिक रचनाओं से पता चलता है कि उन दिनों नालंदा एक छोटी परंतु सम्पन्न व्यवस्था थी। बौद्ध साहित्य के अनुसार महात्मा बुद्ध का यहां कई बार आगमन हुआ। महावीर भी बार-बार नालंदा में आते थे। तारकनाथ, तिब्बती इतिहासकार के अनुसार सम्राट अशोक यहां पूजा करते थे।

मध्ययुग के महान विश्वविद्यालय विक्रमशिला और नालंदा संसार के सबसे बड़े और प्रतिष्ठित शिक्षा केन्द्र गिने जाते थे और अब नवादा के अपसढ़ में मिले प्राचीन वैदिक विश्वविद्यालय के अवशेषों ने प्रमाणित किया है कि— नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना से सैकड़ों वर्ष पहले से ही बिहार में वैदिक शिक्षा का एक बड़ा केन्द्र पल्लवित-पुष्पित हो रहा था। दुनिया का यह प्राचीन विश्वविद्यालय करीब 700 वर्षों तक फलता-फूलता रहा और इसमें पढ़ने-पढ़ाने के लिए चीन, कोरिया, जापान, मंगोलिया, तिब्बत, श्रीलंका, यूनान और फारस से विद्यार्थी और शिक्षक आते रहे। ह्वेन सांग के अनुसार पांच राजाओं (नरसिंह गुप्त, कुमार गुप्त, बुद्ध गुप्त और विष्णु गुप्त) ने इस स्थान में कई विहारों (मठ) का निर्माण किया। उसने यहां कई उच्च कोटि के ऊंचे मंदिरों का भी वर्णन किया। इनमें से एक 80 फीट उच्च ताम्र धातु की बनी हुई बुद्ध की प्रतिमा का भी उल्लेख है।

नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना बिहार में चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल के दौरान आधुनिक पटना के पास वर्ष

427 में हुई थी। आज नालंदा विश्व धरोहर स्थल है। मठ के अवशेष आधुनिक भारतीय शहर पटना के 55 मील दक्षिण पूर्व में मौजूद हैं। मगध साम्राज्य के सम्राट कुमार गुप्त ने शिक्षा-प्रचार और विभिन्न विद्याओं के विकास के लिए नालंदा की स्थापना की थी। गुप्त काल के राजाओं ने इन बौद्ध विहारों को संरक्षण प्रदान किया। कुषाण वास्तु शैली में बने ये बौद्ध विहार एक करकोटे के चारों ओर कक्षों की कतार के रूप में हैं। यह भी कहा जाता है कि सम्राट अशोक ने नालंदा के सारिपुत्र स्थित चैत्य में पूजा-अर्चना की थी। सम्राट अशोक और हर्षवर्धन ने यहां मंदिर बनवाये थे।

नालंदा विश्व का पहला आवासीय विश्वविद्यालय था। नालंदा संस्कृत शब्द नालम्+दा से बना है । संस्कृत में नालम का अर्थ कमल होता है। कमल ज्ञान का प्रतीक है। नालम+दा यानी कमल देने वाली, ज्ञान देने वाली। कालक्रम से यहां महाविहार की स्थापना के बाद इसका नाम नालंदा महाविहार रखा गया। यह भी संभावना है कि नालंदा नाम शाक्यमुनि के पूर्वावतारों से लिया गया हो। महाराज हेवास की राजधानी यहीं थी। नालंदा उनकी एक उपाधि थी। नालंदा से तात्पर्य है- प्रदान करने की चिरक्षुधा।

नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति के पद पर आसीन होने की एक मात्र कसौटी थी- विद्ववता में सर्वोप्रिय होना। उम्र या शिक्षण अनुभव के आधार पर उसकी नियुक्ति नहीं होती थी। पहले कुलपति नागार्जुन थे और उस समय प्राधानाचार्य उद्भट विद्वान शीलभद्र थे। उन्हें सोलह भाषाओं का ज्ञान प्राप्त था। अन्य प्रमुख कुलपतियों में आर्यदेव, असंग, वसुबंधु, धर्मपाल, राहुल, शीलभ्रद, चन्द्रपाल, प्रभाकर मित्र, अश्वघोष और पद्मसंभव आदि हुए । ऐसा अनुमान है कि उस समय नालंदा विश्वविद्यालय में 1500 से अधिक विद्वान, आचार्य और प्राचार्य थे, जो वेद-पुराण और बौद्ध दर्शन के अलावा गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, चिकित्सा विज्ञान, न्यायदर्शन, चित्रकला आदि विभिन्न विषयों की शिक्षा देते थे। नालंदा विश्वविद्यालय ने अनेक दार्शनिकों को प्रशिक्षित किया। इनमें से कुछ हैं- अश्वघोष, नागार्जुन, प्रभाकर मित्र, असंग, शीलभद्र, राहुल शीलभद्र, पद्मसंभव, वसुबंधु आदि। महायान पंथ के दार्शनिक नागार्जुन, ब्राह्मण विद्वान, धर्मपाल तथा तक सिद्धांत के संस्थापक, दिन्नाग ने यहां अध्यापन का कार्य किया ।

इस विश्वविद्यालय में एडमिशन आसान नहीं था। प्रवेश के लिए छात्रों को एंट्रेस टेस्ट पास करना होता था और यह परीक्षा विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार पर ही होती थी। नालंदा विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने के लिए विद्यार्थियों को कठोर परीक्षा देनी होती थी। और प्रवेश के लिए आए हुए छात्रों में से केवल 10 प्रतिशत छात्र ही सफल हो पाते थे। कई छात्रों को यहां प्रवेश न मिलने पर निराश लौटना पड़ता था। प्रवेश परीक्षा लेने वाले परीक्षक को द्वार पंडित कहा जाता था। ह्वेन सांग ने लिखा है कि- यह एंट्रेस में आने वाले 15 विद्यार्थियों में से केवल 3 ही टेस्ट पास कर पाते थे। ह्वेन सांग ने यहां पढ़ाए जाने वाले मेडिकल साइंस, आर्किटेक्चर , फाइन आर्ट्स , स्टेटिस्टिक्स, विधि शास्त्र, विज्ञान, ज्योतिष, व्याकरण, तर्कशास्त्र, योग शास्त्र, प्रमाण शास्त्र और वैदिक शिक्षा के लिए अलग-अलग विभागों का वर्णन किया।

नालंदा में ज्ञान प्राप्त करना या अध्ययन करना एक महान प्रतिष्ठा माना जाता था। लेकिन यहां कोई डिग्री नहीं दी जाती थी और न ही यहां अध्ययन के लिए कोई समय सीमा निर्धारित थी। यहां अध्ययन के लिए दो प्रकार के छात्र होते थे, एक तो वे जो विद्याध्ययन के बाद बौद्ध भिक्षुक बनकर संघ में प्रवेश करते थे तथा दूसरे वे विद्यार्थी जो विद्याध्ययन के बाद सांसारिक जीवन में जाते थे, ऐसे विद्यार्थी ब्रह्मचारी या मानव कहलाते थे। भिक्षु के रूप में यहां की दिनचर्या में पठन-पाठन, अध्ययन तथा पूजा-अर्चना के लिए अलग-अलग समय निर्धारित किया गया था। समय की गणना के लिए जल-घड़ी का उपयोग किया जाता था। यहां अध्ययन की व्यवस्था के अनुसार छात्रों को समझाने के लिए व्याख्यानों और शास्त्रार्थ का सहारा लिया जाता था। जहां सामान्य ज्ञान रखने वाले लोगों को बहुधा लज्जा का सामना करना पड़ता था और विद्धानों का सम्मान किया जाता था। तदनुसार चुने गए बौद्ध भिक्षु सामान्यता उस समय के अत्यंत ज्ञानी व्यक्ति हुआ करते थे ।

नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालयों में एशियाई देशों के छात्र आकर अध्ययन और शोध करते थे। शिक्षण के प्राचीन अधिष्ठान के रूप में प्रसिद्ध नालंदा में बौद्ध देशों के 10,000 से भी अधिक छात्र शिक्षा प्राप्त करते थे। यहां 2,000 अध्यापक थे। विद्यालय को बंगाल के पाल नरेशों का संरक्षण

प्राप्त था। सुमात्रा के एक राजा ने पाल नरेशों की अनुमति से नालंदा में एक बौद्ध मठ की स्थापना की थी और विद्यालय को कुछ गांव दिए थे। विश्वविद्यालय की व्यवस्था अनुदान में प्राप्त हुए 200 गांवों से चलती थी। विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती थी। रहने, खाने एवं कपड़े की व्यवस्था स्वयं विश्वविद्यालय करता था। विद्यार्थियों को सात्विक एवं पौष्टिक भोजन मिलता था। विश्वविद्यालय की अपनी मुद्रा थी, जिस पर श्री नालंदा महाविहार आर्य भिक्षुसंघस्य लेख उत्कीर्ण था। उससे संबद्ध जो विहार या विद्यालय थे, उनकी अलग-अलग मुद्राएं थीं ।

नालंदा में दो प्रकार के पाठ्क्रम थे, एक प्रारंभिक शिक्षा और दूसरी उच्च शिक्षा। प्रारंभिक शिक्षा को पूरा करके ही उच्च शिक्षा की पात्रता प्राप्त हो सकती थी। प्रारंभिक शिक्षा के लिए न्यूनतम आयु छह वर्ष और अधिकतम आठ वर्ष थी। नालंदा में पांच विषयों की अनिवार्य पढ़ाई होती थी, जिसमें व्याकरण, शब्द विद्या, शिल्प शास्त्र विद्या, चिकित्सा विद्या तथा अध्यात्म विद्या प्रमुख थे। नालंदा में व्याख्यान, प्रवचन, वाद-विवाद और विमर्श के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा के विषय थे—बौद्ध धर्म महायान, वज्रयान, सहजयान आदि सम्प्रदायों के धार्मिक साहित्य, तंत्र व ज्योतिष।

इसके अलावा दर्शन, साहित्य, व्याकरण और कला की शिक्षा की भी व्यवस्था थी और चिकित्सा संबंधी शिक्षा अनिवार्य थी। विद्यार्थी के अध्ययन का एक प्रमुख अनिवार्य विषय संस्कृत व्याकरण था। यहां की एक उल्लेखनीय देन थी कि यहां विद्यार्थी एक-दूसरे के निर्माण में सहायता करते थे। विद्यार्थियों के लिए धन-स्पर्श वर्जित था। वहां उस समय के विश्वविख्यात प्राध्यापक विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों की शिक्षा देते थे। इन प्राध्यापकों ने गणित और खगोलशास्त्र अद्भुत शोध किया था। आचार्य शीलाद्र की अध्यक्षता में यहां वेदों, हिन्दू धर्मशास्त्र, वेदों, तर्क शास्त्र, व्याकरण, अलंकार शास्त्र, गद्य और पद्य लेखन, तत्व विद्या और चिकित्सा की भी शिक्षा दी जाती थी। यहां न कवेल बौद्ध बल्कि अन्य मतावलम्बी और अनेक विदेशी छात्र भी अध्ययन करते थे।

नालंदा विश्वविद्यालय में आमतौर पर छात्र 10 वर्ष के लिए भरती किए जाते थे। बौद्ध भिक्षु बनने के लिए छात्र 20 वर्षों तक विद्यालय में रह सकते थे। शोध करने वाले छात्र इससे अधिक समय तक नालंदा में रह सकते थे। नालंदा बौद्ध शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। यहां एक विशाल एवं भव्य स्तूप भी था, जिसका सात बार विस्तार किया गया। इस स्तूप के चारों और छोटे स्तूप थे। स्तूप के निकट छात्रों की कोठरियां और अध्ययन कक्ष थे। यह स्थान कई साम्राज्यों और सम्राटों के उत्थान और पतन का गवाह है। इन सम्राटों ने नालंदा विश्वविद्यालय के विकास में योगदान दिया। इन सम्राटों ने कई बौद्ध विहारों और बौद्ध मंदिरों का निर्माण कराया था। हर्षवर्धन ने भगवान बुद्ध की 25 फुट ऊंची ताम्र प्रतिमा भेंट की थी और कुमारगुप्त ने ललितकला के महाविद्यालय को इसे समर्पित किया था।

विश्वविद्यालय और एक महान सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में नालंदा का प्रमाणिक विवरण चीनी यात्री ह्वेन सांग के यात्रा विवरणों से प्राप्त होता है। कन्नौज के सम्राट हर्षवर्धन के दरबार में कई महीने रहकर ह्वेन सांग ने संस्कृत तथा पाली भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया था। इसके बाद वैशाली होते हुए नालंदा पहुंचे। 635 ईस्वी के आसपास वह नालंदा में विद्याध्ययन करते रहे। उनके कथनानुसार नालंदा में विशालकाय विश्वविद्यालय परिसर थे, जिसमें पांच संधाराम थे। एक नए संधाराम का निर्माण कार्य सम्राट हर्षवर्धन द्वारा किया जा रहा था। सभी संधाराम एक ऊंची दीवार से घिरे थे। इनके बीच में विद्यापीठ स्थित था। ऊंची दीवारों से सटे आठ आयताकार प्रकोष्ठ थे। इनमें कक्षा लगती थी। दूसरी ओर कई वेधशालाएं और कार्यशालाओं के भवन थे। इनमें तरह-तरह के यंत्र लगे थे। इनसे जलवायु और ग्रह नक्षत्रों की जानकारी प्राप्त की जाती थी।

ह्वेन सांग के बाद एक दूसरा चीनी यात्री इत्सिंग भी नालंदा आया था। उसने यहां रहकर शिक्षा प्राप्त की और उसने नालंदा में स्थित प्रमुख पुस्तकालयों का विशेष रूप से उल्लेख किया। तीन मुख्य पुस्तकालय थे—रत्नसागर, रत्नोदधि और रत्नरंजक। इनमें बहुमूल्य ग्रंथ और पाण्डुलिपियाँ सिलसिलेवार रखी जाती थीं। ह्वेन सांग ने नालंदा में रहकर लगभग 700 ग्रंथों की प्रतिलिपियां तैयार की और इन्हें बहुमूल्य धरोधर मानकर अपने देश चीन ले गया। इसी प्रकार इंत्सिग ने भी प्रतिलिपि तैयार की और वैदिक तथा बौद्ध

साहित्य के चार सौ ग्रंथों की प्रति अपने साथ चीन ले गया।

गुप्तकाल में स्थापित नालंदा विश्वविद्यालय लगभग 700 वर्षों तक सितारों की तरह जगमगाता रहा और ज्ञान के महाकेन्द्र के रूप में इसने संसार में प्रतिष्ठा प्राप्त की। मुसलमान आक्रमण कारी मुहम्मद बिन बाख्तियार खिलजी ने 1303 में आक्रमण किया और मगध पर आक्रमण और राजधानी पाटलीपुत्र (वर्तमान पटना) के अलावा कई मंदिरों, मठों और बौद्ध विहारों को ध्वस्त कर दिया। यहां के सभी भिक्षुओं को हमलावरों ने मौत के घाट उतार दिया और यहां के पुस्तकालयों को जलाकर भस्मसात कर दिया। इस आग में पाण्डुलिपियाँ जलकर राख बन गईं। नालंदा विश्वविद्यालय को जलाए जाने के बाद धीरे-धीरे इसका महत्व समाप्त हो गया। उन्ही दिनों यूरोप के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों का उदय शुरू हुआ। नालंदा परिसर में दूर तक फैले खंडहरों में क्लास रूम यानी लेक्चर हॉल किसी छोटे-मोटे सभागार से कम नहीं लगते। इन्हें लेक्चरर हॉल में आगे प्लेटफार्म पर खड़े होकर प्रोफेसर पढ़ाया करते थे। इसी परिसर में तमाम छोटे और बड़े गोलाकार प्लेटफार्म हैं। ये प्लेटफार्म छात्रों और प्रोफेसरों की समाधियां हैं। कुछ छात्र और प्रोफेसर जीवनभर यहीं रह जाते थे। छोटी समाधियां छात्रों की और बड़ी समाधियां प्रोफेसरों की हैं।

प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के सैकड़ों साल बाद विख्यात पुरातत्ववेत्ता सर कनंगधम ने इस प्राचीन विद्यापीठ के स्थल को खोज निकाला। प्रसिद्ध इतिहासकार पं. हीरानंद शास्त्री के अथक प्रयास से नालंदा के प्राचीन ध्वंसावशेषों की खुदाई कर 1916 में बाहर निकाला। यही नालंदा के खंडहर के नाम से मशहूर हुआ। खुदाई से प्राप्त चिह्नों से ज्ञात होता है कि नालंदा महाविहार का कम-से-कम सात बार पुनर्निर्माण या विस्तार हुआ होगा। इस स्थान की खुदाई में कई स्तूप, बौद्ध विहार, छात्रावास, सीढ़ियां, ध्यान कक्ष, व्याख्यान कक्ष और कई अन्य भवनों के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो इस स्थान की भव्यता और महानता की गाथा सुनाते हैं। खुदाई के दौरान कई प्राचीन बौद्ध प्रतिष्ठानों द्वारा स्तूप, चैत्य, मंदिर और मठ स्थल यहां दिखाई दिएं हैं। इससे पता चलता है कि यह स्थान बौद्ध पूजा-अर्चना और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था।

नालंदा की ऐतिहासिकता के बारे में जैन साहित्य से भी जानकारी मिलती है। महावीर वृर्द्धमान ने नालंदा में 14 पावस सत्रों में यहां प्रवास किया। पाली बौद्ध साहित्य में भी नालंदा की कई बार चर्चा हुई है। इस साहित्य से पता चलता है कि भगवान बुद्ध ने इस स्थान की कई बार यात्रा की थी। प्रतीत होता है कि भगवान महावीर और बुद्ध के समय में नालंदा एक समृद्ध मंदिरों का नगर था। यह एक तीर्थस्थल और प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था।

अपने निर्माण के बाद से यह परिसर तीन बार आक्रमणकारियों का निशाना बना। पहली बार मिहिरकुल के नेतृत्व में हूण आक्रंताओं द्वारा शक्रादित्य (कुमारगुप्त प्रथम) के दौर में। गुप्तवंश के उनके उत्तराधिकारी शासकों ने मालवा के शाक यशोधर्मन के सहयोग से मिहिरकुल को पराजित कर इसका भव्य पुनर्निर्माण कराया। सातवीं सदी में बंगाल के गोरे शासकों द्वारा भी इसे नष्ट करने की कोशिश की गई। हर्षवर्धन (606-648 इस्वी) द्वारा इसका पुनर्निर्माण कराया गया। 12 शताब्दी में तुर्क हमलावर बख्तियार खिलजी ने अपने हमले में नालंदा ही नहीं इस क्षेत्र के अनेक बौद्ध स्थलों एवं मंदिरों को भी नष्ट किया। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा 1915-1937 एवं 1974-1982 में दो चरणों में कराए गए उत्खनन के बाद मौजूदा ढांचा सामने आया।

बारहवीं शताब्दी का अंतिम चरण नालंदा के लिए तबाही लेकर आया। वर्ष 1193 में तुर्क आक्रांता बख्तियार खिलजी ने इस प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय को तहस-नहस कर दिया। इस विश्वविद्यालय के समृद्ध पुस्तकालय को आग लगा दी गई और इस आग में शिक्षा और ज्ञान की विभिन्न धराओं से जुड़ी संग्रहणीय पाण्डुलिपियाँ समाप्त हो गईं। 12वीं शताब्दी के मुस्लिम आक्रमण के समय तक नालंदा का अधिकांश पारंपरिक ज्ञान और परम्परा तिब्बत पहुंच चुकी थी। हालांकि उदन्तपुरी और विक्रमशिला के बौद्ध विहारों को नष्ट कर दिया गया था, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय नालंदा के भवनों को कोई ज्यादा नुकसान नहीं पहुंचाया गया था। हालांकि बौद्ध विहारों और मंदिरों को आक्रांत करती सेनाओं के आने के पहले ही अधिकांश बौद्ध भिक्षु यहां से पलायन कर चुके थे। 1235 ईस्वी में तिब्बती तीर्थयात्री चाग लोत्सावा को यहां 70 छात्रों की कक्षा के साथ

एक 90 वर्षीय अध्यापक राहुल श्रीभद्र मिले थे। राहुल श्रीभद्र ने एक स्थानीय ब्राह्मण की सहायता से अपनी जीवन रक्षा की थी और तब तक यहां से पलायन नहीं किया, जब तक कि अपने आखिरी तिब्बती छात्र की शिक्षा पूरी नहीं करा दी।

प्राचीन महाविहार में आर्यभट्ट प्रमुख रह चुके थे। प्रवेश के इच्छुक छात्रों को शीर्ष आचार्यों के साथ कठोर मौखिक साक्षात्कार में भाग लेना पड़ता था। इसकी तीन पुस्तकालय इमारतों में से एक को तिब्बती बौद्ध विद्वान तारानाथ ने नौ मंजिला बताया था। प्रख्यात चीनी भिक्षु और यात्री ह्वेन सांग ने नालंदा में अध्ययन और अध्यापन किया था। गुप्त काल के बाद भी नालंदा को शाही संरक्षण प्राप्त रहा। माना जाता है कि नालंदा का पाठ्यक्रम धार्मिक ग्रंथों से आगे बढ़कर साहित्य, धर्मशास्त्र, तर्कशास्त्र, व्याकरण, चिकित्सा, दर्शन, कला और तत्वमीमांसा को भी शामिल करता था। ह्वेन सांग ने महाविहार की शोभा बढ़ाने वाले गुणमति, स्थिरमति, प्रभामित्र, जिनमित्र, ज्ञानचंद्र, संतरक्षित, शीलभद्र, धम्मपाल और चंद्रपाल जैसी प्रसिद्ध हस्तियों का उल्लेख किया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वर्ष 1951 में नव-नालंदा महाविहार की स्थापना की गई।इससे बौद्ध दर्शन और पाली भाषा तथा साहित्य पर अनुसंधान कार्य आरंभ किया गया। जापान, चीन, श्रीलंका और इंडोनेशिया ने इस संस्थान के विकास में योगदान दिया था। अब नव-नालंदा विहार को विश्वविद्यालय के समकक्ष मान्यता प्रदान की जा चुकी है। केन्द्र सरकार ने बिहार के नालंदा में स्थित नव नालंदा महाविहार को डीम्ड यूनिवर्सिटी के समकक्ष का दर्जा दिया है। नालंदा अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय 2013-14 से तब तक एक किराये की इमारत में दो विषयों- ऐतिहासिक अध्ययन और पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी की पढ़ाई शुरू की। भारतीय संसद ने वर्ष 2010 में 1005 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले नालंदा विश्वविद्यालय विधेयक को मंजूरी दी थी।

इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य पुराने संबंधों को फिर से खोजना और क्षेत्रीय शांति और आपसी समझ को बढ़ावा देना है। इस अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय का निर्माण दुनिया के 16 देशों की मदद से हो रहा है। बिहार सरकार ने 447 एकड़ जमीन कार्यकारी कुलपति गोपा सब्बरवाल को सौंपी है। इस विश्वविद्यालय के लिए सिंगापुर सरकार 50 लाख डॉलर की मदद और चीन 100 मिलियन डॉलर की मदद मिलेगी। जानी-मानी समाजशास्त्री गोपा सब्बरवाल को नालंदा अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय का पहला कुलपति नियुक्त किया गया है। दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज में

Image Courtesy : PIB

Image Courtesy : PIB

समाजशास्त्र की प्रोफेसर डॉ. गोवस सब्बरवाल दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स की छात्रा थीं। उन्होंने वर्ष 1993 में लेडी श्रीराम कॉलज में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना की थी। 15 विद्यार्थियों के साथ नए नालंदा विश्वविद्यालय का प्रथम अकादमिक सत्र 1 सितम्बर, 2014 से शुरू किया गया है जो इतिहास, विज्ञान तथा पर्यावरण जैसे विषयों में स्नातकोत्तर कक्षाओं में अध्ययन करेंगे। नालंदा बिहार की राजधानी पटना से लगभग 80 किलोमीटर दूर है। पटना से रेल तथा सड़क मार्ग द्वारा यहां पहुंचा जा सकता है।

ऐतिहासिक नालंदा विश्वविद्यालय के नए कैंपस का उद्घाटन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने किया है। करीब 1749 करोड़ रुपये की लागत से बना नालंदा यूनिवर्सिटी कैंपस बिहार राज्य के नालंदा जिले में है। ये एक अंतरराष्ट्रीय स्तर की यूनिवर्सिटी है, जिसे 18 सदस्य देशों का समर्थन प्राप्त है। इसे जीरो एनर्जी बिल्डिंग भी कहा जा सकता है। यानी ऐसी इमारत जो ऊर्जा के शून्य इस्तेमाल पर संचालित होती है। आसान भाषा में ऐसे समझें- ये कैंपस साल में जितनी ऊर्जा का उपयोग करेगा, उतनी ही एनर्जी (Renewable Energy) पैदा भी करेगा। धीरे-धीरे नए कोर्सेस और डिपार्टमेंट शुरू किए जा रहे हैं। यहां मेरिट बेस्ड और एंट्रेंस एग्जाम के आधार पर दाखिला मिलता है। एमबीए, पीजीडीएम जैसे कई कोर्सेस में CAT, MAT, XAT जैसी परीक्षाओं के स्कोर पर भी एडमिशन मिलता है। नालंदा यूनिवर्सिटी में आर्ट्स, ह्यूमैनिटीज, सोशल साइंसेस, मैनेजमेंट, बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन, मास मीडिया, जर्नलिज्म, साइंस कोर्सेस, पीएचडी समेत कई कोर्स संचालित किए जा रहे हैं। आप इसकी पूरी लिस्ट नालंदा यूनिवर्सिटी की ऑफिशियल वेबसाइट nalandauniv.edu.in पर चेक कर सकते हैं। आशा है कि भविष्य में नालंदा अपनी पूर्व की विरासत को पुन: प्राप्त कर लेगा।

■■

JULY - SEPT 2024/TSS002

THIS PHOTO ARE THIS TIME'S Topic

"SEE THE IMAGE, WRITE A POEM."

AND SEND IT TO US ALONG WITH YOUR PHOTO

THREE EXCELLENT POEMS WILL BE PUBLISHED IN THE MAGAZINE AND WILL BE AWARDED WITH A CERTIFICATE.

''छवि देखें, कविता लिखें'' और अपनी फोटो के साथ हमें भेजें। तीन उत्कृष्ट कविताओं को पत्रिका में स्थान दिया जाएगा एवं प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा।

राकेश शर्मा 'निशीथ'
प्रधान संपादक
द साइलेंट स्ट्रोक-पत्रिका

The Silent STROKE | प्रतियोगिता

MAY - JUNE 2024/TSS001

1st PRIZE

लुका-छुपी

देखु तुझे तो दिन है
सूरज जैसी है तुझमें बात
बादल भी ले तेरी बलाएँ
जब लुका-छुपी खेले तू उनके साथ।

जब तू झांके दूर से मुझको
और लगाए आवाज़
दौड़ी आऊ नंगे पाओ मैं
पकड़ने को तेरा हाथ।।

–प्रेरणा शर्मा
वैशाली, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

2nd PRIZE

बचपन

माँ का आंचल
बाबा की साइकिल
रिश्तों का मेल
दोस्तों का खेल,

अम्मा का दुलार
दादा का प्यार
सुबह की सैर
मौज-मस्ती करते छोटे-छोटे पैर,

चिड़ियों का दाना
अतिथि का आना
ढोलक की ताल सुन
नाचना और गाना,

पेड़ों का सहारा
लगता है प्यारा
लुका-छुप्पी का खेल
आंगन में फूलों की बेल,

छुट्टी का नाम सुन
तालियां बजाना
यही है बचपन का खजाना।

–प्रेरणा बुड़ाकोटी, दिल्ली

THECREATIVEART.IN

The CREATIVEART Publisher

Hello Friends,

You will be glad to know that

My New Book

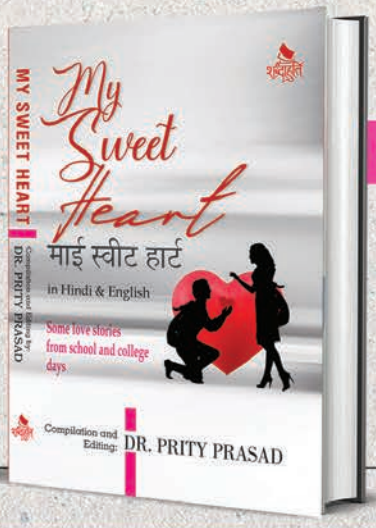

Hindi & English

My Sweet Heart

Compilation and Editing:

DR. PRITY PRASAD

Bilaspur

Coming Soon

New Book

शब्दाहुति प्रकाशन

OFFICE - FARIDABAD I 9990753336

SHABDAHUTIPRAKASHAN@GMAIL.COM I THECREATIVEART.IN